अधिकार नहीं, कर्तव्यों को भी जानें

◈ ifo= tu 12वीं
लिटिल फ्लॉवर्स पब्लिक सी.सै.स्कूल,
शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली

इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक सभी कर्तव्य विमुख होकर अंधी दौड़ लगा रहे हैं। व्यापारी मिलावट करके टैक्सों के बखेड़ों का हल ढूंढ रहे हैं। डॉक्टर अंगों का क्रय-विक्रय करके अपनी धन लिप्सा को पूरा कर मानवता का अहित कर रहे हैं। वकील अपराधियों की रक्षा कर निरपराधियों को सूली पर चढ़वा कर अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है।

Òkरत हमारी मातृभूमि है, पितृभूमि है, पुण्यभूमि है। हम इसकी कोख से उत्पन्न हुए। इसने हमारा पालन–पोषण किया। इसके तीर्थ हमारी आस्था और श्रद्धा के केन्द्र हैं। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि से प्रतिपादित धर्म भारतीय धर्म है।

प्रिय भूमि भारत की गाथा देवता भी गाते थे। विष्णु–पुराण के अनुसार स्वर्ग में देवत्व भोगने के बाद देवता मोक्ष प्राप्ति के लिए भारत में ही मनुष्य रूप में जन्म लेते थे।

भारत को विश्व गुरु कहलाने का गौरव है। न केवल यूरोप अपितु फ्रांस, अरब आदि राष्ट्रों में भारत को सोने की चिड़िया या स्वर्ण भूमि कहकर इसकी स्तुति की जाती रही है। मनु ने भारत को मानवीय गुणों की प्रेरणा और शिक्षा का एकमात्र केन्द्र बताया है।

हिमालय हमारा भाव प्रतीक है। गंगा हमारी मां है। इन जैसे संसार में और कहां? हमारा देश सरितामय है। यहां प्रकृति का लावण्य और सौन्दर्य अलसा कर बिखर गया है। कालिदास ने हिमालय को देवात्मा

और पृथ्वी का मानदण्ड माना है। महाकवि रविन्द्रनाथ भी उसे देवात्मा मानते हैं।

भारत सभ्यता और संस्कृति का आदि स्त्रोत है। धर्म की जन्मभूमि होने के कारण भारत आध्यात्मिक देश है। यहीं मानव, प्रकृति एवं अन्तर्जगत के रहस्यों की जिज्ञासाओं के अंकुर सर्वप्रथम उगे। यहीं परमात्मा की अमरता, एक अन्तर्यामी ईश्वर की सत्ता, प्रकृति और मनुष्य के भीतर एक परमात्मा के दर्शन सर्वप्रथम किए गये। यहीं धर्म तथा दर्शन के उच्चतम सिद्धान्तों ने अपने चरम शिखर स्पर्श किए। भारत की आध्यात्मिकता और दर्शन की लहर ने बार–बार उमड़कर संसार को सिक्त किया।

संसार गणित और ज्योतिष के लिए भारत का ऋणी है। अरब राष्ट्रों ने ज्योतिष–विद्या भारत से ही सीखी। भारत ने चीन को ज्योतिष और अंकगणित सिखाया। गणित में शून्य का सिद्धान्त भी भारत ने ही विश्व को पढ़ाया। बन्दूक और तोपों का प्रचलन वैदिककाल में था। आयुर्वेद, चित्रकारी और कानून भी भारतवासियों ने यूरोप को पढ़ाया। मलमल, रेशम, टीन, लोहे और शीशे का ज्ञान भी यूरोप ने भारत से प्राप्त किया।

यदि हम आने अतीत पर दृष्टि डालें तो समाज का एक सुंदर रूप हमें दिखाई देता है। व्यक्ति चरित्रवान थे। धर्म में उनकी निष्ठा थी। सामाजिक कायदे–कानूनों का पालन होता था। मानवीय मूल्यों का महत्व था। बुद्ध की करुणा, महावीर की अहिंसा, ईसा, मोहम्मद, नानक और कबीर की नीतिपूर्ण वाणी ने संसार को मानवता का पाठ पढ़ाया। धर्म, संप्रदाय एवं भेदभाव की क्षुद्र लकीरों से ऊपर उठकर मानव मात्र की सेवा के लिए सबको प्रेरित किया गया।

सत्य और अहिंसा के सामने असत्य और अन्याय को झुकना पड़ा। पर हाय रे! यह कैसी विडम्बना है कि आज हमारे सामने समाज का घिनौना और वीभत्स रूप दिखाई दे रहा है। सर्वत्र अशांति का साम्राज्य है। समाज का प्रत्येक वर्ग आतंक और भय के साये में जी रहा है। चोरी, डकैती, तस्करी, बेईमानी और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सरकारी कार्यालय 'देवालय' बन गये हैं जहां 'प्रसाद' चढ़ाना आवश्यक हो गया।

इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक सभी कर्तव्य विमुख होकर अंधी दौड़ लगा रहे हैं। व्यापारी मिलावट करके टैक्सों के बखेड़ों का हल ढूंढ रहे हैं। डॉक्टर अंगों का क्रय–विक्रय करके अपनी धन लिप्सा को पूरा कर मानवता को अहित कर रहे हैं। वकील अपराधियों की रक्षा कर निरपराधियों को सूली पर चढ़वा कर अपराध को बढ़ावा दे रहे हैं। शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है।

एक प्रश्न उठता है कि स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहूति देकर, पुलिस की लाठियां खाकर, क्या देश को इसलिए आजाद करवाया था कि विदेशियों की जगह देशी लोग जनता का खून चूसें, किन्तु आज स्थिति यही है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। अनपढ़ या पांचवीं फेल भारत मां के महान सपूत विधायक के पद पर नियुक्त होते हैं।

प्रधानमंत्री बनना है तो किसी तरह बारहवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओ। समस्या यह नहीं है कि भारत में शिक्षित लोगों की कमी है, समस्या यह है कि समाज में एक धारणा फैल गई कि राजनीति एक गटर है। अगर राजनीति एक गटर है तो यह भारत को विश्वगुरु के पद पर आसीन नहीं होने देगा।

इसका समाधान यह है कि हमें उस गटर को साफ करना होगा और एक स्वच्छ दरिया में परिवर्तित करना होगा। माफ कीजिए, पर मैं गंगा की मिसाल भी नहीं दे सकता क्योंकि गंगा को हमने प्रदूषित कर दिया है कि आज उसके जल और गटर में कोई फर्क नहीं दिखता।

स्थिति ऐसी हो गई है कि हम हर अंग्रेज के समक्ष स्वयं को हीन महसूस करते हैं जो कि पूर्णतः गलत है। हमें तो उनके सामने सीना चौड़ा करके खड़ा होना चाहिए क्योंकि हमारी संस्कृति विश्व में सबसे महान है। जो बात विदेशी वैज्ञानिकों–कोपर्निकस और गैलिलयों ने पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में (सूर्य सौर प्रणाली का केन्द्र है और पृथ्वी सहित अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं) साबित की थी, वह बात भारतीय वैज्ञानिक आर्य भट्ट ने दी या तीन सौ साल पहले नहीं पूरे डेढ़ हजार साल पहले साबित कर दी थी।

जोड़ों का दर्द ठीक करना, साठ की उम्र में नजर का चश्मा हटाना ऐसे काम कर पाना विदेश के आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के बस की बात नहीं है पर भारत की जड़ी बूटियां तो ऐसा चमत्कार दिखाती हैं कि आपको बिना किसी अंग्रेजी दवाई या शल्य चिकित्सा के इन सब बीमारियों से निजात दिला सकती है। आधुनिकीकरण के नाम पर वैश्वीकरण, निजीकरण को बढ़ावा दिलाकर आज फिर से अंग्रेज भारतीय मजदूरों का, भारत के संसाधनों का शोषण कर रहे हैं।

आज की भारतीय विदुषि नारियों को गृहस्थी का कार्यभार संभालते हुए राष्ट्र के कार्यों में सराहनीय योगदान करना चाहिए। आज की नारियां सादे जीवन से बहुत दूर हैं। उन्हें अपनी श्रृंगार करने की पुरानी प्रवृत्ति को आज भी नहीं छोड़ना चाहिए। आज की नारी का कर्तव्य है कि वे सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार कर देश की प्रगति व उत्थान के लिए आगे बढ़ें। यद्यपि आज की नारियों में नवचेतना है, नव जागृति है तथा वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, परन्तु इसके साथ–साथ वे अपने कर्तव्यों की ओर ध्यान दें तो उनकी प्रतिभा से देश विश्वगुरु बन जाएगा। ✿

अपने आप से करें शुरुआत

◈ ekgEen ukfQy 7वीं
श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्था
उच्च माध्यमिक विद्यालय
उदयपुर, राजस्थान

भारत पुनः विश्व गुरु बने इसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी। हम यह सोचें की हम देश के लिए क्या कर रहे हैं। इस व्यवस्था को सुधारने के लिए हम क्या कर रहे हैं। जब सभी यह साचने लगेंगे तो भारत का नक्शा ही बदल जायेगा।

çkचीन भारत की सीमाएं विश्व में दूर–दूर तक फैली हुई थीं। सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान के लिए भारतीय मनीषी विश्व भर में गए। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के चिन्ह विश्व भर में सभी देशों में मिलते हैं। इसका विस्तार ईरान से बर्मा तक था।

संयम एवं अनुशासन की कसौटी पर खरे उतरने वाले चिन्तनशील ऋषियों ने संसार को बहुत कुछ दिया है। भारतीय दर्शन से पुराना सिद्धान्त कहीं नहीं है। विश्व के सभी दर्शनों में भारत की झलक अवश्य मिलेगी। प्रत्यक्ष रूप से सभी भारतीय दर्शन के अनुयायी हैं।

परमात्मा की खोज, ग्रह, उपग्रह, औषधियों एवं वनस्पतियों के गुणों की खोज सर्वप्रथम भारतीय ऋषियों ने की। मनुष्य के लिए उपयोगी प्रत्येक वस्तु की खोज भारतीय मनीषा की देन है। विश्व के किसी भी शास्त्र में वायुयान एवं अत्याधुनिक अस्त्र–शस्त्र का कहीं उल्लेख नहीं है। भारतीय ऋषियों ने इतना कुछ उन शास्त्रों में समावेश कर दिया है कि मनुष्य को वहां तक पहुंचने में हजारों साल लग जायेंगे। फिर भी उतना प्राप्त नहीं कर सकेंगे जितना उन भारतीय शास्त्रों में लिखा है।

भारत विश्व गुरु था, इसकी परा–अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु–मुमुक्षु इस पुण्यभूमि में शिष्य भाव से आते थे। तक्षशिला विश्वविद्यालय ईसा पूर्व 700 में दुनिया का पहला विश्वविद्यालय था, जहां विश्व भर के 10,000 से अधिक छात्र 60 से अधिक विषयों का अध्ययन करते थे। अंग्रेजों को भारत पर राज्य करना था, इसलिए सबसे पहले उन्होंने यहां की शिक्षा पद्धति पर हमला किया। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति स्वावलम्बी बनाती है और स्वावलम्बी ही स्वामी हो सकता है।

लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति ने क्लर्क व दास बनाये। हमारी शिक्षा पद्धति में सुधार करने की आवश्यकता है। रोजगार मूलक पाठ्यक्रम द्वारा हम शिक्षा पद्धति में सुधार कर सकते हैं और उच्च शिक्षा में भी अधिक से अधिक सुधार कर भारत को पुनः शिक्षा का केन्द्र बनाकर हम विश्व गुरु बना सकते हैं।

मनुष्य के लिए प्रत्येक उपयोगी वस्तु की खोज भारतीय प्रणाली, आर्यभट्ट द्वारा शून्य का प्रयोग, दशमलव प्रणाली, महर्षि चरक द्वारा 2500 वर्ष पूर्व आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली, भास्कराचार्य द्वारा खगोल शास्त्र से पृथ्वी की सूर्य के चारों ओर परिक्रमा अवधि, बोधायन ऋषि द्वारा पाई का मूल्य एवं पाइथागोरस से पहले पाईथागोरस सिद्धान्त प्रतिपादित किया आदि सभी हमारे प्राचीन ऋषियों की देन हैं।

राईट बन्धुओं के हवाई जहाज के आविष्कार से 8 वर्ष पूर्व 1895 में संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित शिव कर बापूजी तलपड़े ने मुम्बई चौपाटी समुद्र तट पर चालक विहीन विमान मारुत शक्ति का प्रदर्शन किया था। कई वैमानिक शास्त्र हमारे महर्षियों की देन हैं। विमान संरचना का कई शास्त्रों में उल्लेख था जिन्हें अंग्रेजी सरकार द्वारा जला दिया गया। एक अर्द्ध जली किताब से एक विमान का उल्लेख मिलता है जिसमें मरक्यूरी ईंधन का प्रयोग किया जाता था। यह विमान अन्तरिक्ष में जाने योग्य था। इसी किताब में 12 विमानों की संरचनाएं एवं बॉडी मैटेरियल की जानकारी मिलती है। अंग्रेजों के अलावा भी भारत में कई बाहरी लोगों ने लूटपाट की और हमारे ऋषियों के अमूल्य शास्त्र साथ ले

गए। उनका अनुवाद कर वे कई आविष्कार कर रहे हैं। हमें भारत के इन शास्त्रों का पता लगाकर और भारत में बचे शास्त्रों द्वारा वैज्ञानिक उन्नति करनी चाहिए।

प्राचीन भारत में कृषि के साथ कई कुटीर विकसित थे। यहां की रेशम दुनिया भर में प्रसिद्ध थी। अंग्रेजों ने यहां के कुटीर उद्योगों का विनाश किया, इसलिए कि उनकी मशीनों के बनाए उत्पाद भारत में बिक सकें, उन्हें बाजार मिल सके। फलस्वरूप करोड़ों हाथ खाली हो गये, लोग बेरोजगार हो गये। जब तक पुनः कुटीर उद्योगों की स्थापना नहीं होगी तब तक बेरोजगारी दूर नहीं हो सकती है।

भारत पुनः विश्व गुरु बने इसकी शुरुआत हमें अपने आप से करनी होगी। हम यह सोचें की हम देश के लिए क्या कर रहे हैं। इस व्यवस्था को सुधारने के लिए हम क्या कर रहे हैं। जब सभी यह सोचने लगेंगे तो भारत का नक्शा ही बदल जायेगा।

हमें सभी भारतीयों को शिक्षा देनी होगी और साक्षरता बढ़ानी होगी। प्राचीन भारत में कोई भी निरक्षर नहीं था। भारत में हजारों शिक्षा केन्द्र और गुरुकुल थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने नष्ट कर दिया। हमें इनमें सुधार करना होगा जिससे हम पुनः विश्व गुरु की ओर अग्रसर हो सके।

सार्वजनिक सम्पत्ति का सही उपयोग, सभी कानूनों का पालन, रिश्वत न देना, भ्रष्टाचारियों को सजा दिलाना, विदेशों में जमा भारतीयों का काला धन पुनः भारत में लाना आदि कारक ये सभी भारत को पुनः विश्व गुरु बनने में सहयोग करेंगे। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हमारे ही किसानों से 5 रु. किलो आलू खरीदकर 200 रु. किलो चिप्स हमें बेच रही हैं, हमारा ही पानी बोतलों में बन्द कर हमें लूट रही हैं, इसे हमें रोकना होगा। हमें प्राचीन ऋषियों की तरह देश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना होगा जिससे प्राचीन भारत की तरह वर्तमान भारत पुनः विश्व गुरु के रूप में उभरेगा। ✿

शांति स्थापना के लिए भारत वचनबद्ध

> *भारत प्रारम्भ से ही शांतिप्रिय रहा है। उसने कभी किसी राष्ट्र की भूमि पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया। भारत के सम्राटों ने अत्याचार और दमन का रास्ता न अपनाकर त्याग और तपस्या का रास्ता चुना। भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी से लेकर महात्मा गांधी तक भारतीय परंपरा अहिंसा की नीति पर चलने की रही है।*

◈ **ugk tutk]** 8वीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, फेज 4, दिल्ली

Òkरत विश्व का प्राचीनतम देश है। प्राचीन काल में भी यहां संस्कृति और सभ्यता सर्वोच्च शिखर पर थी। ज्ञान के स्त्रोत वेदों का प्रादुर्भाव इसी धरती पर हुआ। अपने ज्ञान एवं सांस्कृतिक उच्चादर्शों के कारण भारत विश्वगुरु की संज्ञा से सुशोभित था। दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। अपने आदर्श एवं आध्यात्मिक मूल्यों के कारण भारत की संस्कृति एवं सभ्यता आज भी विद्‌यमान है।

भारत के उत्तर में हिमालय जैसा विशाल पर्वत है तो दक्षिण में हिंद महासागर इसके पग पखारता है। पूर्व में बगांल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर है। तीन और से समुद्र से घिरा होने के कारण यहां सम जलवायु पाई जाती है। यहां विभिन्न ऋतुएं होने के कारण अनेक धन्य–धान्य पाए जाते हैं। भारत में लोहा, कोयला, अभ्रक, तांबा आदि खनिजों के विशाल भंडार हैं। यहां पर गंगा, यमुना, गोमती, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी आदि नदियां अपना अमृतमय जल देकर इसको सींचती हैं। अनेक धर्म, संप्रदाय, जाति, भाषा, प्रांतों के लोग यहां रहते हैं, इसी विशेषता पर संसार को आश्चर्य है।

प्राचीन काल से ही भारत अपने ज्ञान, संस्कृति, व्यापार आदि के लिए प्रसिद्ध रहा है। आज भी हमने बहुमुखी उन्नति की है। हमने पृथ्वी, अग्नि, नाग, त्रिशूल आदि के सफल परीक्षण किए हैं और सिद्ध किया है कि वैज्ञानिक प्रगति में हम किसी देश से पीछे नहीं है। जहां पहले हम छोटी–मोटी चीजें भी विदेशों से मंगाते थे, वहां आज हम बड़ी–बड़ी मशीनें निर्यात करते हैं। भारत राम, कृष्ण, महावीर, नानक, मीरा, तुलसी, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, गांधी जैसे महापुरुषों की भूमि है। हम सभी धर्मो का सम्मान करते हुए आपस में प्रेमपूर्वक रहें। देश की अखण्डता एवं एकता के लिए यदि आवश्यक हुआ तो हमने अपने प्राणों की बाजी भी लगा दी। तभी इकबाल ने कहा हैः

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियां रहा है दुश्मन दौर–ए–जहां हमारा।

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने प्रगति व विकास की और अपने कदम बढ़ाए तथा अपना वही सम्मान व पहचान जो प्राचीन समय में थी, पुनः पाने का भरपूर प्रयास किया। इस समय भारत भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अपराध आदि समस्याओं से जूझ रहा है। भ्रष्ट राजनितिज्ञों ने देशभक्ति की भावना को धुंधला कर दिया है। सांप्रदायिकता फिर से सिर उठा रही है। नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। पश्चिम की चकाचौंध से प्रभावित होकर युवा पीढ़ी अपनी अमूल्य संस्कृति को भूलती जा रही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी संस्कृति प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारत प्राचीन समय में इतनी उन्नति कर चुका था कि सभी देश इसकी ओर ताकते थे। हमारा कर्तव्य है कि निजी स्वार्थों को त्यागकर एकजुट होकर देश की प्रगति के लिए प्रयास करें और भारत को फिर से सर्वोच्च शिखर पर लाकर खड़ा कर दें। देश की प्रगति में ही हमारी प्रगति है।

राष्ट्रभक्ति प्रबल हो, यत्न कीजिए,
राष्ट्र अर्जन में सुमन अपर्ण कीजिए।

भारत प्रारम्भ से ही शांतिप्रिय रहा है। उसने कभी किसी राष्ट्र की भूमि पर कब्जा करने का प्रयास नहीं किया। भारत के सम्राटों ने अत्याचार और दमन का रास्ता न अपनाकर त्याग और तपस्या का रास्ता चुना भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी से लेकर महात्मा गांधी तक भारतीय परंपरा अहिंसा की नीति पर चलने की रही है। हमारी सभी प्राथनाएं 'ओइम् विश्वानि देव' से शुरू होकर 'ओइम् शांतिः शांतिः शांतिः' पर समाप्त होती है। भारत सदा से वसुधैव कुटुंबकम की भावना पर बल देता रहा है।

भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं की अनदेखी नहीं कर सकता। विश्व पर मंडरा रही परमाणु युद्ध की विभीषिका को पहचान कर भारत ने अमेरिका और अन्य परमाणु देशों के प्रभुत्व को समाप्त करने के उद्देश्य से मई, 1998 में परमाणु विस्फोट किए। इनका उद्देश्य परमाणु शस्त्रों की होड़ में शामिल नहीं है बल्कि परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों को चेताना है। अब भारत की बात सुनी जा रही है। आज संसार उसी की बात सुनता है जिसके पास शक्ति होती है।

शांति स्थापित करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। जिसके पास शक्ति होती है संसार उसी की बात सुनता है। जब से भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न बना है तब से विश्व समुदाय में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है और उसकी बात सुनी जाने लगी है। भारत अब भी परमाणु शक्ति को शांति पूर्ण कार्यों के लिए प्रयोग करने के प्रति वचनबद्ध है। वचनबद्धता उसे विश्वगुरु पर पाने के मुकाम तक ले जाएगी। ✿

शांति का संदेशवाहक खुद अशांत

◈ vkdk{kk flag Bkdqj] 11वीं
न्यू पिंक फ्लॉवर उ.मा. विद्यालय
नेहरू नगर, इन्दौर, मध्य प्रदेश

आज भारत भ्रष्टाचार रूपी गंभीर रोग से ग्रसित है। इस रोग के समूल इलाज के लिए जनता को आगे आना होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर इसे रोके। न भ्रष्टाचार करे और न सहे। हमारे शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने का कार्य प्रशासन की ओर से भी होना चाहिए। प्रत्येक वह व्यक्ति जो भ्रष्टाचार करता पाया जाये उसे तुरंत निलंबित किया जाये।

th हां, भारत को यदि पुनः विश्वगुरु बनाना है तो इसकी युवा शक्ति को जागृत करना हो। वह युवा जो देश की आधी से अधिक आबादी है। भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने या बनने से पहले इस बात पर विचार करना चाहिए की पुरातन काल में भारत किन कारणों से विश्वगुरु बन पाया। प्राचीन भारतवासी ज्ञानवान वीरवान एवं धैर्यवान थे। भारत ने अपनी प्राकृतिक सम्पदाओं एवं संस्कारों के उपयोग से विश्व में ख्याति प्राप्त की। प्राचीन भारत में आर्य भट्ट, सुश्रुत, नागार्जुन जैसे वैज्ञानिक हुए जिन्होंने अतुल्य खोजों एवं आविष्कारों द्वारा विश्व को अचम्भित कर दिया।

प्राचीन भारत संस्कारवान भारतवर्ष था, जिसके आदर्शों एवं भावों के आगे विश्व नतमस्तक था। भारत में बड़ों का आदर, प्रेम, सत्य, सामंजस्य, बंधुत्व के गुण थे। एक बार चीनी यात्री भारत आया। यहां उसने कई नगरों का भ्रमण किया। उसने देखा कि यहां कोई अपने दरवाजों पर ताले नहीं लगाता। उसने एक घर के सामने जाकर आवाज लगाई। अंदर से एक स्त्री निकली ह्यूनसांग ने उससे पीने हेतु पानी मांगा किंतु

वह स्त्री दूध लाई और कहा कि हमारे यहां अतिथि देवता तुल्य है। देवता को केवल पानी नहीं दिया जाता। आप भीतर चलकर भोजन ग्रहण करें। उसने ह्यूनसांग को घरों के दरवाजों पर ताले न होने का कारण आपसी प्रेम, बंधुत्व एवं विश्वास को बताया।

यह है हमारे भारत की पहचान। भारत विश्वगुरु बना अपने आदर्शों, सद्भावनाओं एवं संस्कृति से। यह भारत ही है जहां सती सीता और अनुसुईया ने जन्म लिया। जहां गौतम, महावीर जन्मे। जिस धरती पर राजा विक्रमादित्य जैसे न्यायप्रिय शासक ने जन्म लिया यह वही पावन धरा है।

किंतु वर्तमान भारत का परिप्रेक्ष्य अत्यंत ही भयावह है। यहां पश्चिमी हवाओं का दूषित कहर है, आज का भारत भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार और बेहाली के थपेड़ों से घिरा हुआ है। भारत भूमि स्वयं यहां हो रहे अत्याचारों को देख तड़प उठती है। आज संस्कारों, सभ्यता का नाश हो रहा है। रक्षक ही भक्षक बन गया है। न्याय और सच, ईमानदारी और सच्चाई न जाने किस काल कोठरी में बंद हैं।

आज धर्म, जाति, रंग आदि के आधार पर भेदभाव, हिंसा, मारकाट जोरों पर है। दूध की नदियां बहाने वाली धरती आज खून की नदियों से सराबोर है। भारत मां कभी मुंबई हमलों से रोई तो कभी जयपुर के हादसों पर बिलखी और ऐसे में भी कोई उसके आंसू पोंछने नहीं आया बल्कि आज भी अखबार के पन्नों पर यही शब्द अंकित हैं कि किसी ने रिश्वत ली, किसी ने हत्या की, किसी ने जालसाजी की। आज इंसान जानवर से भी अधिक वहशी हो गया।

विश्व को शांति, अमन–चैन का संदेश देने वाला भारत आज स्वयं बहुत अशांत एवं परेशान है। ऐसे में भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना थोड़ा कठिन प्रतीत होता है किंतु विश्वगुरु बनना है तो पहले देश के युवा वर्ग को इसकी प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित करवाना होगा। उनमें इसके प्रति सम्मान पैदा करना होगा ताकि वह पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण छोड़े और हमारी अपनी सभ्यता को अपनाए।

ऐसा इसलिए जरूरी है क्योंकि जब तक हम देशवासियों को देश की महानता नहीं बताएंगे तब तक विश्व को भी इसका महत्व नहीं समझा सकते।

भारत ने प्राचीनकाल में जो ज्ञान विदेशों को दिया है उसे आज वह स्वयं भूल रहा है। वह है शांति और खुशहाली का ज्ञान। देश के लोगों को स्वयं चाहिए कि वे इन साम्प्रदायिक झगड़ों, हिंसा आदि में भाग न ले। क्योंकि सभी धर्मों का एक ही सार है ''मानव मात्र से प्रेम''। यही नानक की वाणी है यही हजरत का पैगाम है, और यही राम का संदेश है। लोगों में सांप्रदायिकता की भावना समाप्त करने के लिए समय–समय पर सौहार्द भेटें करवायी जा सकती हैं।

आज भारत भ्रष्टाचार रूपी गंभीर रोग से ग्रसित है। इस रोग के समूल इलाज के लिए जनता को आगे आना होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने स्तर पर इसे रोके। न भ्रष्टाचार करे और न सहे। हमारे शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने का कार्य प्रशासन की ओर से भी होना चाहिए। प्रत्येक वह व्यक्ति जो भ्रष्टाचार करता पाया जाये उसे तुरंत निलंबित किया जाये। ऐसे लोगों के लिए अलग मानव सुधार गृह होना चाहिए जहां उन्हें आचरण की शुद्धता सिखाई जाये।

गरीबी–भुखमरी का निदान भी है। आजकल कई ऐसी गैर सरकारी संस्थाएं हैं जो इन गरीब लोगों की सहायता को तत्पर हैं। आप स्वयं भी यदि अपने आस–पास किसी गरीब–दुःखी को देखें तो उसकी यथासम्भव मदद करें। दान देकर नहीं क्योंकि इससे उनमें भिक्षावृत्ति बढ़ती है। हो सके तो उन्हें रोजगार दिलाने में मदद करें। कहा गया है कि ''भूखे को दी भीख एक वक्त की भूख मिटा सकती है पर उसे दी सही सीख उसका जीवन बना सकती है।''

आज भारत में लाखों ऐसी प्रतिभाएं हैं जो देश को विश्व पटल पर सबसे आगे ला सकती हैं। फिर चाहे वह शिक्षण क्षेत्र में हों, खेल जगत में या अन्य किसी क्षेत्र में। वे सभी भारत का लोहा मनवा सकती हैं। किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि छोटे गांवों एवं कस्बों की ये प्रतिभाएं

आर्थिक तंगी एवं अवसरों की कमी के कारण वहीं दम तोड़ देती हैं। आगे नहीं बढ़ पातीं। कुछ ऐसे वैज्ञानिक एवं खोजकर्ता भी हैं जिन्होंने अपने घर बेचकर अपनी खोजों को अंजाम दिया। ऐसी खोजें जो आदिम जाति के लिए वरदान साबित हो सकती हैं किंतु उन्हें शासन द्वारा न कोई सहायता मिली न ही कोई प्रोत्साहन। भारत में ऋषि, गणितज्ञों, विद्वानों आदि को प्रशासकों का संरक्षण एवं समर्थन प्राप्त था। आज भी जरूरत इसी बात की है कि देश में छुपी प्रतिभाओं को उजागर किया जाए। उन्हें संरक्षण एवं संवर्धन दिया जाये ताकि देश का नाम सदा उन्नति करे।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यही हमारे प्राचीन भारत की मान्यता रही है। तब स्त्री का समाज में उचित स्थान एवं सम्मान था। परिवार में भी सभी निर्णयों में उसकी महती भूमिका थी। नारी को माता भगिनी, भार्या, सखी आदि रूपों में सम्मान प्राप्त था। तब सीता, अनुसुईया, मीरा जैसी महान स्त्रियां थी जो सर्वगुण संपन्न थीं। स्त्रियों का आदर भारतीय परंपरा की एक महान विशेषता थी किंतु आज नारी को सम्मान नहीं दिया जाता। उसके साथ गलत व्यवहार किया जाता है। स्त्री को स्वयं अपनी रक्षा का भार उठाना होगा। घरेलू हिंसा, बाल–विवाह, असाक्षरता जैसे कलंकों से स्वयं को बचाना होगा।

इसी प्रकार असत्य, अन्याय, अत्याचार, अपराध, अनैतिकता, बेरोजगारी, महंगाई, अशिक्षा, बाल मृत्यु दर, कन्या–भ्रूण हत्या जैसी अनेक बीमारियां हैं जिनका उपचार करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को आगे आना होगा। देश को पुनः विश्वगुरु बनाने का जो स्वप्न हमने देखा है उसकी राह थोड़ी कठिन अवश्य है किंतु यदि सच्चे मन से प्रयास करें तो मंजिल दूर नहीं। क्योंकि हम युवा हैं यदि हम प्रयास करेंगे तभी देश की तकदीर बदलेगी। ✿

संसाधनों को बनाएं जनोपयोगी

◈ fjf) xIrk 10वीं
त्यागी पब्लिक स्कूल
बी–3 केशवपुरम, दिल्ली

भारत कभी इसी ज्ञान और विज्ञान के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। हमारे पूर्वजों ने ज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इन्हें जीवनोपयोगी बनाया। भारत को विश्वगुरु बनाने में पूर्वजों की अथक लगन, परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। भारत में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग से ही प्राप्त की जा सकती है।

Okरत हमारी मातृभूमि है और यह विश्व का श्रेष्ठ देश है। विभिन्न संस्कृतियों में सम्मिलित सभी धर्मों और त्योहारों को मनाने वाले, सांप्रदायिक एकता का प्रतीक भारत विश्व विख्यात देश है। विश्व में भारत की जीवन–पद्धति विश्व कल्याण की द्योतक है। किसी भी देश का विकास उस देश में शिक्षा संस्थाओं के विकास से संबंधित होता है। भारत ने प्राचीन काल में ही शिक्षा का महत्व समझ लिया था। हमारी मान्यता रही है कि विद्या रूपी धन सभी धनों में प्रधान है। शिक्षा के इसी महत्व के कारण भारत विश्व गुरु कहलाता था। इसकी अपार विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु इस पुण्य भूमि में शिष्य–भाव से आते रहे हैं। इसी भूमि से ज्ञान–दीप लेकर विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे हैं।

भारत कभी इसी ज्ञान और विज्ञान के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। हमारे पूर्वजों ने ज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इन्हें जीवनोपयोगी बनाया। भारत को विश्वगुरु बनाने में पूर्वजों की अथक लगन, परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। भारत में उपलब्ध

संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी। किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग से ही प्राप्त की जा सकती है। जागरूकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही समृद्धि के शिखर पर पहुंचा जा सकता है।

किसी राष्ट्र की शक्ति उसके प्राकृतिक संसाधनों में समाहित होती है। प्रकृति ने भारत में दिल खोलकर अपनी संपदा लुटाई है। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खनिज संपदा, कृषि योग्य भूमि, जल व जंगल, जलवायु वातावरण सभी एक से बढ़कर एक हैं।

हमारे देश की जलवायु की भिन्नता बहुत विस्तृत है। वातावरण विविधता ने हमारे देश में संपूर्ण विश्व उपस्थित कर दिया है। हमारा देश सम्पूर्ण विश्व के समान है जहां ध्रुव क्षेत्रों जैसी ठंडक भी है तो ऊष्ण कटिबंधीय स्थानों जैसी हरियाली भी ऊंची–ऊंची पर्वत शिखर मालाएं भी हैं तो दूसरी और विस्तृत फैले रेगिस्तान भी। ये सभी विशेषताएं पूरे विश्व में अलग–अलग स्थानों पर पाई जाती हैं।

हमारे देश में आने वाली छः ऋतुयें विदेशों में बड़े आश्चर्य के रूप में जानी जाती हैं। प्रकृति के ये उपहार हमारे देश को विकास के उच्चतम पायदान पर ले जा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है इन इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए। हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद हमारी प्राकृतिक संपदा के रूप में उपलब्ध खनिज और कच्ची धातुयें स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार हैं। चमत्कार और बहुमूल्य हीरों और रत्नों की खानों के दुर्लभ भंडारों का परिश्रम व उपर्युक्ता से उपयोग हमारी समृद्धि को बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।

हमारे देश की नदियां और समुद्री तट काफी समृद्ध हैं। इनके सहयोग से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन होने वाली विद्युत की कमी से लड़ा जा सकता है। निरन्तर प्रवाहित होने वाली वायु के वेग से पवन–चक्कियों का उपयोग करके भी विद्युत बनायी जा सकती है।

हमारे देश में 6 में 8 माह तक सूर्य का प्रकाश भरपूर रहता है। सोलर एनर्जी का प्रयोग देश की समृद्धि को बढ़ाता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि क्षेत्र में नये–नये अनुसंधान कर जागरूकता और सजगता से विकास के नये सोपान प्राप्त किये जा सकते हैं। विदेशों में भारतीय युवाओं ने प्रौद्योगिक क्षेत्र में अपनी धाक जमाई है।

देश में आज मोबाईल फोन, इंटरनेट, ई–मेल आदि गांवों तक पहुंच चुका है। पर्यटन के रूप में देश के पास एक विशाल क्षेत्र है जहां देश की सम्पन्नता और समृद्धि में वृद्धि हो सकती है। राष्ट्रीय धरोहरों की सुरक्षा राष्ट्र की संपदा में वृद्धि करती है।

विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए भी धर्म को संप्रदायों से अलग रखना जानता है। अध्यात्म का भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। भौतिकता के बोझ के तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने की कला हमें विश्व गुरु बनाने में सहायक है।

देश, समाज और जीवन में जितना अनुशासन होगा, वह उतना ही सुदृढ़ और विकसित होगा। हमें स्वार्थ और अहंकार त्यागकर सजग, जागरूक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नये सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा, तभी हम पुनः स्वयं को विश्व गुरु सिद्ध कर पायेंगे। ✿

हमें आगत आठ वर्षों में भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बौद्धिक समाज के रूप में अपनी क्षमता का लाभ उठाना चाहिए। इस देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों, तकनीशियनों तथा कृषकों व अन्य लोगों को इस जिम्मेवारी को उठाना चाहिए और प्रयास को समन्वित करके विकास लक्ष्यों में मदद देनी चाहिए।

ज्ञान आधारित ग्रामीण विकास जरूरी

punu dekj jk; 8वीं
सैनिक स्कूल, गोवालपारा
राजापाड़ा, असम

Òkरत के पुनः विश्वगुरु बनने से तात्पर्य है अन्य देशों की अपेक्षा भारत को प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयामों जैसे विशिष्टीकरण, डिजाइन उत्पादन आदि और प्रौद्योगिकी विकास में स्वदेशी कला में पूर्ण योग्यता हासिल करनी होगी। इस योग्यता को हासिल करने के लिए समन्वित रणनीतियां नया मिशन विकसित करने की योग्यता तथा क्षमता का पूर्ण संचार करना होगा।

यदि हम इतिहास के पन्नें पलटें तो ज्ञात होगा कि भारत विश्व के चंद सभ्य तथा संपन्न देशों में से एक था। सिंधु घाटी सभ्यता, मोहन जोदड़ो तथा हड़प्पा के अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि 2500 ई. पूर्व में ही भारत कृषि, मिट्टी के बर्तन, औजार, आभूषण तथा मिश्रित धातु की मूर्तियों के निर्माण का कौशल विकसित कर चुका था। बाद में लगभग छठी शताब्दी ई. में मगध साम्राज्य में शहरों का विकास तथा सिक्कों का इस्तेमाल आरंभ हुआ। इसके बाद कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ लिखे गये। इसके अलावा भारत को समय–समय पर विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा जिससे औद्योगिक क्रांति की कमी

महसूस होने लगी। बढ़ती जनसंख्या अकाल तथा गरीबी के साथ कभी एक संपन्न रहा देश भारत विदेशी शासकों द्वारा दमन तथा दरिद्रता का शिकार बना दिया गया।

इन सब कुटिलताओं के बावजूद भारत बौद्धिक युग में अपने गौरव का विस्तार कर रहा है। सौभाग्य से भारत ज्ञान युग के उद्‌भव के साथ खुद को एक अत्यंत लाभकारी स्थिति में पाता है, क्योंकि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और शासन में सामाजिक परिवर्तनों को प्रेरित करेगा। यह परिवर्तन बड़े पैमाने पर रोजगार, उच्च उत्पादकता, उच्च राष्ट्रीय विकास, कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण, समन्वित तथा पारदर्शी समाज और ग्रामीण समृद्धि को प्रोत्साहित करेगा। बौद्धिक युग के दौरान भारत का गौरव फिर लौट के आएगा। क्योंकि भारत के पास सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक कार्यकताओं की क्षमताएं हैं। ऐसा कहा गया है कि– 'अध्ययन से सृजनात्मकता आती है। सृजनात्मकता विचारों को आगे बढ़ाती है। विचारों से ज्ञानवर्धन होता है और ज्ञान आपको महान बनाता है।'

भारत को विश्वगुरु बनाने में युवा व विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण योग्यदान अति आवश्यक है। भारत को विश्व गुरु बनाने में निस्संदेह प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भमिका है। इस प्रक्रिया में हम भारतीयों को कुछ नए प्रारूपों की मदद लेनी होगी और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल तथा भारत को परेशान करने वाली समस्याओं को सुलझाने में कुछ कल्पनाशील प्रवृत्तियों की मदद लेनी होगी। देश को अपने हितकारी जैव प्रौद्योगिकी सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी, रणनीतिक क्षेत्रों, उद्योगों तथा आधारभूत तंत्र का विकास, नदियों की नेटवर्किंग के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में समन्वित विकास योजना तथा अधिकृत प्रबंधन के लिए ज्ञान आधारित ग्रामीण विकास एक अनिवार्य आवश्यकता है।

मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूं कि भारत में आर्थिक या सामाजिक विकास के संदर्भ में जी–8 देशों को भी पीछे छोड़ने की संभावना है। हमारे अंदर इस इंधन को प्रज्ज्वलित करने वाले ईंधन का अभाव है। उसका हम लाभ नहीं उठाते। इसके विभिन्न कारण खराब नेतृत्व, मूल्य संवर्धन का अभाव इत्यादि हो सकते हैं। एक कहावत है कि भेड़ के

नेतृत्व में शेरों की सेना एक शेर के नेतृत्व में भेड़ों की सेना से युद्ध हार जाएगी। अभी सबसे अधिक आवश्यकता स्वप्नदृष्टा तथा योग्य नेतृत्व की है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर सके। क्योंकि– 'इक्कीसवीं सदी में पूंजी या श्रम के बजाय ज्ञान प्राथमिक उत्पादन संसाधन है।' विकास का एक अन्य प्रेरक है–साक्षरता। एक अशिक्षित देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। हमें भारत को विश्वगुरु बनाने से पहले साक्षर भारत का स्वप्न देखना चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि हममें वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपने उत्पादों को बेचने की आक्रामक प्रवृत्ति का अभाव है। हम इसके बजाय 'अमेरिका में निर्मित' से प्रभावित हैं।

हमें भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना चाहिए और उनका प्रभावपूर्ण तरीके से विपणन करना चाहिए। हमें अपनी जैव–विविधता को पहचानना चाहिए और उन्हें पेटेंट कराना चाहिए। साथ ही साथ हमें बढ़ती जनसंख्या के संकट पर भी एक निगाह रखनी चाहिए क्योंकि मात्रा में वृद्धि गुणवत्ता में कमी को प्रेरित करेगी। इसके लिए में चीन की सरकार द्वारा उठाए गए सख्त कदमों का सुझाव दूंगा। भारत जैस लोकतांत्रिक देश किसी भी देश को पछाड़ सकता है, यदि एक बार लोग इसके साथ–साथ चलें।

भारत के पास पारंपरिक ज्ञान की संपदा है, लेकिन वह बिखरा हुआ है। हमें उन सभी ज्ञानों को एकत्रित करना होगा। पांच विकसित क्षेत्रों की आवश्यकता महत्वपूर्ण होनी चाहिए–

- कृषि क्षेत्र
- शिक्षा तथा स्वास्थ्य
- अधारभूत सुविधाएं
- रणनीतिक क्षेत्र
- सूचना तथा संचार प्रौधोगिकी

हमें आगत आठ वर्षों में भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बौद्धिक समाज के रूप में अपनी क्षमता का लाभ उठाना चाहिए। इस देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रौद्योगिकीविदों, तकनीशियनों तथा कृषकों

व अन्य लोगों को इस जिम्मेदारी को उठाना चाहिए और प्रयास को समन्वित करके विकास लक्ष्यों में मदद देनी चाहिए। चुनौतियों हमेशा रहेंगी, लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम प्रगति तथा विकास के लिए उन्हें अवसरों में कैसे बदलते हैं। हमें किसी भी मिशन में सफल होने के लिए अदम्य उत्साह तथा विफलताओं का सामना करने और उनसे सीखने के साहस की आवश्यकता होती है।

दायित्व चुनौतीपूर्ण है, परंतु एक अरब जनसंख्या वाले एक दृढ़ संकल्प देश के लिए साकार योग्य है। हमें इस तथ्य का संज्ञान लेना होगा कि विश्व का सबसे बढ़ा लोकतंत्र होने के बावजूद भारत स्वतंत्रता के छः दशकों बाद भी एक विकासशील देश ही है।

इस स्थिति में बदलाव जरूरी है और भारत को एकमात्र विश्वगुरु बनने से पहले विकसित देश बनना है। विकास के लिए दृढ़ निश्चय और एकनिष्ठता की आवश्यकता है। हमें याद रखना चाहिए कि भारत को विदेशी शासक से आजाद कराने में हमारे पूर्वजों ने बहुत से बलिदान दिये हैं, कठिनाइयों और दुःखों का सामना किया है, ताकि हम स्वतंत्र भारत में रह सकें और अपना मस्तक ऊँचा रख सकें।

एक देश केवल कुछ लोगों के महान हाने से महान नहीं होता, बल्कि इसलिए महान होता है कि उस देश में हर कोई महान होता है। युवाओं को शिक्षा में श्रेष्ठता प्राप्त करनी चाहिए और उन्हें नैतिक मूल्यों तथा समाज कल्याण की भावना के साथ अच्छा मनुष्य बनना चाहिए। युवाओं के समन्वित तथा केंद्रित प्रयास भारत को एक संपन्नशाली विश्वगुरु बनाने की चुनौती को पूरा कर सकते हैं।

यह स्वप्न वास्तव में एक चुनौती है और हम इस पर तभी विजय प्राप्त कर सकते हैं जब हम एक अरब लोग, अन्य सभी साधारण मुद्दों को भूलकर एक देश के रूप में सामने आकर एक–दूसरे से हाथ मिलाएं। सरकार अकेले इस चुनौती का सामना नहीं कर सकती। ✿

सभी को बदलनी होगी सोच

हम पूजा पाठ, यज्ञ, दान-पुण्य कर घी के दीए को जलाकर अपना जन्म-दिवस मनाने की परंपरा को छोड़कर अंडे से बने गंदे केक पर मोमबत्ती फूंककर असंगत परंपरा को बड़े गर्व से निभा रहे हैं। अपनी स्वास्थकर चीजों को छोड़कर अंडे से बने और दूसरे रोगों को बुलावा देने वाली चीजों को खाना अपनी शान समझ रहे हैं।

◈ **ç'kkr dekj** 10वीं
मानव भारती इंडिया
इंटरनेशनल स्कूल
पंचशील पार्क, दिल्ली

gमारा देश भारतवर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है। अपनी महान सभ्यता व संस्कृति के कारण ही नहीं प्रकृति के भौगोलिक निर्माण की दृष्टि से भी सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना है। कविवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में–

तीन तरफ सागर की लहरें, जिसका बने सवेरा
पतवारों पर नियति सजाती, जिसका सांझ–सवेरा।
बनती हो मल्लाह मुट्ठिया, सतत भाग्य की रेखा
रत्नाकर रत्नों का देता हो टकरा कर लेखा।

सभी प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्य और वैभव से सम्पन्न हमारा देश संसार का सबसे बड़ा जनतंत्र भी है। यह विश्व की प्राचीनतम मावन संस्कृति की जन्मभूमि है। भारत ऋषिओं का तपोवन है, प्रकृति का उपवन है, इसीलिए प्रसिद्ध शायर इकबाल के शब्दों में हम गाया करते हैं– 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।

कहा जाता है प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु के रूप में जाना जाता था।

यहां सैकड़ों ज्ञान पिपासु बाहर से, दूर देशों से आते थे और यहां की शिक्षा प्रणाली को देखकर इसकी चाह में यही रुक जाते या वापस दूसरी बार इसे ग्रहण करने जरूर आते थे। हमारे देश को विश्व गुरु बनाने का श्रेय हमारे देश के विद्वानों, कलाकारों, हमारे महापुरुषों, ऋषियों और कवियों को जाता है। इनके द्वारा रचित ग्रंथों, काव्यों, महाकाव्यों, उपनिषदों, पुराणों आदि द्वारा ही पहले शिक्षा के स्वरूप में लोगों को शिक्षित किया जाता था।

नालन्दा नामक दो विश्वविद्यालय उन दिनों बहुत प्रख्यात थे। देशी–विदेशी लोग उच्च शिक्षा के लिए यहां आया करते थे। यहां की सभ्यता और संस्कृति को अपना कर यहीं के हो जाते थे। उन दिनों इनके द्वारा भारत की शिक्षा के बारे में विश्व में बहुत प्रचार–प्रसार हुआ। लेकिन जितना प्रचार–प्रसार हुआ, जितना मान–सम्मान मिला, सब कुछ विदेशियों को खटकने लगा। वे तो हमारे रहने के तौर–तरीके ले गए और यहां की संस्कृति और शिक्षा से अपने देश को धनी बना डाला परंतु हमारे देश को खोखला करना शुरू कर दिया और धीरे–धीरे इसका पतन हो गया।

पूरे विश्व को अंधेरी गुफा से निकालकर सूर्य की रश्मि में भिगोने वाले जो चारों पैरों पर घुडकना सीख रहे थे, उन्हें उंगली पकड़ कर चलना सिखाने वाले हम हजारों भारतीयों को आज अपने भारतीय होने पर शर्म महसूस होती है। हीन भावना से ग्रसित होकर जीवन जी रहे हैं हम सब। तभी हम भारतीय अपने तर्कसंगत नए साल को छोड़कर अंग्रेजों का नया साल मनाते हैं जिसका कोई आधार नहीं है। हम पूजा पाठ, यज्ञ, दान–पुण्य कर घी के दीए को जलाकर अपना जन्म–दिवस मनाने की परंपरा को छोड़कर अंडे से बने गंदे केक पर फूंकमार कर असंगत परंपरा को बड़े गर्व से निभा रहे हैं। अपनी स्वास्थकर चीजों को छोड़कर अंड़े से बने और दूसरे रोगों को बुलावा देने वाली चीजों को खाना अपनी शान समझ रहे हैं।

अपनी मातृभाषा में बात करने से हम अपने आप को अपमानित महसूस करते हैं और विदेशी भाषा को बोलने में गर्व महसूस करते हैं। हमारे देशवासियों की अगर ऐसी मानसिकता बन गई है तो विश्व गुरु बनने के लिए इसको बदलना ही होगा। भारतीयों में रुग्ण मानसिकता और

हीन भावना से भरने की चाल तो 1931 से मैकाले के घोषणा पत्र के समय से ही चली आ रही है, जबसे यहां अंग्रेजी शिक्षा लागू हुई।

अंग्रेजी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ही यही था कि भारतीयों को पराधीन मानसिकता वाला बना दिया जाए ताकि वे हमेशा अंग्रेजों के तलवे चाटते रहें। लोगों का नैतिक पतन हो जाए, भारतीय कभी अपने पूर्वजों पर गव न कर सकें, वे बस यहीं समझते रहें कि अंग्रेजों के आने से पहले भारत बिल्कुल असभ्य था। उसके पूर्वज अंधविश्वासी और रूढ़िवादी थे। अगर अंग्रेज न आये होते तो हम कभी तरक्की नहीं कर पाते। इसी तर्ज पर उन्होंने शिक्षा–व्यवस्था लागू की थी और सफल भी हो गए और यह हमारा दुर्भाग्य ही है।

हमारी एक और महान विरासत है संगीत, जो सरस्वती की देन है, किन्हीं साधारण मानवों की नहीं। फिर इसे हम तुच्छ समझकर इसका अपमान क्यों कर रहे हैं? हमें इसे विश्वव्यापी बनाना होगा। आज हमारे संगीत निर्देशक ए.आर. रहमान को संगीत के लिए आस्कर पुरस्कार दिया गया जिसके गर्व से सीना चौड़ा कर दिया भारतीयों का। सभी को मिलकर अपनी सोच को बदलना होगा और पुनः हमें अपने प्राचीन संस्कृति को दुबारा से अपनाना होगा। तभी हम दुबारा से अपने देश को विश्व गुरु के रूप में देख पायेंगे।

इसके अलावा हमें अनेक उपाय करने होंगे। सर्वप्रथम समूचे भारत के लोगों को योग्य, कुशल, आदर्शवान, चरित्रवान एवं ज्ञानवान बनाना होगा हमें अपने साहित्य–संगीत और कला का विकास चरम सीमा तक करना होगा। हमें अपने विज्ञान का सम्पूर्ण विकास करना होगा जो विश्व के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन जाए। हमें वैभव सम्पन्न भी होना होगा जिससे विश्व में हमारा प्रभाव पूर्णरूप से स्थापित हो सके। हमें अपनी भाषा का सम्मान करते हुए उसको विश्व की आवश्यकतानुकूल ढालना होगा। उसमें सुधार और विकास करके विश्व का मार्गदर्शक बनना होगा।

हमें अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के बीज विश्व को वितरित करने होंगे। हमें अपनी उन दीवारों को तोड़ना होगा जो संकुचित रीति–रिवाजों

के कारण बाधक बन रही हैं। हमें वेदों की विश्वबन्धुत्व की भावना सारे विश्व में फैलानी होगी और संसार को बताना होगा कि–

''सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत।''

हमें विश्व के प्रत्येक देश में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अपने ढंग के शिक्षा केन्द्र खोलने होंगे। भारत में ऐसी शिक्षण संस्थाएं बनानी होंगी जहां विश्व के कोने–कोने से छात्र आकर ज्ञान प्राप्त कर सकें और कह सकें–

''अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहां पहुंच अंजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।'' ✿

पाश्चात्य की नकल से बचना होगा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हम फिर से संभल रहे हैं। आज भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में विश्व मानचित्र पर उभर रहा है। भारत के पास चीन के बाद दूसरा जन-धन है। हमारे पास अपने अनगिनत महापुरुषों के आदर्शों की धरोहर है। आज भी राम, कृष्ण, बुद्ध तथा महावीर जैसे महापुरुषों के आदर्श से पूरा विश्व प्रभावित है।

◈ fç;k'k dekj 10वीं
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल
मकरपुरा, बडोदरा, गुजरात

Xरु अर्थात् परम ब्रह्म। सृजन, पालन तथा संहार शक्ति से संम्पन्न यानी सर्वशक्तिमान। यह वाक्य है हमारे वेदों का। हमारे वेदों में गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। गुरु वह होता है जो मनुष्य को मानवता का पाठ पढ़ाए। उसे मानव जीवन के उद्देश्यों से अवगत कराए।

आज संसार में अदृश्य ईश्वरीय शक्ति की कल्पना तो सभी करते हैं लेकिन जब वास्तविक ईश्वर की बात होती है तो विभिन्न महापुरुषों की जीवनी हमारे दृष्टि पटल पर नाचने लगती है जिनके विचार तथा आदर्श आज भी अनुकरणीय हैं। वही महापुरुष देश के लिए, समाज के लिए तथा हर एक व्यक्ति के लिए गुरु है। हमारे समाने एक नया शब्द है विश्वगुरु जिसके अर्थ की व्याख्या का बहुत विस्तार है।

विश्वगुरु का अर्थ है विश्व का गुरु। उपर्युक्त सापेक्ष में विश्वगुरु शब्द स्व–विश्लेषित है। हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि विश्व गुरु वह सामर्थ्यवान देश है जो विश्व के अन्य देशों के लिए अनुकरणीय हो, जो ज्ञान–विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र हो तथा जिसके आदर्श को विश्व का हर देश अपनाए।

आज भारत विश्व मानस पटल पर एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। 21वीं सदी के बदले विश्व मानचित्र पर हर शिक्षित तथा उत्तरदायी भारतीय नागरिक के समक्ष एक यक्ष प्रश्न उपस्थित है–भारत विश्वगुरु कैसे बने? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने से पहले हमें खुद में एक विश्वास जगाना होगा कि क्या भारत में विश्व गुरु बनने की क्षमता है। निश्चित रूप से भारत में विश्वगुरु बनने की क्षमता है। बल्कि यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो भारत प्राचीन काल से ही विश्वगुरु है।

ज्ञान–विज्ञान का प्रमुख स्त्रोत होने के कारण भारत विश्वगुरु कहलाता था। इस कथन की पुष्टि भारत के दो विश्व–विख्यात प्राचीन विश्व–विद्यालयों नालंदा तथा तक्षशिला से होती है। आर्थिक परिदृश्य में भी भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। लेकिन विभिन्न विदेशी आक्रमणों, मुगल तथा अंग्रेजों शासकों के लुटेरे व्यवहार ने हमारी प्राचीन विश्वगुरु की पहचान को धूमिल कर दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हम फिर से संभल रहे हैं। आज भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में विश्व मानचित्र पर उभर रहा है। भारत के पास चीन के बाद दूसरा जन–धन है। हमारे पास अपने अनगिनत महापुरुषों के आदर्शों की धरोहर है। आज भी राम, कृष्ण, बुद्ध तथा महावीर जैसे महापुरुषों के आदर्श से पूरा विश्व प्रभावित है। हमारे महान काव्यों, जैसे रामायण, महाभारत आदि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्त्रोत हैं। हमारे वेद तथा पुराण आधुनिक विज्ञान जथा चिकित्सा क्षेत्र के विकास का मूल हैं।

हमारे आधुनिक महापुरुषों जैसे स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि के आदर्शों को पूरा विश्व अपना रहा है। गांधी जी के सत्याग्रह तथा अहिंसा के सिद्धांत को विश्व के प्रत्येक देश में अपनाया जा रहा है। अनेक भारतीय सपूतों के आविष्कारों से विज्ञान तथा चिकित्सा क्षेत्र फल–फूल रहा है, जैसे भाष्कराचार्य द्वारा शून्य तथा अनंत के आविष्कार ने गणित तथा ज्योतिष विद्या को और अधिक समृद्ध बनाया।

सुश्रुत के अनुसंधान ने आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी को जन्म दिया। ऐसे

अनगिनत प्राचीन पाठ के बल पर ही हम विश्वगुरु बनने की क्षमता रखते हैं। लेकिन इस आधुनिक युग में अब समय आ गया है जब हम अपनी क्षमता को वास्तविक रूप दें तथा विश्वगुरु वाली भूमिका में आएं।

भारत को विश्वगुरु बनने के लिए महाशक्ति बनना अति आवश्यक है क्योंकि सर्व शक्तिमान बनकर ही आप दूसरों को सही राह दिखा सकते हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी के शब्दों में–

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।
उसका क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत सरल हो।।

हमें आध्यात्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा सामरिक सहित हर क्षेत्र में नायक की भूमिका निभानी होगी। यह शुभ संकेत है कि हम इस दिशा में अग्रसर भी हैं। आज स्थिति यह है कि भारतीय मस्तिष्क के बिना विश्व के किसी भी आधुनिक शिक्षण संस्थान, तकनीकी संस्थान तथा चिकित्सा संस्थान की कल्पना अंसभव है। प्रति वर्ष आई.आई.टी., एन.आई.टी., आई.आई.एम. आदि संस्थानों से प्रशिक्षित हजारों छात्र विश्व के अधिकांश देशों में अपने ज्ञान का लोहा मनवाते हैं।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत ने चांद तक पहुंचने का लक्ष्य भी हासिल कर लिया है। हमारे नीति निर्माताओं को शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक निवेश करने की जरूरत है जिससे भारत अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक केंद्र के रूप में उभर सके तथा विश्वगुरु बनने की राह और आसान हो जाए।

जहां तक आर्थिक शक्ति की बात है तो भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है। यदि कुछ समस्याओं तथा बाधाओं जैसे भ्रष्टाचार, कालाधन तथा प्राकृतिक आपदा आदि से ठीक तरह से निपटा जाए तो वो दिन दूर नहीं जब भारत नंबर एक आर्थिक महाशक्ति होगा तथा हर जरूरतमंद देश की सहायता तथा निर्देशन कर सकता है। भारतीय राजनीतिक तंत्र को अन्ना हजारे तथा रामदेव जी की आवाज को ध्यान में रखकर भ्रष्टाचार तथा कालाधन रूपी रोग का समाधान खोजना होगा जिससे भारत विश्वगुरु की राह पर एक कदम और अग्रसर हो सके। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति की जरूरत

है जिससे प्रति वर्ष की अपार जन–धन की क्षति को रोका जा सके तथा इसका उपयोग दूसरे क्षेत्रों में किया जा सके।

विश्वगुरु की राह में एक और बाधक तत्व है क्षेत्रीय अस्थिरता। हमें पड़ोसी देश जैसे चीन, पाकिस्तान आदि से संबंध मधुर बनाने होंगे। इसके लिए कूटनीतिक प्रयास के साथ–साथ सामरिक शक्ति भी बढ़ानी होगी। वैसे भारत सदैव ही शान्ति का पुजारी रहा है और आगे भी रहेगा परंतु तुलसीदास जी के शब्दों में–'बिनु भय होहि न प्रिति'। अतः विश्वगुरु बनने के लिए सामरिक महाशक्ति बनना भी जरूरी है।

भारत विश्व का सबसे विशाल तथा सफल गणतांत्रिक देश है। इसका अनुकरण पूरा विश्व कर रहा है। विश्व के अनेक राजतांत्रिक देश जैसे नेपाल, मिस्र आदि भी इससे प्रभावित होकर इसकी शासन व्यवस्था को अपना रहे हैं। योग तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में तो भारत सदियों से विश्वगुरु की भूमिका निभा रहा है।

विश्वगुरु की भूमिका में आज भारत विश्व के अनेक क्षेत्रों में शान्ति सहायता तथा नव निर्माण कार्य में राष्ट्र संघ का अभिन्न अंग है। लेकिन यह एक विडंबना ही है कि भारत आज भी राष्ट्रसंघ का स्थायी सदस्य नहीं है। हमें कूटनीतिक प्रयास कर राष्ट्रसंघ का स्थायी सदस्य बनना होगा जिससे हम विश्व शान्ति स्थापना में और अधिक सक्रिय हो सकें।

हमारे लक्ष्य में बाधक अतिरिक्त तत्व जैसे आतंकवाद नक्सलवाद, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी इत्यादि से हमें सख्ती से निपटना होगा। हमें हमारी सामाजिक बुराइयां जैसे अंधविश्वास, दहेजप्रथा, जातिवाद इत्यादि से भी निपट कर एक सभ्य सामाजिक व्यवस्था कायम करनी होगी जिससे अन्य देश भी हमारी सामाजिक व्यवस्था का अनुकरण कर सकें। आंतरिक बाधाएं विश्वगुरु के उत्तरदायित्व से हमारा ध्यान बंटाती हैं।

भारत के विश्वगुरु बनने में युवा वर्ग के सहयोग की आवश्यकता है। एक देश का भविष्य उसकी युवा शक्ति है। हम ऊपर वर्णित सारी बाधाओं से दृढ़ता से छुटकारा पा सकते हैं। बस दृढ़ इच्छा शक्ति तथा समुचित कार्यान्वयन की आवश्यकता है। हमें भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता

विश्व के अन्य क्षेत्रों में पहुंचानी होगी। इसके लिए हम फिल्म तथा मीडिया का सहारा ले सकते हैं। हमें पश्चिमी सभ्यता की नकल से बचना होगा तथा अपनी सभ्यता का प्रचार करना होगा।

इस तरह हम विश्व मानचित्र पर हर क्षेत्र में श्रेष्ठता साबित कर विश्व को शान्ति तथा मानवता की राह पर लाकर विश्वगुरु बना सकते हैं और गुनगुना सकते हैंः–

गांधी के सपनों का भारत प्यारा है और न्यारा है।
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा है।। ✿

आओ! खुद को बदल कर देखें

◈ okl| xlrk 8वीं
हैप्पी होम पब्लिक स्कूल
बी–4, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली

रानी पद्मावती की सुंदरता के चर्चे बहुत दूर तक फैले हुए थे। शायद यही सब कारण थे जिसके लिए प्राचीन काल में भारत को विश्व गुरु कहा जाता था। तब के समय और आज के समय में बहुत अंतर आ गया है। इस स्थिति के हम ही जिम्मेदार हैं। आज हम अपने अतीत को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। यह बातें शायद हमारी आज की पीढ़ी को सुनने में भी अजीब लगे परंतु यह बिल्कुल सच है।

Òkरत ऐसा पहला देश है जिसमें कला, सभ्यता और संस्कृति ने सबसे पहले जन्म लिया। सुरों का ज्ञान भारत ने ही विश्व को कराया था। भारत में वे राग और मल्हार गाए जाते थे जिनसे दीपक प्रज्ज्वलित हो जाते थे। ऐसी संस्कृति जो किसी भी बाहर वाले को अपना बना ले, भारत की ही थी। हमारे यहां से ज्ञान लेने के लिए चीन के विशाल गुरु दार्शनिक मीलों यात्रा करके तक्षशिला के विश्वविद्यालय से ज्ञान अर्जित करने आए थे।

हमारे यहां ही गोतम बुद्ध व महावीर आदि का जन्म हुआ जिन्होंने विश्व को शांति का पाठ पढ़ाया व उन पर जीवन भर अमल भी किया। स्त्रियों में लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, जोधाबाई जैसी शक्तियों ने अपना लोहा पूरी दुनिया से मनवाया था। साथ ही साथ गुरुओं में भी मैत्रेयी, गार्गी, कात्यायनी, भामनी तथा गौतमी आदि स्त्रियों ने अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाया था।

रानी पदमावती की सुंदरता के चर्चे बहुत दूर तक फैले हुए थे। शायद यही सब कारण थे जिसके लिए प्राचीन काल में भारत को विश्व गुरु

कहा जाता था। तब के समय और आज के समय में बहुत अंतर आ गया है। इस स्थिति के हम ही जिम्मेदार हैं। आज हम अपने अतीत को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। यह बातें शायद हमारी आज की पीढ़ी को सुनने में भी अजीब लगे परंतु यह बिल्कुल सच है।

आज की पीढ़ी इस बात को कैसे स्वीकार कर सकती है कि किसी समय में हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था। बाबर अपने सैनिकों को यह कहकर भारत लाया था कि वह उन्हें धरती पर जन्नत दिखाएगा जो भारत में है। वह अपने सैनिकों को घुमाने के लिए लेकर आया था परंतु वह यहीं का होकर रह गया।

अब मुझे खुद किताबों में पढ़कर ऐसा नहीं लगता की भारत कभी ऐसा रहा होगा। मुझे तो सब जगह बेईमानी, चोरी, अपना माल जेब में भरो, दूसरे का हक छीन लो, किसी को आगे मत बढ़ने दो जैसा माहौल ही दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में कोई कैसे विश्व गुरु बन सकता है?

भारत को अगर विश्व गुरु बनना है तो उसे हमें एक परिवार की तरह मानना होगा और इसकी सबसे छोटी कड़ी जो की एक क्लास या कक्षा है, जिसमें मैं पढ़ता हूं अगर हम कक्षा को ठीक ढंग से चलाएंगे तो परिणाम स्वरूप एक कक्षा सही होगी फिर स्कूल, बढ़ते–बढ़ते एक इलाका, नगर, एक शहर, एक राज्य और अंत में एक देश सुधरेगा।

अब आप इसकी शुरूआत कैसे करेंगे, मैं आपको बताता हूं। पहले तो हमें अपनी कक्षा से भेदभाव को निकालना होगा। अगर हम इसको करने में सफल हो जाते हैं तो हमारी कक्षा में एकता की झलक तो देखने को मिलेगी ही, साथ ही हमारा अभियान का पहला चरण भी सफल हो जाएगा। इसके बाद हमें अपनी कक्षा में दूसरे की काट करना छोड़ना होगा जैसे कि दूसरे के नंबर कटवाना, किसी की चुगली करना आदि जैसे गलत कामों को अंत देना होगा।

अगर हम किसी को भी उसकी गलत चीजों को सुधारना बताएं तो यह ज्यादा लाभकारी होगा। फिर हम आगे बढ़ने के साथ–साथ दूसरों की टांगें भी खीचते रहते हैं और आगे जाकर फैल जाते हैं और जिंदगी

भर इस गलती का पालन करते हैं। इस प्रकार समाज में जो नींव बचपन से ही दूसरे को काटकर आगे बढ़ने व दूसरे के दुख को देखकर खुश होने की मानसिकता बनकर रह गई हैं, इस वजह से हमारा देश तरक्की नहीं कर पाता।

दूसरी बात हमें आसपास भी किसी भी जरूरतमंद की सहायता करनी चाहिए तथा इस बात के लिए हमें उन्हें मनाना चाहिए कि वे हमारे लिए किसी का हक ना मारे तथा भ्रष्टाचार में संलिप्त न हों। कहीं हमारे कारण या हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमारे माता–पिता कुछ काम गलत तो नहीं कर रहे। बड़े होकर हम यह खुद प्रण लें की अपने कर, अपने भुकतान तथा अपनी आवश्यकताओं को इतना कभी न बढ़ाएं कि हमें गलत काम करने पड़ें। यह काम मुश्किल जरूर है पर असंभव नहीं।

इसके लिए हमें किसी को भी समझाने की जरूरत नहीं हैं। कोई अनशन या मार्च भी नहीं निकालना है। केवल एक छोटा सा प्रण लेना है। इसके लिए हमें किसी भी बड़े को समझाना नहीं है। अपने विद्यालय से अच्छी शिक्षा प्राप्त करके हम जो भी व्यवसाय, नौकरी या कुछ भी काम करें, अपनी ईमानदारी व दूसरों की मदद करते हुए करें। ईमानदारी से इस प्रकार धीरे–धीरे भारत विश्व गुरु बन पाएगा।

यह सब हम बच्चों के ही हाथ में है। हम अपने से बड़ों को बदलने का जोखिम तो नहीं उठा सकते मगर खुद को बदलकर तथा अपने सहपाठी की मदद करके एक सभ्य समाज की नींव जरूर रख सकते हैं। मैं चाहता हूं कि इस की शुरूआत आज से और अभी से हो ताकि विश्व गुरु बनने में ज्यादा समय न लगे। ✿

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व क्रांति आई। पहले एक जिले में एक विद्यालय हुआ करता था परंतु अब हर गांव में विद्यालय खुल चुके हैं। 1947 में भारत की साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी जो अब 2011 की जनसंख्या के अनुसार 74.04 प्रतिशत पर पहुंच गयी है। देश में कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान खुल चुके हैं। हससे ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षा को बहुत बढ़ावा दिया जा रहा है।

आत्मनिर्भरता से ही होगा सपना साकार

◈ e;d uek 10वीं
दिल्ली पब्लिक स्कूल
भिलाई, छत्तीसगढ़

,क समय था जब भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। वह व्यापार, शिक्षा, कला, संस्कृति, आर्थिक व्यवस्था व साहित्य में चरम उत्कर्ष पर था। इसका यश देश–विदेश में फैला था तथा वह विश्व का गुरु था। भारत में एक से बढ़कर एक शिक्षण संस्थान थे। तक्षिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों में देश–विदेश से बड़े–बड़े विद्वान शिक्षा ग्रहण करने आते थे। हमारे गुरुकुलों की ख्याति भी देश–विदेश में थी। इनमें छात्रों का सम्पूर्ण विकास होता था।

मुगल साम्राज्यों के हमलों ने भारत को बहुत नुकसान पहुंचाया। ज्ञान के केंद्रों को आगजनी द्वारा जलाया गया जिससे समाज की अवनति का मार्ग प्रशस्त हो गया। निरक्षरता का विस्तार होता गया। मुगल साम्राज्य के बाद भारत करीब तीन सौ वर्षों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। पराधीनता के कारण शिक्षा का प्रचार थम–सा गया। भारत सोने की चिड़िया से एक जर्जर अर्थव्यवस्था में तब्दील हो गया।

अंधेरे के बाद उजाला जरूर आता है। 1994 में भारत की स्वतंत्रता के बाद उसके संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा पंडित

जवाहर लाल नेहरू ने इस संपूर्ण विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण फर्ज अदा किया। भारत कृषि प्रधान देश है। इसको ध्यान में रख उन्होंने रूस के साथ करार किया जिसके तहत भारत में कई बांधों का निर्माण किया गया।

बांधों के निर्माण से सिंचित क्षेत्र में इजाफा हुआ तथा मानसून पर निर्भरता कम हुई। हरित क्रांति ने इस पैदावार को और बढ़ा दिया। अब भारत विश्व में चावल व गेहूं के उत्पादन में चीन के बाद दूसरे नंबर पर है। मक्का के उत्पादन में वह छठे स्थान पर है। हमारे छत्तीसगढ़ को तो 'धान का कटोरा' कहा जाता है।

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व क्रांति आई। पहले एक जिले में एक विद्यालय हुआ करता था परंतु अब हर गांव में विद्यालय खुल चुके हैं। 1947 में भारत की साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी जो अब 2011 की जनसंख्या के अनुसार 74.04 प्रतिशत पर पहुंच गयी है। देश में कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान खुल चुके हैं। हससे ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षा को बहुत बढ़ावा दिया जा रहा है।

आजादी के बाद स्वास्थ्य सेवाओं में भी जमीन आसमान का फर्क आ गया है। भारत में पहले कई महामारियों का प्रकोप था। सरकार द्वारा चलाए गए अभियानों ने इनका अस्तित्व काफी हद तक मिटा दिया है। कई तरह की उन्नत मशीनों ने दुर्लभ उपचारों को सुलभ बना दिया है। 1947 में शिशु मृत्यु दर 30 थी जो अब नीचे 6 पर आ गयी है। औसत आयु दर भी बढ़ी है। 1947 में यह 32 वर्ष थी जो अब 67 वर्ष हो गई है।

आवागमन साधनों का भी तेजी से विकास हुआ है। अभी हाल में ही उद्घाटित 165 कि.मी. लंबा यमुना एक्सप्रेस वे इसका साक्षात उदाहरण है। गांव–गांव में भी सड़कें बन चुकी हैं। वायु–मार्ग में भी क्रांति आई है। अब कई शहर हवाई मार्ग से जुड़ चुके हैं। 1853 में मुम्बई और पुणे के बीच पहली रेलगाड़ी चली थी। समूचे देश में अब पटरियों का जाल बिछ चुका है। दिल्ली एवं कोलकाता में मेट्रो–ट्रेन की सुविधा भी है।

देश की सुरक्षा में तैनात सेना उसकी रीढ़ की हड्डी होती है। भारत पहले सैन्य ताकत में काफी कमजोर था पर अब उसने पूरे विश्व को

अपनी शक्ति से अवगत कराया है। भारत की थल सेना विश्व की तीसरी सबसे बड़ी सेना है तथा सैन्य खर्च में भारत 8वें स्थान पर है।

आज के समय में भारत एक विकासशील देश है। इसे विकसित देशों की सूची में लाने के लिए तथा विश्व का गुरु बनने के लिए हमें कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। भारत में 70 प्रतिशत लोग जीवन यापन के लिए खेती पर निर्भर है। इसलिए सिंचित क्षेत्र में विस्तार करना आवश्यक है। एक भावी योजना के तहत सरकार को देश की सारी नदियों को आपस में जोड़ना चाहिए जिससे अनाज की पैदावार में भारत समृद्ध बने। हमें पारंपरिक तरीकों को छोड़ आधुनिक यंत्रों को अपनाना होगा ताकि भारत का हर किसान सुखी एवं संपन्न रहे।

जब तक किसी देश की स्वास्थ्य सेवा दुरुस्त नहीं रहेगी तब तक देश भी बीमार रहेगा। हमारे देश में हजारों अस्पताल हैं, फिर भी हर साल न जाने कितने गरीब दवाइयां न खरीद पाने के कारण काल के ग्रास बन जाते हैं। देश में सर्वसुविधायुक्त अस्पताल स्थापित किए जाने चाहिए, जिससे सब लोग स्वस्थ एवं प्रसन्न रहकर देश के विकास में अपना योगदान दें। खेल हमेशा से भारत का पिछड़ा हुआ पहलू रहा है। लंदन ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन इसका उदाहरण है।

हमारे देश की रक्षा–व्यवस्था आंकड़ों के हिसाब से बहुत मजबूत है। फिर यह हमारी समझ से परे है कि देश में बार–बार बम धमाके क्यों हो रहे हैं? जरूरत है रक्षा–व्यवस्था दुरुस्त करने की। सेना को उन्नत हथियार प्रदान किए जाने चाहिए।

हमें भारत को एक आत्मनिर्भर देश बनाने का प्रयास करना चाहिए। जब तक भारत के नागरिकों को जीवन की मूलभूत सुविधाएं नहीं प्राप्त होंगी तब तक वह पिछड़ा ही रहेगा। जरूरत है इन सब योजनाओं को अमल में लाने की जिससे भारत फिर से विश्व का गुरु बन सके तथा इसकी ख्याति सारे जहां में फैली रहे।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है। ✿

अन्तःकरण से बनें कर्तव्यनिष्ठ

◈ vUoh{kk nhf{kr 11वीं
मानव भारती इंडिया
इन्टरनैशनल स्कूल
पंचशील पार्क, दिल्ली

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त हुई परंतु हम आज भी इस परतंत्रता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये हैं। आज भी हम अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को ही सर्वोतम माना जाता है। हमें अपनी इस आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना होगा क्योंकि हमारी संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, इश्वरोन्मुखी है। इसके लिए प्रत्येक भारतीय को स्वधर्म को पहचानना होगा, उसे अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा।

Okरत शब्द का अर्थ है 'भा'–अर्थात् ज्ञान और 'रत' का अर्थ है लगा हुआ। जिस देश का नाम ही यह संकेत कर रहा हो कि इस देश के वासी निरंतर ज्ञानार्जन में लगे रहते हैं उस देश को विश्व गुरु बनना सर्वथा उचित ही है। कहा भी गया है–''यथा नाम तथा गुण'' किसी भी व्यक्ति का जैसा नाम होता है उसी के अनुरूप उसमें गुण भी पाये जाते हैं।

यदि हम भारत देश के स्वर्णिम अतीत पर दृष्टिपात करें तो यह पायेंगे कि भारत में ऋषि–महर्षि तथा प्रखर चिंतकों की कभी कहीं भी नहीं रही। इन ऋषियों–महर्षियों और चिंतकों ने अपने ज्ञान एवं चिंतन की अजस्र धारा में भारत को समृद्ध बनाया। भारतीय चितंकों के चिंतन का ही यह सुफल था कि हमारे भारत में ही वेद–पुराण, उपनिषद, रामायण एवं कालिदास जैसे विश्व–प्रसिद्ध कवियों द्वारा लिखे काव्य एवं नाटक पूरे विश्व को सत्य एवं प्रशस्त मार्ग को दिखाने में समर्थ सिद्ध हुए।

वेदों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं विज्ञान की बातें समूचे विश्व को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। पूरे विश्व का सबसे पुराना ग्रंथ है तो

वह ऋग वेद ही है जिसमें विश्व के सभी मानवों के लिए सदोपदेश प्राप्त होते हैं जिनके द्वारा हम समूचे विश्व को एक सूत्र में बांधने में आज भी समर्थ हो सकते हैं तथा–यत्र विश्वम् भवत्येक नीडम्, का संदेश देकर विश्व मैत्री एवं सद्भावना का मनोरम् परिवेश भी बना सकते हैं।

हमारे इसी भारत देश में न्याय वेदान्त, मीमान्सा, व्याकरण, साहित्य, सांख्ययोग, जैन, बौद्ध चार्वाक आदि विभिन्न दर्शनों का उदय हुआ। इन दर्शनों के माध्यम से भारत ने समूचे विश्व को ज्ञान की विभिन्न विलक्षण धाराओं में अवगाहन करने का अवसर प्रदान किया।

भारत का ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्वेद, अंतरिक्ष विज्ञान जो भास्कराचार्य, आर्य भट्ट, वराहमिहिर, गौतम कणाद् आदि महापुरुषों के द्वारा गंभीर चिंतन के माध्यम से उच्च शिखर प्राप्त हुआ, जिसे समूचा विश्व भारत को विश्वगुरु मानने के लिए विवश था।

यह हमारे भारत का स्वर्णिम युग था। इस युग में हमें अपने देश के चिंतकों की मेधा एवं प्रज्ञा पर गर्व होता था। समूचा विश्व भारत एवं भारतवासियों का अनुकरण करने में गर्व का अनुभव करता था। इसकी परा–अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु इस पुण्य भूमि में शिष्य भाव से आते थे। इसी भूमि से ज्ञान दीप ले त्यागी, तपस्वी, विज्ञान साधक, आचार्य विदेशों में संस्कृति के अंधियारे को दूर करते थे।

इतना ही नहीं, इसके गार्गी, अपाला, विद्योत्तमा आदि महिलाएं भी ज्ञान के विषय में पुरुषों से किसी भी तरह कम नहीं थीं। कालान्तर में समय बदला, भीषण युद्ध हुए गृहयुद्ध भी व ब्रह्मा आक्रमण भी। फलतः भारत की क्षात्र शक्ति निर्बल हुई, बुद्धि शक्ति अरक्षित हुई, अर्थतंत्र ध्वस्त हुआ, लोकजीवन दमित व अस्त–व्यस्त हुआ। भारत का स्थूल कलेवर पराजित हुआ था, मन व आत्मा नहीं।

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त हुई परंतु हम आज भी इस परतंत्रता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये हैं। आज भी हम अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को ही

सर्वोतम माना जाता है। हमें अपनी इस आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना होगा क्योंकि हमारी संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, इश्वरोन्मुखी है। इसके लिए प्रत्येक भारतीय को स्वधर्म को पहचानना होगा, उसे अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा।

हमारी परमपरागत शिक्षा में गुरु–शिष्य का सम्बन्ध अत्यंत संवेदनशील तथा आत्मीय होता था। शिष्य के प्रति स्नेह गुरु का तथा गुरु के प्रति श्रद्धा शिष्य का आवश्यक गुण था क्योंकि गुरु से जीवन को सफल एवं विकासोन्मुख बनाने का ज्ञान मिलता था। चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अर्जुन, द्रोणाचार्य, एकलव्य आदि गुरु–शिष्य परम्परा के उदात्त उदाहरण हैं।

वर्तमान में भारत जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। आज हम आर्थिक–औद्योगिक, राजनीतिक, तकनीकी हर क्षेत्र में विकासोन्मुख हैं। आज हमारा भारत एक विश्व की मानी हुई राजनैतिक शक्ति बनकर उभर रहा है।

वैज्ञानिक आविष्कारों, अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य हो रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने गौरवमयी स्वर्णिम अतीत को स्मरण रखते हुए अपनी संस्कृति की लय में रहते हुए अपने कर्तव्यों का शुद्ध अंतःकरण से पालन करते रहें तो अवश्य ही हमारा देश पुनः अपने विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगा। ✿

हमारा भारत समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। जनसंख्या-विस्फोट उनमें से सर्वाधिक भीषण है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हर नागरिक को आवश्यक है कि वह अपने परिवार को सीमित रखे। एक से अधिक संतान को जन्म न दे तथा लड़का-लड़की को समान मानने से भी जनसंख्या नियंत्रित हो सकती है।

समस्याओं को उखाड़ फेंको

◈ **vk'kqrks"k ;kno** 8वीं
बालबाड़ी पब्लिक स्कूल
मोदी नगर, उत्तर प्रदेश

Òkरत वर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है जिसका भौगोलिक सौंदर्य अति शोभनीय है इसकी सभ्यता और संस्कृति राष्ट्रीय एकता की भावना जन्म–जन्मांतर से चली आ रही है और चलती रहेगी। हमारे देश को सकारात्मक गुण, सोच व ज्ञान के कारण जगद्गुरु तथा धन–वैभव के कारण 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था।

यदि आज के भारत की स्थिति की और ध्यान दिया जाए तो वह बिगड़ती जा रही है। भारत को जनसंख्या वृद्धि, असाक्षरता, बेरोजगारी, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद आदि जैसी समस्याओं ने घेर लिया है। हमारा देश उन्नति का पथ त्याग अवनति की राह पर बढ़ता जा रहा है।

अब वक्त आग गया है कि हम अपने देश को उन्नति का मार्गदर्शन कराएं। अपने देश में प्रगति करें। अपने देश को विकासशील देश से विकसित देश का रूप दें। भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए हमें अपने देश की समस्याओं को जड़ से निकाल कर फेंकना होगा व ज्ञान, सकारात्मक सोच, सरल उपायों के पौधे लगाने होंगे जिससे हमारा देश प्रगति की और अग्रसर हो।

हमारे देश की विविध समस्याएं और उचित समाधान इस प्रकार हैं :–

c<rh tul[;k% हमारा भारत समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। जनसंख्या–विस्फोट उनमें से सर्वाधिक भीषण है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए हर नागरिक को आवश्यक है कि वह अपने परिवार को सीमित रखे। एक से अधिक संतान को जन्म न दें तथा लड़का–लड़की को समान मानने से भी जनसंख्या नियंत्रित हो सकती है।

vlk{kjrk% जहां विश्व इतनी तरक्की कर रहा है वहां हमारा भारत असाक्षरता के दलदल में फंसा हुआ है। असाक्षरता का प्रमुख कारण जनसंख्या, गरीबी व बेरोजगारी है। हमें इसके लिए जागरूकता बढ़ानी होगी जिससे कि भारत के सभी बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर बेराजगारी, गरीबी जैसी समस्याओं का शिकार न बनें। हमें हर गांव में सरकारी विद्यालय बनवाने चाहिए व शिक्षा के श्रेष्ठतम संस्थान बनाकर शिक्षा का सही ढ़ंग से प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

cjkstxkjh% बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या। लोगों के पास हाथ है, पर काम नहीं है, प्रशिक्षण है, पर नौकरी नहीं है। अगर हमें अपने देश से बेरोजगारी को कम करना है तो फिर इसके लिए हमें व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, रोजगार के नए अवसरों के लिए हमें व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू करना होगा।

Ò"Vkpkj% आज सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार की जड़ें और गहरी होती जा रही हैं। भ्रष्टाचार मनुष्यों की बदनीयती के कारण बढ़ा है और उसमें सुधार करने से ही यह ठीक होगा। प्रशासन को स्वयं शुद्ध रहकर नियमों का कठोरता से पालन करना होगा। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए ताकि शेष सबको बाध्य होना पड़े। समाज के नियमों का पालन करने के लिए परिवार तथा विद्यालय में संस्कार दिए जाने चाहिए।

ekfld vk;dj% हमारे भारत के अधिकारी, उद्योगपति मासिक आयकर को छिपाते हैं। यदि वे 80 प्रतिशत कमाते है तो 25 प्रतिशत दिखाते हैं। बाकि के बचे 55 प्रतिशत की वे चोरी करते हैं, वे अपना पैसा सरकार से छिपाते हैं। लेकिन ऐसा कब तक चलेगा। हमें लोगों को इसके प्रति जागरूक करना होगा और सरकार को भी सचेत होना पड़ेगा जिससे कि राष्ट्र में उन्नति हो सके। क्योंकि राष्ट्र में कोई भी प्रगति होती है तो वह आयकर की मदद से ही की जाती है।

Ñf"k o çkÑfrd lalk/ku% हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अधिक उत्पादन व अच्छी फसल के लिए हमें उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग, अत्याधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग, सरकार द्वारा कृषि उपजों का मूल्य निर्धारण करना, सिंचाई सुविधाओं का विकास कराने आदि जैसी सुख–सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए। हमें भारत के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करना चाहिए, जिससे की हमारी पीढ़ियों को हानि न हो पाए और वे अपना व अपने बच्चों का पालन–पोषण अच्छे से कर पाएं।

xjhch ,oa vkradokn% हमारे देश में गरीबी के मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी व असाक्षरता है। इससे देश में अशांति, भ्रष्टाचार, चोरी, हिंसा का जन्म होता है। हमें गरीबी को दूर करने के लिए घोर परिश्रम, संघर्ष और प्रगति की चाह, सुनियोजित योजनाएं बनानी चाहिए। गरीबी के कारण हमारे देश में आतंकवाद व हिंसा जैसी भावनाओं ने जन्म ले लिया है। हमें आतंकवाद को अपने देश से मिटाना होगा। इसके लिए हमें हिम्मत ही नहीं, उसे कुचलने के लिए सावधानी, कुशलता, और तत्परता भी चाहिए। भारत को कुछ ठोस उपाय खोजने चाहिए, तभी एक दिन वह विश्व, का आतंकमुक्त सुशांत देश बन सकेगा।

f'k{kk ç.kkyh esa cnyko% हमें भारत की शिक्षा को पूर्ण रूप से विकसित करना होगा, हमें एकरूपता लाने, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को जनान्दोलन बनाने, सभी को शिक्षा सुलभ कराने, प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय जैसे आधुनिक विद्यालयों की स्थापना करने, शिक्षा को

व्यवसायपरक बनाने, अखिल भारतीय प्रौद्योगिक शिक्षा परिषद को सुदृढ़ करने तथा खेलकूद, शारीरिक शिक्षा योग को बढ़ावा देने एवं सक्षम मूल्यांकन की प्रतिक्रिया अपनाने के प्रयास शामिल हैं।

यदि हम उपर्युक्त सुझावों का उचित ढंग से पालन करेंगे तभी भारत पुनः विश्व गुरु बनने में समर्थ हो पाएगा। हमारा देश का यह नारा 'विश्व विजयी तिरंगा प्यारा, झंड़ा ऊंचा रहे हमारा' फिर से हर गांव, कस्बे, शहर व प्रदेश में गूंज उठेगा। ✿

मिटाना ही होगा आतंकवाद का नासूर

साम्प्रदायिक एकता का स्वप्न अभी साकार नहीं हो पाया है। विचारों में मतभेद और पूजा पद्धतियों में विविधता हमारे देश में नई बात नहीं है किंतु इसके कारण खून-खराबा जरूर नई चीज है। इन सब चीजों से ऊपर है मानवता का उदात्त दृष्टिकोण। मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर संप्रदाय तथा सांप्रदायिकता से ऊपर उठा जा सकता है। राष्ट्र का प्रबल भाव भी इसमें सहायक होगा।

◈ Òkouk 10वीं
मोतीराम मैमोरियल गर्ल्स सी.सै. स्कूल
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

Òkरत देश हमारे लिए स्वर्ग के समान सुंदर है। इसने हमें जन्म दिया। इसके अन्न–जल से हमारा पालन–पोषण हुआ, इस देश का नाम भारतवर्ष है। आधुनिक भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ है। उत्तर में हिमालय का पर्वत भारत माता के सिर पर हिममुकुट के समान सुशोभित है तथा दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरणों को निरंतर धोता है।

भारत में प्रायः सभी धर्मों के लोग परस्पर मिल–जुल कर रहते हैं। यहां सभी धर्मावलंबियों को अपनी–अपनी उपासना पद्धति तथा सामाजिक व्यवस्था का अनुसरण करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। भारत का आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है जिसका अर्थ है–सारा संसार एक कुटुंब के समान है।

प्राकृतिक सुंदरता की दृष्टि से भारत एक अद्भुत देश है। यहां हिमालय का पर्वतीय प्रदेश है, गंगा–यमुना का समतल मैदान है, पर्वत एवं समतल मिश्रित दक्कन पठार है, रेगिस्तान राजस्थान का। इस प्रकार विभिन्न

प्रकार के भूमि भाग यहां विद्यमान हैं और विभिन्न प्रकार की जलवायु पाई जाती है। यह वह देश है, जहां समय–समय पर छह ऋतुएं आती हैं और अपनी–अपनी विशेषताओं से इस देश को अनुग्रहीत करती हैं।

हमें अपने देश में सभी नागरिकों को सभी अन्य सुविधाएं बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध करानी हैं। स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना देश का कर्तव्य है। हमें अपने व्यवहार में पारदर्शिता लानी होगी, हमारा कर्तव्य एक खुली किताब की तरह हो, जिसमें कोई छल–कपट न हो।

देश व्यक्तियों से मिलकर बना है, जब व्यक्ति का नैतिक पतन हो जाता है। तब देश का भी नैतिक पतन अवश्यम्भावी है। वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि नेताओं और अफसरशाहों का नैतिक पतन पराकाष्ठा पर पहुंच गया है। इससे हमारे देश को विश्व में कितना अपमान झेलना पड़ा है, इसे ये लोग नहीं समझते। आज कोई भी नेता जनता के विश्वास के योग्य नहीं रह गया है। उन पर से लोगों का विश्वास ही उठ गया है। यह स्थिति एक लोकतांत्रिक देश के भविष्य के लिए बड़ी चिंताजनक है।

पहले नेता देश को सर्वोपरि समझा करते थे, जबकि आजकल उनका स्वार्थ ही प्रमुख रह गया है। देश के सम्मान की रक्षा के लिए नैतिकता को पुनः स्थापित करना होगा। इसे समाज में मान्यता देनी होगी। वर्तमान समय में अनेक राजनेताओं का कितना नैतिक पतन हो गया है उनके घोटालों से यह सामने आ रहा है। शर्मनाक घटनाओं से देश की छवि बिगड़ती है। देश के नागरिकों का मनोबल गिरता है। हमें देश के नैतिक पतन को रोकना ही होगा।

वर्तमान समय में सर्वत्र अनुशासनहीनता दृष्टिगोचर होती है, शिक्षण संस्थाएं अपनी पवित्रता खोती जा रही हैं। देश की अन्य समस्याओं के साथ साथ छात्र वर्ग की अनुशासनहीनता भी एक विकट समस्या बनती जा रही है, दिन–प्रतिदिन की हड़तालें, स्कूल–कॉलेज के फर्नीचरों को नष्ट करना, बसों को जलाना, शिक्षकों के प्रति असम्मान प्रदर्शित करना, अनुशासनहीनता नहीं तो और क्या है?

भारतीय संस्कृति में सदैव से बहुजन हिताय को महत्व दिया जाता रहा है। परोपकार शब्द की रचना भी पर+उपकार से हुई है अर्थात दूसरों की भलाई करना। परोपकार में स्वार्थ का दंश नहीं रहता। दूसरों की निःस्वार्थ सेवा ही परोपकार की श्रेणी में आती है। जिस कार्य में स्वार्थ छिपा हो, उसे परोपकार नहीं कहा जा सकता है।

भारत इस समय गरीबी की समस्या से उलझा हुआ है। वह गत 40–50 वर्षों से इस समस्या से मुक्त होने का प्रयास भी कर रहा है। आर्थिक स्वतन्त्रता पाना भारत का लक्ष्य रहा है। प्रयास कर सुनियोजित ढ़ंग से अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है। प्रत्येक देशवासी को रोजगार, वस्त्र, भोजन एवं आवास जुटाने का लक्ष्य पूरा होते ही गरीबी छूमंतर हो जाएगी।

भारत सरकार शिक्षा–पद्धति में मूलभूत परिवर्तन करने का प्रयास कर रही है। नई नीति लागू करने की तैयारियां जोर–शोर से की जा रही है। नवोदय विद्यालय की जो स्थापना अब की जाती है उनका परिणाम सुखद तो 21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिलना शुरू हो गया है। इन विद्यालयों से प्रतिभावान छात्र देश की काया पलटने में पूर्णतः समर्थ होंगे।

भारत में औद्योगिक विकास की दर भी अभी तक कम है, इस दिशा में प्रयत्न जारी है। हमारे उद्योग पूरी गति के साथ उत्पादन कर सकेंगे, उद्योगों की नई इकाइयां स्थापित की जा रही हैं आशा की जाती है कि उद्योगों का जाल बिछ जाएगा और हम विश्व–बाजार की प्रतिस्पर्धा में टिक सकेंगे।

भारत की एक विशेषता है आपस में भाईचारे की भावना रखना। हमारी संस्कृति में आपसी समझदारी को विशेष महत्व दिया गया है। पाश्चात्य भौतिकता ने अपने प्रभाव स्वरूप इस भाईचारे में सेंध लगाने की शुरूआत अवश्य की है पर यह हमारी मजबूत नींव को तोड़ने में सफल नहीं है। अब साम्प्रदायिकता के नाम पर लोगों को भड़काने की कोशिश की जाती है। अब हम इस साम्प्रदायिकता के बारे में विचार कर लें।

साम्प्रदायिक एकता का स्वप्न अभी साकार नहीं हो पाया है। विचारों में मतभेद और पूजा पद्धतियों में विविधता हमारे देश में नई बात नहीं है किंतु इसके कारण खून–खराबा जरूर नई चीज है। इन सब चीजों से ऊपर है मानवता का उदान्त दृष्टिकोण। मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर संप्रदाय तथा सांप्रदायिकता से ऊपर उठा जा सकता है। राष्ट्र का प्रबल भाव भी इसमें सहायक होगा।

आज विश्व आंतकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आतंकवाद का सबसे क्रूर हमला 2001 में अमेरिका पर हुआ जिसने सारे विश्व को हिलाकर रख दिया। इसकी परिणति अफगानिस्तान के युद्ध से शुरू हुई। इसी घटना के फलस्वरूप अमेरिका को आतंकवाद का घिनौना चेहरा वास्तविक रूप में नजर आया।

आतंकवाद के कारण देश की स्थिति का पता चलेगा। आंतकवाद की समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है, तदर्थवाद से काम चलने वाला नहीं है, आंतकवादी संगठनों को निर्दयतापूर्वक कुचला जाना आवश्यक है। इसके साथ विभिन्न संगठन स्तर पर अनेक बार शांति वार्ताएं हो चुकी हैं जिनका परिणाम शून्य है। भविष्य में भी इनसे कुछ विशेष उम्मीद नहीं की जा सकती है। अतः इस प्रकार समस्या का समाधान खोजना अंधेरे में भटकना है।

अधिकांश भारतीय चाहते हैं कि हमारी सेनाओं को गुलाम कश्मीर और पाकिस्तान में चल रहे प्रशिक्षण शिविरों पर हमला कर नष्ट कर देना चाहिए। आंतकवादी गतिविधियों के प्रति किसी भी प्रकार का नम्र रुख अपनाना आत्महत्या के समान होगा। आंतकवाद के नासूर का इलाज करना ही होगा। इस काम के लिए हमें दृढ़संकल्प की आवश्यकता है। आतंकवाद देश की प्रगति की राह में सबसे बड़ा रोड़ा है। इसे नष्ट कर भारत को विश्व गुरु बनाना हमारा परम कर्तव्य है। ✿

राष्ट्र की पहचान उसकी जनता और सरकार से होती है। देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा। हमें एक सफल, ईमानदार और जनहित के बारे में सोचने वाली सरकार बनानी होगी। भ्रष्ट से शिष्ट नेता बनाने होंगे। हमारे देश की सरकार को कर्तव्यनिष्ठ और लक्ष्य के प्रति समर्पित बनाना पड़ेगा। हर नागरिक को इसके लिए जागरूक होना आवश्यक है।

प्रत्येक नागरिक बने जागरूक

◈ T;kfr vxoky 11वीं
भवन्स बी.पी. विद्या मन्दिर
श्रीकृष्णा नगर, नागपुर, महाराष्ट्र

Òkरत वह देश है जिसने समस्त विश्व को सभ्यता और संस्कृति से अवगत कराया, जिसने सबको एकता और वसुधैव कुटुम्बकम की शिक्षा दी। इसके समान गौरवन्वित और प्रतिष्ठित देश शायद ही कोई और होगा। भारत से हर कला का उद्भब और विकास हुआ है। शून्य से लेकर कामसूत्र तक हमारे पूर्वजों की देन है। शल्यक्रिया, चिकित्सा और गणित की उलझनें भी हमने ही सुलझाई हैं।

दुनिया को हमने तक्षशिला और नालंदा दिए और आर्यभट्ट, बराहमिहिर, चाणक्य और शिक्षावाद तब सारी दुनिया के लिए कौतूहल बन गये थे। वह भारत देश ही है जहां प्रकृति ने धन, शक्ति और सौंदर्य का दान मुक्तहस्ता होकर किया है या दूसरे शब्दों में जिसे प्रकृति ने बनाया ही इसलिए हो कि उसे देखकर स्वर्ग की कल्पना साकार की जा सके।

भारत विश्वगुरु था, इसकी परा–अपरा विद्या को प्राप्त करने के लिए धरती के कोने–कोने से जिज्ञासु–मुमुक्षु इस पुण्य भूमि में शिष्य भाव से आते थे। इसी भूमि से ज्ञान दीप ले त्यागी, तपस्वी, विद्वान, साधक,

आचार्य विदेशों में जाते और ज्ञान–प्रकाश से वहां की संस्कृति के अंधियारे को दूर करते थे। कालांतर में भीष्ण युद्ध हुए, गृहयुद्ध भी व बाह्य आक्रमण भी। फलतः भारत की क्षात्र शक्ति निर्बल हुई, बुद्धि शक्ति अरक्षित हुई, अर्थतंत्र ध्वस्त हुआ, लोकजीवन दमित व अस्त–व्यस्त हुआ। भारत का स्थूल कलेवर पराजित हुआ था, मन व आत्मा नहीं।

दीर्घ परतंत्रता के पश्चात प्राप्त तथाकथित स्वतंत्रता भी दिखावे की सिद्ध हुई। आंतरिक परतंत्रता से मुक्त होना ही होगा, क्योंकि इस संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, ईश्वरोन्मुखी है। किंतु यह अपनी स्वदिशा में गतिमान कैसे हो? कैसे यह विश्वगुरु के पद पर विराजमान हो? इसके लिए प्रत्येक भारतीय को अपने स्वधर्म को पहचानना होगा। उसे अपनी संस्कृति से एक लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा। उसे स्वकर्म से उसे जगदगुरु की शिष्य भाव से अर्चना करनी होगी। यों शिष्य भाव की अनगिनत धाराएं मिलकर एक प्रबल पवित्र प्रवाह बनेगा और तब फिर यह संस्कृति विश्वगुरु रूपिणी गंगा होगी।

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों की खोज कर उनका सर्वोत्तम उपयोग किस तरह किया जा सकता है यह ज्ञान होना आवश्यक है। जागरूकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही सकता है। अभी तक हमने देश के असीम भंडार को पहचाना ही नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि अपनी इस संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक–ठीक जानकारी हम प्राप्त करें।

हमारे भारतवर्ष में जहां सच्चाई और ईमानदारी लोगों के आदर्श बनते हैं, वहीं दूसरी और छल, कपट और भ्रष्टाचार का भी बोलबाला है। हर देश की ताकत उसकी युवा ही तो होते हैं। यदि हमने अपनी युवा पीढी को हर क्षेत्र में चाहे वह विज्ञान हो या साहित्य, कृषि हो या वायु, भू हो या जल, शिश्टाचार हो या आदर्श, गुण एवं विचार में सक्षम बना दिया तो अवश्य ही हमारा देश पुनः उस प्रगति की राह पर चल पड़ेगा और बहुत जल्द सारे देशों को पीछे छोड़ दिया।

हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद बन सकती है हमारी प्राकृतिक संपदा

के रूप में उपलब्ध खनिज पदार्थ और कच्ची धातुओं की उपलब्धता। स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार, हमारे देश की खानें दुर्लभ भंडार के रूप में हमारे पास हैं। इन्हें खोजकर और परिश्रम से निकालकर विश्व के सामने जितना अधिक प्रस्तुत किया जाएगा हमारी समृद्धि उतनी ही बढ़ेगी।

हमारे देश की नदियां, और समुद्री तट काफी समृद्ध हैं, इनके सहयोग से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन विद्युत की होने वाली कमी से लड़ा जा सकता है। हमारे देश में निरंतर प्रवाहित होने वाले वायु के वेग की पवन चक्कियों से भी विद्युत बनाई जाती है। हमारे देश में सूर्य का प्रकाश भी 6 से 8 माह तक भरपूर रहता है। ऊर्जा के अन्य वैकल्पिक साधनों को ढूंढ कर उनके उपयोग के रास्ते खोजने और वैज्ञानिक खोजों को जारी रखने की आवश्यकता है।

भारतीय युवाओं की मांग हर देश को होती है। यहां के युवाओं में ज्ञान और समझदारी का जो समावेश है वह पूरे विश्व में शायद ही किसी और देश के युवाओं के पास हो। विदेशों में भारतीय युवाओं की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक धाक जमी हुई है। देश में आज मोबइल–फोन, इंटरनेट, ई–मेल आदि गांवों में भी पहुंच चुके हैं। गांवों–गांवों में घर–घर में इनका और अधिक प्रचार–प्रसार हो यह आवश्यक है।

कहने को तो हम सब अपने को एक साम्प्रदायिक सद्भाव के आदर्श में ढला देश कहते हैं, पर सच्चाई तो कुछ और ही है। सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद भी ऊँच–नीच, छुआछूत, अमीर–गरीब जैसी भावनाएं लोगों के हृदय में पलती हैं। हमारे देश को उन्नत होने के लिए सच्चे हृदय से इन रेखाओं को मिटाना होगा कि हम सच में एक आदर्श देश हैं, साम्प्रदायिकता का सर्व श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

राष्ट्र की पहचान उसकी जनता और सरकार से होती है। देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा। हमें एक सफल, ईमानदार और जनहित के बारे में सोचने वाली सरकार बनानी होगी। भ्रष्ट से शिष्ट नेता बनाने होंगे। हमारे देश की सरकार

को कर्तव्यनिष्ठ और लक्ष्य के प्रति समर्पित बनाना पड़ेगा। हर नागरिक को इसके लिए जागरूक होना आवश्यक है।

विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए भी धर्म को सम्प्रदायों से अलग रखना जानता है और ये मतान्तर हमारे देश के नागरिकों की बौद्धिक व्यापकता को दर्शाते हैं। अध्यात्म के भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। अध्यात्म की खोज में विश्व के अन्य देश समृद्धि और विज्ञान के शिखर पर पहुंचकर भी अशांत और उद्विग्न है।

आवश्यकता इस बात की है कि भौतिकता के बोझ तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने, जीवन के समग्र अस्तित्व को पहचानने और विकसित करने की कला हमारे देश को पूरे विश्व को बताना है और यही कला हमारे देश के सही अर्थों में विश्वगुरु बनाएगी।

इसके लिए हमें क्षुद्र स्वार्थ और अहं को त्यागकर सजग, जागरूक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नए सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा और विश्व के सामने अपने विश्वगुरु के खिताब को पुनः सिद्ध कर दिखाना होगा। ✿

आज भारत विश्व में सबसे युवा आबादी वाला देश है, जहां आज भी अपार सम्भावनाएं भरी पड़ी हैं। हम अपने गौरवशाली अतीत की तरह अपने भविष्य को भी गौरवमयी बना सकते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, अध्यापकों व मैनेजरों की प्रतिभा विश्व मान चुका है। लेकिन जगत्गुरु का पद पाने के लिए हमें अनेक समस्याओं से जूझ रहे विश्व-मानव को राह सुझानी होगी।

भौतिक के साथ आत्मिक उन्नति जरूरी

◈ **euu Ike** 7वीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार–फेज–।।, दिल्ली

Òkरतीय संस्कृति ही मानव संस्कृति है। उसमें मानवता के सभी सद्गुणों को भली प्रकार प्राप्त करने वाले सभी तत्व मौजूद हैं। कश्मीर में पैदा होने वाली केशर 'कश्मीरी केशर' अपनी जन्म भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका यह अर्थ नहीं है कि उसका उपयोग केवल कश्मीर के निवासियों तक ही सीमित है। ठीक उसी प्रकार भारतीय संस्कृति भी भारत में पैदा हुई संस्कृति है। किन्तु इसमें विश्व संस्कृति बनने के गुण हैं। इसमें सारे विश्व के मानवों को सन्मार्ग में प्रेरित करने की क्षमता कूट–कूट कर भरी है।

मानव के साथ–साथ सभी प्राणी और पदार्थ मूल रूप में प्रकृति से ही पैदा होते हैं। संस्कृति के द्वारा वे उच्च स्तर को प्राप्त होते हैं। यदि वे संस्कृति की ओर न बढ़ कर निम्न स्तर की ओर जाने लगते हैं तो उनमें विकृति आ जाती है। इस प्रकार प्रकृति से ऊपर उठने की प्रक्रिया को संस्कृति कहते हैं तथा प्रकृति से नीचे की और गिरने का नाम ही विकृति है। आज मानव समाज संस्कृति के अभाव में विकृति की ओर बढ़ रहा है।

जिस प्रकार पेड़–पौधों को काट–छांट कर सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है, उसी प्रकार मनुष्य की उच्छृंखल एवं अवांछनीय मनोवृत्तियों को सुसंस्कारों से नियंत्रित करके सभ्य सुसंस्कृत एवं समाजोपयोगी बनाया जा सकता है।

वेदों में कहा गया है–''सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'' अर्थात् यही प्रथम और विश्वव्यापी संस्कृति है। भारतीय ऋषियों ने केवल मेरे–तेरे तक सीमित न रह कर पूरी वसुधा को एक परिवार के रूप में माना है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' इनका आदर्श रहा है। यहां धरती को माता तथा मनुष्य मात्र को उसका पुत्र कहा गया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' वैदिक काल से ही यहां के ऋषि विश्व के कोने–कोने में भारतीय संस्कृति को प्रचारित एवं प्रसारित करते रहे हैं। आज भी अनेक देशों में इस बात के ठोस प्रमाण मिलते हैं। हमारी मान्यता रही हैः

माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
भ्रातराः मनुजाः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयः।।

अर्थात् पर्वतों को धारण करने वाली पृथ्वी मां पार्वती मेरी मां है, महाकाल देवाधिदेव शंकर मेरे पिता हैं, सभी मनुष्य मेरे भाई हैं तथा पूरा ब्रह्माण्ड मेरा स्वदेश है।

Òkjrh; lLÑfr dh fo'ks"krk% भारतीय संस्कृति बडी उदात्त है। अपने देश में जितनी भी विचारधाराएं रही हैं उनको स्वीकारना भारतीय संस्कृति की अपनी पहचान है। बाहर से आने वाली अनेक विचारधाराओं को भी भारतीय संस्कृति अपने में सहजता से मिलाती रही है। अनेकता में एकता का संदेश भारतीय संस्कृति युगों–युगों से देती रही है। इसलिए सभी विचारों, मतों को फलने–फूलने का यहां भरपूर अवसर मिला है।

Òkjrh; lLÑfr dk foLrkj% भारत के लोकसेवी संतों ने अपनी समाज सुधार की गतिविधियां स्वदेश तक ही सीमित नहीं रखीं। उन्होंने सारे विश्व को अपना घर माना और धरती वासियों को अपना परिवार। पिछड़ेपन से जूझने के लिए वे विकट से विकट और दुर्गम से दुर्गम क्षेत्रों में गए। यदि वापस लौटना आवश्यक नहीं लगा तो वे वहीं डेरा डाल कर बस गये।

महामानवों की आत्मीयता किसी स्थान विशेष तक सीमित नहीं रहती है। इस परिष्कृत दृष्टिकोण को लेकर भारतीय धर्म प्रचारक और लोकसेवी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचे। उन्होंने वहां की शासन प्रक्रिया को दिशा दी। उसे सुव्यवस्थित किया। जहां सम्पत्ति के अभाव में दरिद्रता व्याप्त थी, वहां कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग आदि सुव्यवस्थाएं बनाईं। उस क्षेत्र की अशिक्षा, अज्ञान एवं अभावादि को मिटाकर उन्हें सुसंस्कृत बनाया। इसलिए उन्हें जगतगुरु का सम्मान मिला। यह उनकी जनसेवा साधना थी। भारत के ऐसे लोकसेवी संतों एवं साधकों का बहुमुखी लाभ संसार की जनता ने उठाया।

भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। देने वालों को देव तथा लेते रहने वालों को दैत्य कहते हैं। प्राचीन भारत में जहां अन्न, धन और विविध भौतिक सम्पत्ति के भण्डार थे, वहीं यहां दिव्य नर–रत्नों के रूप में असंख्य देव–मानवों की भी कमी नहीं रही, जिनके गौरवशाली अस्तित्व से भारत माता की कीर्ति ध्वजा दशों दिशाओं में फहर रही थी। उन्हीं के यश से भारत की गौरव–गरिमा के सामने विश्व नत मस्तक था।

आज भारत विश्व में सबसे युवा आबादी वाला देश है, जहां आज भी अपार सम्भावनाएं भरी पड़ी हैं। हम अपने गौरवशाली अतीत की तरह अपने भविष्य को भी गौरवमयी बना सकते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, अध्यापकों व मैनेजरों की प्रतिभा विश्व मान चुका है। लेकिन जगत्गुरु का पद पाने के लिए हमें अनेक समस्याओं से जूझ रहे विश्व–मानव को राह सुझानी होगी। हमारी नैतिक उच्चता, एवं सांस्कृतिक विरासत ही इसमें हमारा मार्ग प्रशस्त करेगी।

भारतीय संस्कृति के उस दिव्य स्वरूप को पुनर्जीवित करने के लिए संस्कार परम्परा को फिर से प्रचारित एवं प्रसारित करना होगा। प्रत्येक भारतीय को संकल्प लेना होगा कि वह भौतिक उन्नति के साथ–साथ आत्मिक उन्नति के लिए प्रयास करेगा व 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धान्त को आत्मसात करेगा। इसी से भारत पुनः जगद्गुरु के अपने खोये पद को प्राप्त कर सकेगा। ✿

प्रत्येक क्षेत्र में हो परिवर्तन

◈ : ch jkor 11वीं
रेनबो पब्लिक स्कूल
चौरास, श्रीनगर गढ़वाल
उत्तराखण्ड

हमारे देश में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ऐसे में धार्मिक एवं सांमप्रदायिक झगड़े होते रहते हैं। भारत को अगर विश्व गुरु बनाना है तो हमें भेदभाव, झगड़े, छुआ-छूत, ऊंच-नीच जैसी सभी कुरीतियां मिटानी होंगी और मानवता का समान भाव रखना होगा जिससे हमारा देश एकता के सूत्र में बंध जाए।

Loामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश है जिसे हम पूण्यभूमि कह सकते हैं, यदि कोई ऐसा स्थान है जहां पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्मफल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि कोई ऐसा स्थान है जहां भगवान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखने वाले जीव मात्र को आना होगा, यदि कोई ऐसा देश है जहां मानव जाति के भीतर क्षमा, दया, शुद्धता, ईमानदारी, भोलापना आदि सद्वृत्तियों का अपेक्षाकृत अधिक विकास हुआ है तो मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि वह हमारी मातृभूमि भारतवर्ष है। इसीलिए हम गर्व से कह सकते हैं सम्पूर्ण देशों से अधिक जिस देश का उत्कर्ष है, वह देश मेरा देश है वह देश भारतवर्ष है।

जब मानव सभ्यता का पूर्ण विकास भी नहीं हुआ था तब भारत के ऋषियों ने गहन ज्ञान पर आधारित वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि ग्रन्थों की रचना कर डाली थी। उन्होंने घने वनों में, नदी के तट पर या पर्वतों की गुफाओं में ज्ञानार्जन करते हुए कन्दमूल फल खाकर सरल एवं सादा जीवन व्यतीत करते हुए मनुष्य के मन को ज्ञान के प्रकाश से

आलोकित किया था। हर क्षेत्र में भारत की उन्नति उल्लेखनीय थी। इसी कारण भारत सोने की चिड़िया कहलाता था।

प्राचीन विश्व के अनेक देश यहां की संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान, आर्थिक उन्नति के आधार पर इस देश का लोहा मानते थे और किसी न किसी बहाने यहां आने का प्रयत्न करते थे। यहां के विज्ञान, ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, योग, चिकित्सा शास्त्र, अर्थशास्त्र–गणित आदि विषयों के भारतीय विद्वानों ने इस पावन धरती पर जन्म लिया था। यहां की संस्कृति, ऋषि, गुरुकुल परम्परा, राजनैतिक व्यवस्थाएं सभी कुछ महान थीं जिस कारण भारत विश्व गुरु कहलाया।

हमारा देश एक विशाल देश हैं। यहां अनेक राज्य, अनेक धर्म, भाषाएं, वेशभूषा, खानपान, रहन–सहन, विविध जलवायु, मौसम आदि भिन्नताएं होते हुए भी देश एकता के सूत्र में खड़ा है। जिस देश में राजनैतिक ज्ञान देने वाले चाणक्य, चन्द्रगुप्त, पृथ्वीराज चौहान, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, राम–कृष्ण आदि महापुरुषों ने जन्म लेकर संसार को ज्ञान दिया, वही देश आज समय परिवर्तन के कारण अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। अतीत में इस देश में बाहरी ताकतों द्वारा लूटपाट की गई तथा देश लम्बे समय तक विदेशियों के हाथों पराधीन रहा।

इस देश की अतुल धन सम्पत्ति विदेशों में चली गई। साथ ही साथ इस देश की संस्कृति पर भी विदेशी संस्कृति की छाया पड़ गई। आजादी के बाद भारत में गणतंत्र की स्थापना हुई। यद्यपि अनेक क्षेत्रों में विकास हुआ किन्तु साथ ही भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण सम्बन्धी समस्याओं के कारण देश की जनता का जीना दूभर हो गया है। वह देश जो कभी हर क्षेत्र में सम्पन्न था आज भुखमरी, गरीबी, महंगाई, प्रदूषण आदि समस्याओं के कारण अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। देश आज अपनी ताकत को भूल गया है। जरूरत है इस देश को जगाने की। आइए, इस देश को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु विचार करें।

iu% fo'ox# cuu dh lEÒkouk,% समय परिवर्तनशील है। भारत का गौरवशाली इतिहास इस बात का गवा है कि यहां की भूमि में

महान व्यक्तियों ने जन्म लिया है। यद्यपि आज देश हर तरफ से अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है तथापि इस देश की चहुंमुखी उन्नति की पूर्ण सम्भावनाएं आज भी विद्यमान हैं। हमारी विचारधारा आशावादी है। हमारी मातृभमि दर्शन, धर्म, नीति, विज्ञान, मधुरता, कोमलता अथवा मानव जाति के प्रति अटूट प्रेमरूपी सद्‌गुणों को जन्म देने वाली है। ये समस्त चीजें आज भी भारत में विद्यमान हैं। विश्व के उच्च देशों में भारत अभी भी श्रेष्ठ हो सकता है।

आज अगर देश का मानव कल्पना करता है तो उसके पीछे निम्न क्षेत्रों में इस देश के चिन्तकों को सोचकर उपाय करने चाहिए। आज के युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। मनुष्य के चारित्रिक विकास, ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि सद्‌गुणों के विकास के लिए देश की शिक्षा व्यवस्था को अतीत की शिक्षा व्यवस्था की तरह उन्नत बनाना होगा। पश्चिमी संस्कृति को छोड़कर अपनी संस्कृति को अधिक से अधिक अपनाना होगा जिससे देश के हर नागरिक में मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना हो सके।

;kx rFkk vk;qosn d {k= e% हमारी ऋषि संस्कृति का मूल योग व आयुर्वेद है। स्वस्थ ज्ञान के लिए स्वस्थ शरीर परम आवश्यक है। अतः शिक्षा में योग व आयुर्वेद को शामिल कर देश के प्रत्येक नागरिक को निरोग बनाया जा सकता है।

Ñf"k d {k= e% हमारा देश कृषि प्रधान देश है। बहुत अधिक प्रयासों के बाद भी हम अपनी कृषि को पूर्णतः वैज्ञानिक आधार नहीं दे पाए हैं। रासायनिक पदार्थों का निरंतर उपयोग करके हमने अपने फसलों की पैदावार एक समय के लिए तो बड़ा दी परंतु अब हमें उससे कई समस्याओं का समाना भी करना पड़ रहा है। अब उपाय यही है कि हम जैविक खेती शुरू करें और मिट्‌टी की उर्वरक क्षमता बढ़ाकर पैदावार बढ़ाएं।

jk"Vªh; ,drk% हमारे देश में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। ऐसे में धार्मिक एवं सांप्रदायिक झगड़े होते रहते हैं। भारत को अगर विश्व गुरु बनाना है तो हमें भेदभाव, झगड़े, छुआछूत, ऊंच–नीच जैसी सभी

कुरीतियां मिटानी होंगी और मानवता का समान भाव रखना होगा जिससे हमारा देश एकता के सूत्र में बंध जाए। साथ ही हमें स्वदेशी वस्तुओं एवं मातृभाषा हिन्दी को उचित सम्मान देना पड़ेगा।

0;oLFkk ifjorZu% भारत में हर क्षेत्र में व्यवस्था परिवर्तन की आवश्यकता है। राजनैतिक क्षेत्र में स्वस्थ, ईमानदार, कर्मठ युवकों को चुनकर प्रतिनिधि बनाना होगा। भ्रष्टाचार मिटाना होगा। विदेशों में जमा काला धन भारत वापस लाना होगा। भ्रष्टाचार मिटाने हेतु लोकपाल जैसे कानून बनाने होंगे तथा देश को भ्रष्टाचार की चिंता से दूर ले जाना होगा। साथ ही विकास के हर क्षेत्र में उन्नति करनी होगी।

आचार्य चाणक्य ने कहा था, ''जिस देश का राजा महलों में सोता है उस देश की जनता झोपड़ियों में सोती है और जिस देश का राजा झोपड़ियों में सोता है, उस देश की जनता महलों में सोती है।'' हमारे देश के राजनैतिज्ञ अगर इस शिक्षा को ग्रहण कर लें तो निश्चित रूप से हमारे राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन आ सकता है तथा देश भ्रष्टाचार मुक्त होकर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

अतः यह मात्र कल्पना नहीं है। यदि देश का हर नागरिक संसाधनों का उचित प्रयोग करते हुए विकास के कार्यों में जुट जाए, साथ ही साथ योग्य नेतृत्व देश को मिल जाए तो हर क्षेत्र में परिवर्तन आ जाएगा। वह दिन दूर नहीं जब हम अपने आप को संसार के अन्य विकसित देशों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ पाएंगे तथा भारत को पुनः विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक पायेगा। ✿

सौर ऊर्जा पर दें ध्यान

◈ jkf'k tu 11वीं
वर्द्धमान शिक्षा मंदिर
पदमचन्द मार्ग, दरियागंज, दिल्ली

अभी तक हमने अपने देश और देश के अकूत भंडार को पहचाना ही नहीं है? आवश्यकता इस बात की है कि अपनी संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक-ठीक जानकारी हम प्राप्त करें। किसी भी देश की शक्ति उसके प्राकृतिक साधनों में समाहित है। प्रकृति ने भारत में दिल खोलकर अपनी संपदा लुटाई है।

Òkरत कभी अपने ज्ञान और विश्वास के बल पर विश्व का सिरमौर हुआ करता था। यह उस समय संभव हो पाया था जब हमारे पूर्वजों ने ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न धाराओं को खोजा और इनको जनोपयोगी बनाया। भारत को पुनः विश्व का सिरमौर बनाने में पूर्वजों की अथक लगन परिश्रम और निष्ठा का हाथ था। स्वयं अपने देश में उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग ने ही उन्हें यह सफलता दिलाई थी।

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय समृद्धि उपलब्ध संसाधनों को खोज कर उनके सर्वोत्तम उपयोग किस तरह किया जा सकता है यह ज्ञान होना आवश्यक है। जागरूकता के साथ लगन और परिश्रम के बल पर ही समृद्धि के शिखर तक पहुंचा जा सकता है।

अभी तक हमने अपने देश और देश के अकूत भंडार को पहचाना ही नहीं है? आवश्यकता इस बात की है कि अपनी संपदा के सही ज्ञान एवं उपयोग की ठीक–ठीक जानकारी हम प्राप्त करें। किसी भी देश की शक्ति उसके प्राकृतिक साधनों में समाहित है।

प्रकृति ने भारत में दिल खोलकर अपनी संपदा लुटाई है। हमारे देश की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, खनिज संपदा, खेती योग्य सभी उचित चीजें, जल, जंगल, जलवायु, वातावरण सभी एक से बढ़कर एक हैं। हमारे देश की जलवायु में अलग–अलग भिन्नता, समृद्धि ने हमारे देश के अन्दर ही पूर्ण विश्व उपरिस्थत कर दिया है।

हमारा देश विश्व के समान है जहां ध्रुव क्षेत्रों जैसी ठंडक भी है तो ऊष्ण कटिबंधीय स्थलों की हरियाली भी है। ऊंचे–ऊंचे पर्वत शिखरों की मालाएं भी हैं तो दूसरी और विस्तृत रेगिस्तान भी है। यह सारी विशेषताएं पूरे विश्व में अलग–अलग स्थानों पर पाई जाती हैं। हमारे देश में आने वाली छः ऋतुएं विदेशों में बड़े आश्चर्य के रूप में मानी जाती है। प्रकृति के ये उपहार हमारे देश को विश्व के विकास के उच्चतम पायदान पर ले जा सकते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि इन प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग कर स्वयं को तथा अपने देश को समृद्ध बनाएं। हमारी समृद्धि की दूसरी बुनियाद बन सकती है हमारी प्राकृतिक संपदा के रूप में उपलब्ध खनिज पदार्थ और कच्ची धातुओं की उपलब्धता। स्टील, एल्यूमिनियम और अन्य धातुओं के भंडार हमारे पास हैं। चमत्कारी और बहुमूल्य टीटेनियम के भंडार, हीरों और रत्नों की खानें, दुर्लभ भंडार के रूप में हमारे पास हैं। इनका खोजना परिश्रम से निकालना और पुनः विश्व के सामने जितना अधिक प्रस्तुत किया जाएगा हमारी समृद्धि उतनी ही बढ़ेगी।

हमारे देश की नदियां और समुद्री तट काफी समृद्ध हैं। इनके सहयोग से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए तो दिन–प्रतिदिन विद्युत की होने वाली कमी से लड़ा जा सकता है। हमारे देश में निरंतर प्रवाहित होने वाली वायु के वेग से पवन चक्कियों के उपयोग से भी विद्युत बनाई जाती है।

विद्युत की कमी का रोना तो हर राज्य सरकारें रोती हैं पर जल और वायु के समुचित उपयोग से विद्युत उत्पादन की और कई सरकारें अमल कर नए कदम नहीं उठा रही हैं। हमारे देश में सूर्य का प्रकाश भी छह से आठ माह तक भरपूर रहता है। सोलर एनर्जी से विद्युत उत्पादन

प्रारंभ करने की ओर भी ज्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। ऊर्जा के अन्य वैकल्पिक साधनों को ढूंढ कर उनके उपयोग के रास्ते खोजने और वैज्ञानिक खोजों को जारी रखने की आवश्यकता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि के क्षेत्र में नए–नए अनुसंधान कर जागरूकता और सजगता के साथ नए प्रयोग कर विकास के अनेकों सोपान चढ़े जा सकते हैं। पारंपरिक उद्योगों के साथ–साथ हमारे देश में अब अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के साधन भी हैं, इसके लिए युवा पीढ़ी जागृत होकर अत्यधिक श्रम और समय लगाकर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को सबसे आगे ले जा सकती है। यह एक सत्य है कि भारतीय युवा आज प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमेरिका और यूरोप में सभी अपनी जगह बनाए हुए हैं।

विदेश में भारतीय युवाओं की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक धाक जमी हुई है। देश में भी आज मोबाइल फोन, इंटरनेट, ई–मेल आदि गांवों में भी पहुंच चुके हैं। गांवों–गांवों में घर–घर में इनका और अधिक प्रचार–प्रसार हो यह आवश्यक है। पर्यटन के रूप में देश के पास एक विशाल क्षेत्र है जहां से देश की संपन्नता और समृद्धि में और वृद्धि हो सकती है।

पुनः विश्व का धर्मगुरु भारत अभी भी धार्मिक विचारों की भिन्नता के होते हुए धर्म को संप्रदायों से अलग रखना जानता है। यह मतान्तर हमारे देश के नागरिकों की बौद्धिक व्यापकता को दर्शाते हैं। अध्यात्म का भंडार हमारा सर्वोपरि विशेष गुण है। अध्यात्म की खोज में विश्व के अन्य देश समृद्धि और विज्ञान के शिखर पर पहुंचकर भी अशांत और उद्विग्न है। भौतिकता के बोझ तले दबे जीवन को अध्यात्म की संजीवनी से जागृत और उत्कृष्ट बनाने, जीवन के समग्र अस्तित्व को पहचानने और विकसित करने की कला हमारे देश को सही अर्थों में पुनः विश्व गुरु बनाएगी।

इसके लिए हमें क्षुद्र स्वार्थ और अहं को त्यागकर सजग, जागरूक और कर्मशील बनकर उपलब्ध संसाधनों को नए सिरे से संवर्धन कर उन्हें जन–जन के उपयोग के योग्य बनाना होगा और विश्व के सामने अपने आप को पुनः विश्व गुरु के खिताब को सिद्ध कर दिखाना होगा। ✿

उच्च विचार, विश्व गुरु बनने का आधार

आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केंद्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सभी अर्थ और काम की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है।

◈ **ppy nfg;k** 11वीं
प्रताप सिंह मैमोरियल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खरखोदा
जिलाः सोनीपत, हरियाणा

gमारा देश भारतवर्ष सब देशों में शिरोमणि है। इसका अतीत स्वर्णिम रहा है। एक समय था जब इसे विश्वगुरु, सम्यता व संस्कृति में प्रथम, सोने की चिड़िया आदि अनेक उपाधियों से नवाजा जाता था। इसे प्रकृति देवी ने अपने अपार वैभव, शक्ति व सौंदर्य से विभूशित किया है। दुनिया के दूसरे देशों में जब ज्ञान का प्रकाश फैला भी नहीं था, तब हमारा देश बहुत उन्नत था, उस समय भी ज्ञान–विज्ञान ने यहां बहुत प्रगति कर ली थी।

प्राचीनकाल में दुश्यंत नाम के एक प्रतापी राजा हुए। उनके पराक्रमी और शूरवीर पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत या भारतवर्ष पड़ा। भारत का इतिहास सोने के अक्षरों लिखा हुआ है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने लिखा है कि ''यदि मैं यह खोजने के लिए सारे संसार पर दृष्टि दौड़ाऊं कि वह कौन–सा देश है, जो प्रकृति की समस्त संपदा, शक्ति एवं सौंदर्य से संपन्न है तथा कहीं–कहीं तो पृथ्वी पर मानो स्वर्ग ही है, तो मुझे भारत की और संकेत करना पड़ेगा। यदि कोई मुझसे पूछे कि किस आकाश के नीचे मानव ने अपने सुंदरतम गुणों का विकास

किया है तथा मानव–जीवन की गहन समस्याओं पर गंभीरता से विचार किया है और उनमें से कुछ का समाधान भी निकाला है, तो मुझे पुनः भारत की और संकेत करना पड़ेगा।'' ऐसा है हमारा प्यारा हिंदोस्तां, जिसकी प्रशंसा करने के लिए विदेशियों को भी बाध्य होना पड़ता है।

भारतवर्ष की सभ्यता तथा संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में गिनी जाती है। जिस प्रकार फूलों की विविधता के कारण उपवन को चार चांद लग जाते हैं, जिस प्रकार अनेकविध डिजाइनों वाली दुकान समृद्ध मानी जाती है, उसी भांति भारतवर्ष की अनेकताओं के कारण ही यहां की संस्कृति खूबसूरत बनी हुई है। यहां पाई जाने वाली सभी विभिन्नताओं में गहरा तालमेल है। इसकी भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति ऐसी है कि इस एक देश में अनेक देशों की कल्पना सहज भाव से की जा सकती है।

यहां विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन, सनातनी आदि यहां असंख्य धर्म–धाराएं प्रवाहित होती हैं। एक अनुमान के अनुसार यहां लगभग दस हजार जातियां निवास करती हैं। भाषा और बोली की दृष्टि से भारत की विभिन्नता का कहना ही क्या? सैकड़ों बोलियां यहां की धरती का सौन्दर्य बढ़ाती हैं। भारतवर्ष में रहन–सहन, पहनावे, रीतियां, भौगोलिक परिस्थितियां आदि भी परस्पर भिन्न हैं। यदि भिन्नताओं पर विचार करने लगे तो यहां अनेक भिन्नताएं भी ढूंढी जा सकती हैं।

भारत को सिंधु देश, आर्यावर्त, हिंदुस्तान भी कहते हैं। हमारा प्यारा हिंदोस्तां जीवन के हर क्षेत्र में संसार के सभी देशों का पथ–प्रदर्शन कर रहा है। आज से लगभग पांच सहस्त्र वर्ष पहले की सिंधु घाटी सभ्यता के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, उनसे हमारी उच्चता तथा महत्ता का पता चलता है। संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला की प्रगति भी आंखें खोल देने वाली हैं। विधि की सबसे पहली पुस्तक मनुस्मृति भारत में ही रची गई। लीलावती ने गणित के क्षेत्र में जो कार्य किया, गार्गी तथा मैत्रेयी ने वेदसूत्रों की रचना में जो योगदान दिया, उससे प्रमाणित होता है कि नारियां उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करती थीं। भारत ने हजारों साल पहले चरक तथा धन्वंतरि जैसे

जगविख्यात वैद्यों को जन्म दिया था। इन्होंने शरीर की रचना, उसकी क्रियाओं तथा उसमें उत्पन्न होने वाले विकारों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के फलस्वरूप उन्होंने शरीर को स्वस्थ एवं बलिश्ठ बनाने वाले द्रव्यों की खोज कर ली थी। आपसी फूट के कारण हमारा देश सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहा और अनेकों बलिदानों तथा आंदोलनों के पश्चात 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वाधीन हुआ। भारत वर्तमान में अपने लक्ष्य पथ पर तेजी के साथ बढ़ तो रहा है लेकिन आज हमारे सामने कई विकट समस्याएं उत्पन्न हो चुकी हैं।

भूख, गरीबी, बेकारी, जनसंख्या वृद्धि आदि समस्याएं हमारे साहस की परीक्षा ले रही हैं। भाषायी विवाद, धार्मिक मतभेद, सांप्रदायिकता आदि हमारी अखंडता को चुनौती दे रहे हैं। कभी धर्म के नाम पर आंदोलन होते हैं तो कभी धर्म की संकीर्णता वैमनस्य का कारण बन जाती है। राजनीतिक पार्टियां परस्पर मतभेद होने के कारण भी देश की उन्नति में बाधक बन जाती हैं।

आज के भारत में भ्रष्टाचार का भी बोलबाला है। इसी कारण राष्ट्रीय चरित्र पर आघात पहुंच रहा है। जब तक भारतवासी चरित्रबल आवश्यकताओं को नहीं समझते तब तक भारत का उच्च स्तर नहीं उठ सकता। आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केंद्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सभी अर्थ और काम की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है।

देश को सबल बनाने के लिए सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्द बनाए रखने की जरूरत है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रेम से प्रेम और घृणा से घृणा उत्पन्न होती है। हमारा पथ प्रेम और अहिंसा का होना चाहिए। घृणा एवं हिंसा सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है।

हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम देश की अनूठी विशेषता अनेकता में एकता का सम्मान करें और बहुत सारे बलिदानों के बाद मिली

आजादी के मूल्य को पहचानकर सभी धर्मों, भाषाओं और संप्रदायों का आदर करें। भारत अपने प्राचीन गौरव को समझे, पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध से अपने को बचाए, सदा जीवन और उच्च विचार ग्रहण करें, अपनी भाषा को प्राथमिकता दें, प्राचीनता और नवीनता के समन्वय से अपने ज्ञान–विज्ञान को चरम सीमा पर पहुंचा दे।

अगर यह सब हुआ तो वह दिन अवश्य आएगा जब हमारे भारत की संस्कृति विश्व के चौराहे पर चमक कर सभी दिशाओं को आलोकित करेगी तब फिर से भारतवर्ष अपने विश्व गुरु के आसन पर आसीन होगा और हम गर्व से कह सकेंगे कि हम सब भारतीय हैं और यह धरती स्वर्ग के समान है। ✿

इस गौरवशाली देश की गाथा आज भी उतनी ही गरिमामय है जितनी प्राचीन काल में थी। विदेशी हमलों व लूटपाट ने भारत को जिस दुर्दशा में पहुंचाया उससे उबरते हुए भारत आज भी विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत एक ऐसा देश है जिसका चयन देवतागण भी दुष्टों के विनाश के लिए करते हैं तथा प्रकृति भी अपनी छः ऋतुओं के साथ इसी देश की शोभा बढ़ाती है।

स्वर्णिम अतीत से सीखें, वर्तमान को सजाएं

◈ **vk;u ckY;ku** 8वीं
कमल पब्लिक सी.सै. स्कूल
डी–ब्लॉक विकासपुरी, दिल्ली

शोभित है सर्वोच्च मुकुट से, जिनके विश्व देश का मस्तक।
गूंज रही हैं सकल दिशाएं, जिनके जय गीतों से अब तक।

jkम नरेश त्रिपाठी की ये पंक्तियां बरबस ही गौरवशाली भारत की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। प्राचीन काल में हमारा देश सोने की चिड़िया कहा जाता था क्योंकि भारत देश सर्वगुण सम्पन्न व समृद्ध था। भारत वर्ष शक्ति के क्षेत्र में और शिक्षा के क्षेत्र में धनी व शांतिप्रिय है, इसकी उदारता के कारण ही विदेशों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालयों में आते थे। यहां की संस्कृति आदर्श जीवन मूल्यों से परिपूर्ण है जिसे विदेशी लोग भी अपनाने के लिए बाध्य हो रहे हैं। हमारे देश की अखंडता, एकता, त्याग, प्यार और उदारता की मिसाल पूरी दुनिया में दी जाती है।

x#vk dh Òfe% भारत का इतिहास गौरवमय रहा है, विशेषतः शिक्षा के क्षेत्र में। यह गुरुओं की भूमि रही है। जगत गुरु कृपाचार्य, शंकराचार्य, कबीर, नानक आदि गुरुओं ने इसकी शोभा बढ़ाई है। इस भूमि ने द्रोणाचार्य जैसे गुरु दिये वहीं एकलव्य जैसा गुरुनिष्ठ शिष्य भी। वैदिक

काल से लेकर आज तक देश ने कई करवटें बदली हैं किंतु इसने अपने धैर्य एवं मान की रक्षा हमेशा की है। दूर–दूर से विदेशी इसके आकर्षण में बंधे चले आए हैं। यहां आज भी गुरुओं को भगवान से ऊंचा दर्जा दिया जाता है। स्वयं कबीर के शब्दों में:

''गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागों पाय,
बलिहारि गुरु अपने जिन गोबिंद दियो मिलाय।''

vk/;kfRed ç.krk% धर्म के क्षेत्र में तो भारत ने जो मिसाल दी है वह अतुलनीय है। राम ने आदर्श का पाठ पढ़ाया तो कवीर, नानक, रैदास, नाना फरीद, बुल्लेशाह जैसे संतों की वाणी भी यहीं गूंजी है। बौद्ध धर्म की शिक्षा लेने तो चीनी यात्री फाह्यान तथा ह्यूंसांग वर्षों की कष्टप्रद यात्रा करके भारत पहुंचे थे। वर्तमान समय में भी हमारा देश अभी तक अध्यात्मिक जगत का अगुआ बना हुआ है।

स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में भारतीय संस्कृति के जिस स्वरूप से पाश्चात्य जगत को परिचित कराया उसकी गूंज अभी तक सुनाई देती है। भारतीयों ने अस्त्र–शस्त्र के बल पर नहीं बल्कि प्रेम के बल पर लोगों के हृदय पर विजय प्राप्त की। प्रसाद जी ने कहा है: *''विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।''*

f'k{kk txr e: Òkjr% वैदिक काल में जब यूनान जैसी संस्कृतियों में केवल चार प्रतिशत लोग ही शिक्षित हुआ करते थे, तब भारत की शत–प्रतिशत जनता शिक्षित थी। प्रत्येक वर्ग के बालक के लिए शिक्षा अनिवार्य व निःशुल्क थी। उस समय का भारत शिक्षा का सिरमौर था। वेदों, उपनिषदों, चरक संहिता, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र आदि पुस्तकें भारत की ही देन हैं जो आज तक विश्व का मार्गदर्शन करती हैं।

Òkjr dh vuie ÒV% आधुनिक युग में जब भारत में पूर्ण सुविधायें नहीं थीं, तब भी श्री जगदीश चन्द्र बसु ने बेतार के तार का आविष्कार किया और वनस्पति जगत को प्राणी जगत सिद्ध कर समस्त विश्व के वैज्ञानिकों को चकित कर दिया। चंद्रशेखर, वेंकट रमन तथा हर गोविंद

खुराना जैसे देश के नागरिकों ने नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। विश्व को दशमलव और शून्य देने वाले भारत ने कभी इसके बदले किसी फल की कामना नहीं की। भारत ने सदैव पूरे विश्व का एक गुरु की भांति मार्गदर्शन किया है।''परहित सरिस धर्म नहीं भाई'' गुरु मंत्र का मान रखते हुए हमने अनेक कष्ट उठाकर भी किसी से दुर्भावना नहीं रखी है।

v.kqor dk ;ksxnku% अणुव्रत उन संस्थाओं में से एक है जिसने शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया है। अणुव्रत के पांचों नियम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह सम्पूर्ण मानव जाति के उद्घाट के लिए गुरु वाक्य बने हुए हैं।

''सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित दुखः भाग भवेत।''

अणुव्रत का सहारा लेकर सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में अणुव्रत की कई संस्थाएं भारत को विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से कार्यरत हैं जिनमें–अणुव्रत विश्व भारती, बालोदय पुस्तकालय, विश्व दर्शन दीर्घा, जीवन विज्ञान प्रशिक्षण, अणुव्रत शिक्षण संघ आदि का नाम उल्लेखनीय है।

fo'o x# mikf/k dk gdnkj% इस गौरवशाली देश की गाथा आज भी उतनी ही गरिमामय है जितनी प्राचीन काल में थी। विदेशी हमलों व लूटपाट ने भारत को जिस दुर्दशा में पहुंचाया उससे उबरते हुए भारत आज भी विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत एक ऐसा देश है जिसका चयन देवतागण भी दुष्टों के विनाश के लिए करते हैं तथा प्रकृति भी अपनी छः ऋतुओं के साथ इसी देश की शोभा बढ़ाती है।

भारत यदि पुनः विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त करना चाहता है तो उसे अपने स्वर्णमयी इतिहास को अपना कर वर्तमान बनाना होगा। भारत उस दिशा में अग्रसर भी है। आज चाहे औधोगिक जगत हो या व्यापार जगत, खेल जगत हो या शिक्षा जगत, भारत के नागरिकों ने अपनी योग्यता से भारत का नाम रौशन किया है। हम अन्य देशों से आयात–निर्यात कर लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर उनकी समस्याओं

से छुटकारा दिलवा रहे हैं। यह सब शिक्षा के कारण ही हो रहा है। क्योंकि आजकल प्रत्येक स्त्री–पुरुष को पढ़ने लिखने का अधिकार है।

आज हम अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी आकाश में आ गए हैं जिसके कारण हम अपने अस्तित्व की पहचान कर परहित की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। भारत, जहां हर रिश्ता निःस्वार्थ भाव से निभाया जाता है, प्रत्येक देश के लिए एक मिसाल बना हुआ है।

अतः भारत देश जिसकी संस्कृति विश्व की निधि है, जिसका आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विकास दिन–प्रतिदिन हो रहा है, ऐसा देश विश्व को सही राह दिखाने और विश्व गुरु बनने का पूरा हक रखता है। दृढ़ संकल्प, अदम्य साहस, ईमानदारी और सत्य निष्ठा इस मंजिल तक पहुंचाने के अकाट्य मार्ग हैं। ✿

भारतवर्ष अपनी व्यापक व व्यावहारिक प्रौद्योगिकी एवं उच्च तकनीक क्षमता, विलक्षण आर्थिक उन्नयन की उत्कंठा एवं अपनी विराट सांस्कृतिक चेतना, जो उसे विरासत में मिली है, से शनैः-शनैः एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभरकर विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। यह सच है कि भारत उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है।

सुबह होने वाली है

◈ **vitfy dekjh** 9वीं
आर्मी पब्लिक स्कूल
बैरकपुर, कोलकाता, पं. बंगाल

प्राचीन काल अपने विकास के लिए विश्व में विख्यात था। विश्व के अन्य देश जब अपनी प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगे हुए थे एवं जंगली जीवन बिता रहे थे उस समय हमारे देश की शिक्षा पद्धति विकास के चरमोत्कर्ष पर थी। हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता दूसरे के लिए अनुकरणीय थी। डॉ. थॉमस ने इस तथ्य की ओर ध्यान देते हुए कहा कि ऐसा कोई भी देश नहीं जहां ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन काल से पैदा हुआ अथवा जिसने इतना स्थायी एवं शक्तिशाली प्रभाव पैदा किया हो।''

जिस देश में शिक्षा का स्तर इतना ऊंचा हो वह देश विश्वगुरु कहलाना ही चाहिए। अतीत काल से ही हमारा देश समृद्धि एवं वैभव के लिए विश्व विख्यात था। इसके प्रलोभन से ही मुसलमान आए। इसके पश्चात् इस देश के वैभव को देखते हुए अनेक यूरोपीय जातियां इस देश में आने लगीं। सर्वप्रथम यहां पुर्तगाली आए, इसके बाद डच फ्रांसीसी तथा अंग्रेज यहां व्यापार करने के उद्देश्य से आए पर देश के वैभवशाली व्यक्ति अंग्रेजों की कूटनीति को समझ नहीं पाए। फलस्वरूप भारतवासियों को इसका शिकार होना पड़ा।

लार्ड कर्जन की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति से भारत की सहिष्णुता को बहुत बड़ा धक्का लगा और जो कुछ बचा वह लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने पूरा किया। उसने 1835 में प्रसिद्ध ऐतिहासिक विवरण पत्र प्रस्तुत किया। भारत को सर्वोच्च पद पर देखकर उसने कूटनीति की चाल चली। उसने 1813 के आज्ञा पत्र में आए साहित्य शब्द का अर्थ अंग्रेजी साहित्य से लगाया तथा भारतीय विद्वानों का अर्थ उस व्यक्ति से लगाया जो लांक तथा मिल्टन के काव्य को भली भांति समझ सके।

भारतीय साहित्य का मजाक उड़ाते हुए उसने एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की अलमारी को भारत तथा अरब के सम्पूर्ण साहित्य के बराबर समझा। अर्थात मैकाले की शिक्षा नीति भारतीयों को एक क्लर्क से ज्यादा कुछ नहीं बनने देती। भारतीय सम्प्रभुता पर गहरे आघात का यह पहला अध्याय था क्योंकि साहित्य और कला ही समाज का दर्पण होती है। विश्व के सभी प्रगतिशील देश अपने विद्यार्थियों के कारण ही बढ़ रहे हैं। मैकाले की शिक्षा नीति ने उन्हें भ्रमित कर दिया जिसके फलस्वरूप भारत आज भ्रष्टाचार की लपेट में हैं। भ्रष्टाचार की आड़ में वेतवसन अपराध भी किए जा रहे हैं। जिन्हें (white collor of crime) कहते हैं, वेतवसन अपराधों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी। भारतीय समाज की स्थिति अति संवेदनशील है। आज बेईमान व्यक्ति को कुशल और चालाक समझा जाता है और ईमानदार व्यक्ति को कायर और डरपोक समझा जाता है।

आज समाज में जितने भी अपराध हो रहे हैं वे अत्यंत ऊच्च वर्ग और शिक्षित व्यक्तियों द्वारा किये जा रहे हैं और अपराध इतने सुनियोजित तरीके से किए जाते हैं कि उन्हें अपराध साबित करना टेढ़ी खीर होती है। जब तक उस अपराध की गोपनीयता नष्ट होती है तब तक अपराधी देश को करोड़ों का चूना लगा चुका होता है। समाज व्यवस्था के लिए शिक्षा की सुंदर पद्धति होनी चाहिए। आज भी हमारे पास हमारे पूर्वजों के उपदेश हैं जिनके द्वारा भारत पुनः विश्वगुरु बन सकता है।

किसी भी राष्ट्र के उत्कर्ष एवं सर्वाधिक विकास में उस राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का उन्नयन, उच्च प्रौद्योगिकी व तकनीक क्षमता, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना, मूलपरक शिक्षा का व्यापक प्रचार व प्रसार एवं उच्चतम शिक्षा से अधिकतम रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना आदि है। भारतवर्ष अपनी व्यापक व व्यावहारिक प्रौद्योगिकी एवं उच्च तकनीक क्षमता विलक्षण आर्थिक उन्नयन की उत्कंठा एवं अपनी विराट सांस्कृतिक चेतना, जो उसे विरासत में मिली है, से शनैः–शनैः एक विकसित राष्ट्र के रूप में उमड़कर विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी और आकर्षित कर रहा है। यह सच है कि भारत उज्ज्वल भविष्य की और अग्रसर हो रहा है।

हमारी कुछ समस्यायें भी हैं लेकिन इससे भारत के विश्वगुरु बनने का सपना धूमिल नहीं हो जाता, एक तरफ उच्चतम स्तर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं दूसरी तरफ विकास की नीतियों में तालमेल बनाया जाए तो निःसन्देह भारतवर्ष अपने विकास का लक्ष्य प्राप्त कर अग्रणी विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में शामिल होकर विश्व के मानचित्र पर एक बार तिरंगे को लहरा सकता है।

भारतवर्ष को विश्वगुरु का स्थान दिलाने के लिए हमें प्राचीन शिक्षा पद्धति को अपनाकर विद्यार्थियों में देशभक्ति और देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा देनी चाहिए क्योंकि एक सेना की मुकाबला करना उतना कठिन नहीं होता जितना कि उन गिनेचुने व्रतधारियों का होता है जिन्हें समाज से कोई डर नहीं। देश के बुलावे पर वे बलिवेदी पर चढ़ने से नहीं डरते। एक लंबी रात की सुबह होने वाली है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया के नक्शे पर विश्वगुरु का स्थान ले लेगा ✿

वापस लानी होगी खोई हुई एकता

◈ rUoh dVkfj;k 12वीं
राष्ट्रशक्ति विद्यालय
हस्तसाल, उत्तम नगर, दिल्ली

देशभक्ति और देश प्रेम की भावना ही भारत को बचा सकती है और पुनः विश्वगुरु बना सकती है। जब हम समझेंगे कि सहज मानवीय सद्भावना और विश्वशान्ति हमारे महान देश का महान आदर्श है तभी हम अपने देश से प्यार कर पाएंगे।

Okरत के गौरवपूर्ण स्वरूप और इतिहास की रचना के लिए हमें कई मोर्चों पर युद्ध लड़ने हैं यथा आर्थिक, राजनैतिक, कृषि, व्यवसाय एवं शिक्षा। इसमें हमें प्रगति करनी है। सृष्टि निर्माण और सभ्यता–संस्कृति की उच्च धारणा की दृष्टि से हमारा भारतवर्ष विश्व का प्राचीनतम देश है। अपने उदात्त निर्माण और महान सभ्यता–संस्कृति के कारण ही नहीं, प्रकृति और भौगोलिक निर्माण की दृष्टि से भी भारत सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना है। कविवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में भारतवर्ष की प्रकृति और रचना के बारे में उचित ही कहा गया है कि–

''तीन तरफ सागर की लहरें जिसका बने बसेरा,
पतवारों पर नियति सजाती जिसका सांझ–सवेरा,
बनती हो मल्लाह मुट्ठियां सतत् भाग्य की रेखा,
रत्नाकर रत्नों को देता हो टकराकर लेखा।''

मात्र यही नहीं, सभी प्रकार के प्राकृतिक सौन्दर्यों और वैभव से सम्पन्न हमारा देश संसार का सबसे बड़ा जनतंत्र भी है। अपने विस्तार में यह विश्व का सातवां महान देश है। हमारे इस महान देश में गंगा जैसी

नदी बहती है, जिससे पवित्र अन्य कोई जलधारा नहीं है। इस देश के सजीव प्राकृतिक सौंदर्य की तुलना में स्वर्ग का कल्पानालोक तुच्छ माना जाता है। भारत ऋषियों का तपोवन है, प्रकृति का उपवन है, इसीलिए प्रसिद्ध शायर इकबाल के शब्दों में गाया भी जाता है–*'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।'*

यहां के हरे–भरे मैदान, बर्फ से चमकती चोटियां, रूपहली–सुनहली बदलियों की गरज से गूंज उठने वाला आकाश, लहराता नीला सागर, यहां के फल–फूल और चहचहाते पक्षियों, बहुरंगे पशुओं को देखने के लिए लोग दूर–दूर से यहां आते हैं। हिमालय भारत का प्रहरी है जिससे बड़ा संसार में अन्य कोई पर्वत नहीं। कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने हिमालय के बारे में उचित ही कहा है किः

साकार दिव्य, गौरव–विराट,
पौरुष का पंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी का हिमकिरीट,
मेरे भारत का दिव्य भाल।

अगर देखा जाए तो भारत हमेशा से ही विश्व का गुरु रहा है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। आज जो हवाई जहाज ऊंची–ऊंची उड़ानें भरते हैं उसका तरीका तो भारत से ही मिला जैसे रामायण में इस्तेमाल हुआ 'उड़नखटोला'। यहां तक कि 'शून्य' जो कि गणित का आधार है वह भी भारत की ही देन है। रामानुजन, आर्यभट्ट, सी.वी. रमन, कल्पना चावला, रबीन्द्रनाथ टैगोर आदि कितने ही लोग हैं जिन्होंने सदा भारत का नाम ऊंचा किया है।

पर यह बहुत ही खेद की बात है कि अब न तो भारत का वह नाम है न ही वह इज्जत। यहां के लोग ही अपने देश पर गर्व नहीं करते। कुछ लोग तो भारत के वासी होने को अपना दुर्भाग्य समझते हैं। न तो उन्हें अपने देश से प्यार है, न ही अपनी मातृभाषा से। शायद यही कारण है कि हमारा यह देश भारत अन्दर से खोखला होता जा रहा है और धीरे–धीरे पतन की ओर अग्रसर हो रहा है।

हर तरफ से हमारा देश विभिन्न समस्याओं में जकड़ा हुआ है। भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, बेकारी और न जाने क्या–क्या? आज का हर युवक–युवती अपने देश को छोड़कर पश्चिमी साहित्य की ओर आकर्षित हो रहा है। व्यवहार बदल रहे हैं, बड़ों के लिए सम्मान तो जैसे खत्म ही हो चुका है। संगठित परिवार छोटे परिवारों का रूप ले चुके हैं। हमारा भारत जिसे हम 'अतुल्य भारत' कहते थे, वह तो जैसे एक सम्बोधन करने के लिए शब्द ही रह गया क्योंकि इसमें ऐसा कुछ बचा नहीं है।

भारतवासी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करना भी भूल गए हैं। हिन्दी भाषा का इस्तेमाल होता है, इसके नाम पर पैसे भी कमाए जाते हैं पर व्यवहार के नाम पर अंग्रेजी भाषा और अंग्रेज लोगों की चमचागिरी करने लगते हैं। हिन्दी आज अपने ही घर में परदेशी बनकर जी रही है। ऐसे हालातों में जहां भारत अपना अस्तित्व खोता जा रहा है वहां यह बहुत बड़ा प्रश्न उठता है कि भारत पुनः विश्वगुरु कैसे बने।

भारत हर चीज में सर्वोत्तम है। यहां कला की कमी नहीं है, अगर कमी है तो यहां की सोच में। अगर हम भारत को ऊंचाईयों पर देखना चाहते हैं तो खोई हुई एकता को वापस लाना होगा। अपनी सोच का परिवर्तन करना होगा तभी भारत दोबारा अपनी उस जगह को प्राप्त कर पाएगा।

ऐसा नहीं है कि यहां के लोगों के पास दिमाग नहीं है या किसी भी प्रकार के हुनर की कमी है। यहां का दिमाग ही तो दूसरे देशों में इस्तेमाल होता है। हर जगह हर क्षेत्र में कोई न कोई भारतवासी हमेशा मिलेगा। चाहे वह नासा हो या बिल गेट्स के इलाज के लिए बुलाई गई डॉक्टरों की टीम।

अगर यही दिमाग अपने ही देश में प्रयोग होने लग जाए तो मैं नहीं मानती की भारत को विश्व गुरु बनने से कोई भी रोक सकता है। जब प्रत्येक भारतवासी अपनी जन्मभूमि को सम्मान देने लगेगा इसे अपना सब कुछ मानेगा तो भारत फिर से सोने की चिड़िया बन जाएगा।

अगर भारत विश्व गुरु का पद वापस चाहता है तो यहां के प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश के लिए देश भक्ति जगानी होगी। अमेरिका का सर्वश्रेष्ठ होने का यही कारण है कि वहां का प्रत्येक वासी अपने देश पर फख्र करता है।

देशभक्ति और देश प्रेम की भावना ही भारत को बचा सकती है और पुनः विश्वगुरु बना सकती है। जब हम समझेंगे कि सहज मानवीय सद्भावना और विश्व–शान्ति हमारे महान देश का महान आदर्श है तभी हम अपने देश से प्यार कर पाएंगे। भारत के गौरवपूर्ण स्वरूप और इतिहास की रचना के लिए हमें कई मोर्चों पर युद्ध लड़ने हैं, यथा आर्थिक, राजनैतिक, कृषि, व्यवसाय एवं शिक्षा। इसमें हमें प्रगति करनी है। हम सब मिलकर ही अपने भारत का वह सम्मान वापस ला सकते हैं और इसे पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं। ✿

युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

◈ Ñfrdk u#yk 12वीं
सेंट मारग्रेट स्कूल
प्रशांत विहार, दिल्ली

आज समाज में प्रत्येक विचारधारा और समस्या को लेकर विभिन्न सभायें कार्य कर रही हैं परन्तु अज्ञान का पर्दा हटाकर अध्यात्म विद्या या ब्रह्म विद्या की शिक्षा देने वाली संस्थाओं तथा केन्द्रों का सर्वथा अभाव है। अतः सर्वप्रथम तो भारत में इस प्रकार के केन्द्रों की नितान्त आवश्यकता है। केवल उदार शिक्षा, यथार्थ ज्ञान, संप्रयोग परीक्षण अथवा दार्शनिक विचार पद्धति के अभ्यास से ही ये समस्याएं दूर हो सकती हैं।

Okरत आदिम संस्कृति की क्रीड़ा–भूमि है। यह ऐसा पावन एवं गौरवमय देश है जहां देवता भी जन्म लेने को लालायित रहते हैं और इसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। कथित है *''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि''*। भारत की प्रशंसा करते हुए सुप्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद लिखते हैं–

''अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अंजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।''

समस्त विश्व को मानवता का पावन संदेश इसी देश से प्राप्त हुआ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में विश्वास करने वाला यह देश धरती का स्वर्ग, देवताओं की पुण्यभूमि तथा विश्व का सिरमौर कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। वेदों की वाणी इसी धरा पर गूंजी थी, उपनिषदों की ज्ञानधारा इसी वसुंधरा पर प्रवाहित हुई थी, गीता का उपदेश इसी पावन धरती पर दिया गया था तथा शांति, अहिंसा, प्रेम, भाई–चारे और निष्काम कर्म का संदेश इसी धरा ने संसार को दिया था। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है, जिसके कारण हम विश्व को सर्वप्रथम ज्ञान दे सके तथा जगद्गुरु कहलाए।

हमारी यही सुदृढ़ संस्कृति विपदाओं एवं जटिलतम समस्याओं को शिकस्त अथवा पराजित करती आई है। परोपकार, त्याग, अनुप्राण के जितने सुंदर एवं सक्षम उदाहरण हमारे देश के महापुरुषों से मिलते हैं, संभवतः अन्यत्र मिलते हों। आर्यभट्ट, चाणक्य जैसे विद्वान तथा गीता, वेद, उपनिषद जैसे पावन ग्रंथ भारत को सर्वोत्कृष्ट विश्वगुरु बनाते हैं।

सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय वाली भारतीय संस्कृति ने अपने विकास की प्रक्रिया में अन्य जातियों की संस्कृतियों के अच्छे गुणों को ग्रहण करके उन्हें अपने भीतर आत्मसात कर लिया और आज वे भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। दूसरों के अच्छे विचारों को ग्रहण करने में भारतीय संस्कृति ने कभी परहेज नहीं किया। अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशिष्टता रही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को 'महामानवता का सागर' कहा है। भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, दया एवं परोपकार का बहुत महत्वपूर्ण समन्वय है।

संसार में प्रत्येक वस्तु की गति तालबद्ध या नियमानुकूल है और सारी सृष्टि कालचक्र के नियम के अधीन है। इसी नियम के अनुसार सूर्य व नक्षत्र को भी घूमना पड़ता है। एक समय था जबकि भारत वर्ष में ज्ञान और वैभव का सूर्य मध्याकाश पर प्रकाशमान था। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाएं तो आकाश मण्डल के अन्य नक्षत्रों की तरह सूर्य भी धीरे–धीरे पश्चिम की ओर बढ़ता हुआ चल रहा है। यही प्राकृतिक नियम विश्वसनीय और सत्य हैं तो ज्ञान व विभूति का सूर्य अपनी प्रदक्षिणा अवश्य पूर्ण करेगा और भारतवर्ष पर एक बार द्विगुण कांती से दीप्तमान होगा। भारत का प्राचीन इतिहास देखने से हमें जान पड़ता है कि अन्य देशों की दशा के समान भारतवर्ष में भी रात्रि अज्ञान व दरिद्रता रूपी अंधकार का आंतरिक मुख्य कारण संकीर्णता (परिच्छिन्नता) के अतिरिक्त कुछ और नहीं है।

शनैः शनैः इस राष्ट्र की आर्त कराह श्रोताओं का भाषण बन गया है, इसका ध्वंस दर्शकों का दृश्य। वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का विघटन चहुं और दिखाई दे रहा है। विलास और भौतिकता के मद में भ्रांत लोग बेतहाशा धनोपार्जन की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं। आज का मानव स्वार्थपरता में इस तरह आकंठ डूब चुका है कि उसे

उचित–अनुचित, नीति–अनीति का भान ही नहीं हो रहा है। व्यक्ति विशेष की निज स्वार्थपूर्ति से समाज का कितना अहित हो रहा है, इसका शायद किसी को आभास नहीं है।

प्रतिद्वंद्विता से अंकित इस व्यावसायिक युग में भारत के पुनः विश्वगुरु बनने की अपरिहार्य आवश्यकता तो स्पष्ट है। अधुना प्रश्न उठता है कैसे? इस देश की संस्कृति के निस्वार्थ भाव ने भारत को उज्ज्वल ज्योति का स्तम्भ अर्थात् सर्व देश सरताज बनाया।

आज समाज में प्रत्येक विचारधारा और समस्या को लेकर विभिन्न सभायें कार्य कर रही हैं परन्तु अज्ञान का पर्दा हटाकर अध्यात्म विद्या या बह्म विद्या की शिक्षा देने वाली संस्थाओं तथा केन्द्रों का सर्वथा अभाव है। अतः सर्वप्रथम तो भारत में इस प्रकार के केन्द्रों की नितान्त आवश्यकता है। केवल उदार शिक्षा, यथार्थ ज्ञान, संप्रयोग परीक्षण अथवा दार्शनिक विचार पद्धति के अभ्यास से ही ये समस्याएं दूर हो सकती हैं।

ऐसे में प्रारंभिक समस्या निवृत्ति कदम के रूप में अपने ज्ञान के सागर ग्रंथों की सहायता लेनी होगी। दुःसंवाद यह है कि हम ग्रंथों को वर्तमान परिस्थितियों हेतु प्रासंगिक मान्य एवं उचित बनाने के अमोघ सत्त प्रयत्न करने की अपेक्षा उसे अप्रचलित एवं सडांध होने दे रहे हैं। स्थूल रूप से यह कर्तव्य दृष्टान्त होता है, सूक्ष्म रूप से यह हमारी ही भूल का पश्चाताप होगा।

ये पावन ग्रंथ पाश्चत्य जगत् को स्मरण दिलाती है कि हमारी अत्यधिक क्रियाशील तथा एकांगी संस्कृति के समक्ष एक ऐसा संकट उपस्थित है, जिससे आत्मविनाश हो सकता है क्योंकि इसमें मौलिक तथा अध्यात्मिक सुदृढ़ता अतुलनीय है। प्राचीन काल में यह संस्कृति निस्संदेह की त्रुटिरहित थी। फिर अंग्रेजी शासन के प्रभाव में भौतिकता बढ़ती गई, औधोगिकरण अपनी चरम सीमा पर है एवं अध्यात्मिक चेतना की गहराई का अभाव प्रत्यक्ष है। ऐसी गइराई के बिना हमारे चारित्रिक तथा राजनैतिक विरोध शब्दजाल बनकर रह जाते हैं। समाज का प्रत्येक व्यक्ति उच्च आदर्शों और जीवन मूल्यों के विपरीत आचरण कर रहा है।

पाश्चात्य जगत् के पास ज्ञान तो है किंतु यह ज्ञान भी तब तक नश्वर है जब तक भारत जगत् को अपनी सरस संस्कृति से अवगत नहीं करा देता। ज्ञान का अभाव कदापि नहीं है, किंतु इसकी महत्ता जानने वालों का जरूर है। भारत विश्वगुरु इसीलिए कहला पाया था क्योंकि उसके निकट ज्ञान तो था ही, साथ ही उस ज्ञान का सम्मान कर उसे उज्ज्वल स्त्रोत बनाने की क्षमता भी थी। आज जो विषम परिस्थितियां हमारे समक्ष उपस्थित हैं, वे नैतिक, मौलिक पतन की पराकाष्ठा ही तो हैं। ऐसे में हमें मार्गदर्शक की अत्यंत आवश्यकता है।

यह तो असंख्य समाधानों में से केवल एक ही औषधि है। अपने संगठित प्रयासों से हम भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने में सक्षम हैं। इस सब में युवाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं परमावश्क भूमिका है। भारतीय संस्कृति को जगद्गुरु का श्रेय प्राप्त होना उसकी महत्ता को उपयुक्त रूप से दर्शाता है।

अंततः सामूहिक और प्रतिबद्ध प्रयासों के साथ हम वास्तव में आध्यात्मिक अधोपतन को परास्त करेंगे। भारत को पुनः विश्व का गुरु बनाने में सर्वोतम सफल रहेंगे। अतः अपनी योग्यता, सामर्थ्य, चातुर्य की सहायता से, अपनी दक्षता एवं निपुणता से भारत को पुनः आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, बौधिक शीर्ष बिंदु तक पहुंचा सकते हैं। ✿

अपने भीतर सद्गुणों को जगाएं

◈ fj;k 'kekZ 8वीं
विद्या सागर स्कूल
बिचौली मर्दाना, इंदौर, मध्य प्रदेश

आज के भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में चारों ओर स्वार्थ ही स्वार्थ दृष्टिगोचर होता है। परोपकार का त्याग कर लोग केवल अपने लिए ही जीने लगे हैं। उन्हें देशहित से स्वहित की ज्यादा परवाह है। हमारी भारतीय संस्कृति में तो पूरी वसुधा को एक कुटुम्ब कहकर संबोधित किया गया है। भारत ने विश्व को सदा ही परोपकार का संदेश दिया है।

gमारा देश भारत अपनी सभ्यता, संस्कृति, विभिन्न धर्मों व विभिन्नता में एकता आदि खूबियों के कारण विश्व प्रसिद्ध है। भारत विश्व सभ्यता का जनक है। वेद, उपनिषद, गीता, पुराण, रामायण जैसे महान ग्रन्थों की रचना इसी देश में हुई।

एक समय था जब हमारा देश धार्मिक, सांस्कृतिक व आर्थिक रूप से पूर्णतः सम्पन्न था। लोग इसे सोने की चिड़िया कहते थे। विश्व के कई देशों से लोग कभी हमारे मित्र बनकर तो कभी हमारे दुश्मन बनकर यहां आते रहे। यहां की हर चीज ने विश्व के अन्य देशों को आकर्षित किया। विश्वगुरु के पद से सम्मानित इस देश ने समूचे विश्व को मानवता, नैतिकता, सच्चरित्रता व सदाचार की शिक्षा दी। करुणा, दया, परोपकार, कर्तव्य परायणता, आत्म–संयम, इंद्रिय दमन, सत्य भाषण जैसे अनेक नैतिक मूल्यों के कारण ही भारत विश्व गुरु कहलाया। अनेक पौराणिक व ऐतिहासिक आख्यानों में इसका वर्णन किया गया है।

धीरे–धीरे जब हम देशवासियों में नैतिक मूल्यों का ह्रास प्रारंभ हुआ तो विदेशियों ने अपनी गिद्ध दृष्टि हम पर डाली व परिणामस्वरूप सैकड़ों

वर्षों तक हम दासता की जंजीरों में जकड़े रहे। पराधीनता के इस लंबे इतिहास में हम अपने नैतिक मूल्यों को भूल बैठे व कायर बनकर दासता के अभिशाप को सहन करते रहे परंतु अगर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है तो हमें उन गुणों को एक बार फिर जीवित करना होगा, जो इस समय हमारे अंदर मर चुके हैं।

विश्व का हर धर्म करुणा और दया का पाठ पढ़ाता है। दयालु व निष्कपट व्यक्ति न तो अपने–पराये का भेदभाव रखता है और न ही अपनी हानि की परवाह करता है। हमारे देश की कई महान हस्तियों जैसे महावीर, गौतम बुद्ध व गुरु नानक देव जी ने अपने–अपने धर्मों में करुणा व दया के भाव को श्रेष्ठ बताया है। तुलसीदास जी भी कहते हैं:–

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लगि घट में प्राण।।

परंतु ऐसा लगता है आज हमारे समाज में दया व करुणा का भाव समाप्त हो चुका है। आज हमारे आसपास ही कई लोग गरीबों, लाचारों, जानवरों, बुजुर्गों व जरूरतमंदों पर धौंस जमाते रहते हैं। हमें चाहिए की हम उनका विरोध करें व दया की भावना विकसित करने की कोशिश करें। यह भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता है। परोपकार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–पर + उपकार। इसका अर्थ है दूसरों का भला करना। इसमें स्वार्थ का अंश भी नहीं होता है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह रहा है कि हमने कभी स्वार्थ के सहारे कोई लड़ाई नहीं जीती।

आज के भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में चारों ओर स्वार्थ ही स्वार्थ दृष्टिगोचर होता है। परोपकार का त्याग कर लोग केवल अपने लिए ही जीने लगे हैं। उन्हें देशहित से स्वहित की ज्यादा परवाह है। हमारी भारतीय संस्कृति में तो पूरी वसुधा को एक कुटुम्ब कहकर संबोधित किया गया है। भारत ने विश्व को सदा ही परोपकार का संदेश दिया है।

कर्तव्यपरायणता अर्थात् सभी लोगों द्वारा अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करना। यदि किसी भी देश के नागरिक चाहे वे विद्यार्थी हो शिक्षक हों, पालक हों, नेता हों या आम जनता हो सभी आने–अपने कर्तव्यों का निर्वाह सुचारू रूप से करते रहें तो उस देश को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता। हमारा देश भारत तो इस दौड़ में सबसे आगे होगा।

किसी लालच के कारण या किन्हीं अन्य कारणों से जब मनुष्य आत्म संयम को खोता है व इसके साथ–साथ वह इंद्रिय दमन भी नहीं कर पाता तो वह अन्जाने में अपने राष्ट्र के पतन में अपना सर्वाधिक योगदान दे देता है। अतः देशहित में नागरिकों को आत्मसंयमी होना बेहद आवश्यक है।

मनुष्य का जीवन नदी की धारा के समान है व ठहराव मौत है। जीवन का उद्देश्य आगे बढ़ते रहने में ही है। इसी में सुख है, आनंद है। एक आम कहावत है–जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। भौतिक सुख–सुविधाओं के कारण हम समय के बिल्कुल पाबंद नहीं रह गए हैं व इसे व्यर्थ गंवा देते हैं। देश व समाज हित में हमें समय की महत्ता को समझना होगा।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए सत्यवादिता बहुत जरूरी है। इसका अर्थ है सत्य बोलना। हमें हमेशा सत्य बोलना चाहिए तथा सच का ही साथ देना चाहिए। कहा भी गया हैः सत्यमेव जयते। अर्थात् सच की ही जीत होती है। सदियों से हमारे महापुरुषों ने अपने आचार–विचारों से भारतीयों को सदाचारी बनने की राह दिखाई परंतु ऐसा लगता है कि आजकल लोगों में सत्य भाषण और सदाचार की भावना समाप्त हो चुकी है। भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए हमें इन भावनाओं को दोबारा जाग्रत करना होगा।

मानव चरित्र को ही नैतिकता का पयार्य कहा जाता है। एक समय था जब भारत नैतिकता व सच्चरित्रता से ओत–प्रोत था पंरतु इसके विपरीत यदि आज हम अपने देश की राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों को देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि चारों और भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी,

भाई भतीजावाद, सांप्रदायिकता तथा आलस्य आदि का बोलबाला है, इसी वजह से विश्व में हमारी छवि धूमिल हुई है। आज हमारे देश के पतन का एकमात्र कारण है जीवन मूल्यों की रिक्तता अथवा नैतिक मूल्यों की हीनता।

अतः स्पष्ट है कि देश का हर व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतार लेगा तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः विश्व में सिरमौर बन जाएंगे और हमारा देश भारत पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन हो जाएगा। ✿

जहां चाह, वहीं राह

◈ 'kkfyuh dekjh 10वीं
विद्या भारती चिन्मय विद्यालय
टेल्को कॉलोनी, छत्तीसगढ़

पाश्चात्य संस्कृति की लोकप्रियता भी हमारे पिछड़ेपन का एक बिन्दु है। अतः इस संस्कृति का मोह-भंग करना जरूरी है। बिना परिज्ञान के किसी और की सभ्यता को अपनाना सही नहीं होता। संस्कृति का वास्तविक रूप तो देश में रहने वाले लोगों की वेशभूषा में निहित होता है, वहां की परम्परा व भाषा में निहित होता है।

Òkrत, राजा भरत द्वारा दिया गया अमूल्य और अमिट नाम जो सदैव स्वर्णाक्षरित रहा है। इसके कई और नाम हैं जो लोकप्रिय हैं जैसे हिन्दुस्तान और सोने की चिड़िया। इस देश को सोने की चिड़िया कहने को नहीं कहते। जिस तरह हमारे कार्य के पीछे कोई उद्देश्य होता है, उसी प्रकार यह नाम शौर्य और समृद्धि का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि भारत की अतुलनीय गाथाएं विश्व प्रसिद्ध हैं।

यहां जन्में कई महान गुरुओं ने विश्व को शांति और संस्कृति का पाठ पढ़ाया है, अतः इस प्रदेश को गुरु कहना अनुचित नहीं है। भारत गुरुओं का प्रदेश माना गया है। इसने यूं ही इन विविधताओं में विजयश्री प्राप्त नहीं की। कठिन परिश्रम से हमारे पूर्वजों ने इसकी स्थापना की परंतु आज हम उस अभिमान को मिट्टी में मिलाते जा रहे हैं। ऐसा क्यों? हमने विचार करने की कोशिश ही नहीं की या अगर की तो अमल नहीं किया। नहीं देखा कि विश्व गुरु वही है जो शिष्ट हो, संस्कारी और गुणवान हो, जिसकी सोच सबसे परे हो और अत्यंत महत्वपूर्ण जो स्वार्थ रहित हो, अर्थात् भ्रष्टाचार रहित हो।

समय बड़ा बलवान है, यह कथन भी सिद्ध है। समय के साथ चलते–चलते और प्रतीच्य संस्कृति के संदर्भ में आकर इतिहास का राजशीर्ष धीरे–धीरे झुकने लगा है। इसके संयोजक के उपरान्त आज हमारा एकात्म भारत दिशाहीन होता चला जा रहा है। हर प्रकार से तृप्त यह हिन्दुस्तान आज अपनी सोच में वृद्धि नहीं कर पा रहा। आज हम ऐसी दुरुह राहों पर खड़े हैं कि उनका चयन करना अत्यंत दुर्लभ है। हमें मन की एकाग्रता से उपभोक्तावाद को त्यागना होगा और यह आयास से ही संभव है।

हम आज भाईचारे का अर्थ भूल रहे हैं। जब हम अपने में ही एकत्रित नहीं तो इस देश को एकजुट कैसे करेंगे? अतः सामूहिक रूप में परिवर्तन अनिवार्य है। राज्यसी बंटवारे, पारिवारिक झगड़ों और धर्म, जाति और प्रांत के दैनागत और प्रज्ञापित क्लेशों से हमें उभरना होगा तभी हम देश में शांति जगा पाएंगे। विश्व गुरु बनना मोतियों की माला पिरोना है जिसका हर मोती एक–दूसरे को सहारा देता रहता है। भाईचारे का मोती सदाचारी भावना और संस्कृति को प्रेरित करता है।

पाश्चात्य संस्कृति की लोकप्रियता भी हमारे पिछड़ेपन का एक बिन्दु है। अतः इस संस्कृति का मोह–भंग करना जरूरी है। बिना परिज्ञान के किसी और की सभ्यता को अपनाना सही नहीं होता। संस्कृति का वास्तविक रूप तो देश में रहने वाले लोगों की वेशभूषा में निहित होता है, वहां की परम्परा और भाषा में निहित होता है। हमें हमारी संस्कृति पर सदैव यह विश्वास रखना चाहिए कि इसकी भव्यता और संपूर्णता आलौकिकता से परिपूर्ण है। इसकी लोकप्रियता का संपूर्ण दायित्व हमारे कंधे पर होता है। संस्कृति के हर परिप्रेक्ष्य का परिपालन करना हमारा कर्तव्य ही नहीं हमारा संकल्प और गर्व भी होना चाहिए।

कोई भी देश की संस्कृति उसका अनोखा भूषण है। वह हर दूसरे से भिन्न होती है। अतः हमें यह बिल्कुल नहीं समझना चाहिए कि हमारी संस्कृति अप्रतिमा है, विपरीत हमें सदैव उसे और निखार कर विःशेष करना चाहिए, जिससे उसकी छटा चहुं ओर बिखर सके।

वर्तमान समय में विश्व में देशों का तारतम्य प्रतिभागियों से भरा है।

इस सबसे आगे हमें केवल विज्ञान ही पहुंचा सकता है। कई कल्पों पूर्व से ही भारत चिकित्सा क्षेत्र में पारंगत था। आज हम विज्ञान में आगे हैं, किन्तु अव्वल आने के लिए कठिन परिश्रम और दैविक क्षमताओं की आवश्यकता है। भारत के विज्ञान ने न केवल चिकित्सा जगत अपितु अंतरिक्ष और अन्य कई वैज्ञानिक क्षेत्रों में उपलब्धियां प्राप्त की हैं किन्तु अधिक सफलता और यश प्राप्त करने के लिए आत्म विश्वास की शायद कमी है, अतएव भारतीयों को अनुप्राणित करने की आवश्यकता है जिसके उपरान्त कई बच्चे पढ़कर भारत के उज्ज्वल भविष्य के सहायक बनेंगे।

विश्व में अनेक वैज्ञानिक आविष्कार शेष हैं। हमें निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहना होगा। हमें विनाशकारी खोजों से दूर हटकर मानव सभ्यता को सजाने व संवारने वाले यंत्रों की खोज करनी चाहिए। वैज्ञानिक प्रगति हमारे कृषि और उद्योग के क्षेत्र का पाथेय बनें। संस्कार, शिष्टाचार, विज्ञान व मानवता के साथ–साथ स्वार्थ रहित आत्मा भी चाहिए देश की उन्नति के लिए। निःस्वार्थ वही है जिसकी भावना केवल उससे न जुड़कर उसके देश की उन्नति के लिए हो। जिस देश की जनता स्वार्थ से परिपूर्ण हो वह आत्मोत्कर्ष की चरम सीमा कभी पार नहीं कर सकती। वह केवल नृशंस और एक विभिषिका बनकर रह जाती है।

देश की डोर केवल सरकारी कर्मचारियों और बड़े उद्योगपतियों के हाथों में नहीं, उससे अधिक उसकी जनता के हाथों में होती है। छोटे–छोटे अशिष्ट और असभ्य गलतियों की तख्ती बढ़ते–बढ़ते भ्रष्टाचार का रूप ले लेती है। हमें केवल यह याद रखना चाहिए कि देश हमारा है, उसकी देखरेख व उन्नति हमारा दायित्व है। गुरु होने की एक और विशेषता यह है कि वह कभी भी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझकर अहंकार के मद में चूर नहीं होता है। जिस प्रकार एक पेड़ फलों से लदकर झुक जाता है, उसी प्रकार गुरु भी ज्ञान की पराकाष्ठा तक पहुंचकर, और ज्ञान प्राप्त कर दूसरों तक पहुंचाने की लालसा सदैव जगाए रखता है।

अगर उपयुक्त सभी गुण वापस उसी प्रकार विद्यमान हो गए जैसे वे सदियों पहले थे तो भारत को पुनः विश्व गुरु बनने से कोई भी नहीं रोक पाएगा। यह इतना कठिन नहीं है क्योंकि जहां चाह, वहां राह। ✿

शिक्षा पद्धति को सुधारना आवश्यक

अगर भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है तो सबसे पहले यहां की शिक्षा पद्धति को सुधारना होगा और शिक्षा हर वर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य करनी होगी। इस पर भारतीय सरकार का योगदान ही सबसे महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि अगर सरकार इसके लिए कुछ कठोर नियम बनाती है तो लोग उसे अवश्य मानेंगे और अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजेंगे।

◈ **foodkuUn** 10वीं
भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर
सै.–7, नोएडा, उत्तर प्रदेश

foश्व गुरु से तात्पर्य है जगद्गुरु अर्थात् ऐसे गुरु जिनकी चर्चा पूरे विश्व में होती है। यह पदवी भारत को कई वर्ष पूर्व मिल चुकी थी। पर अब हालात एवं शिक्षा प्रणाली खराब होने के कारण यह पद भारत से छिन गया है। इसलिए यह भारतीयों के लिए एक सवाल है कि भारत पुनः विश्व गुरु कैसे बने? बहुत वर्ष पूर्व भारत में ऐसे गुरु हुआ करते थे जो अपने ज्ञान से पूरे विश्व को चौंका देते थे, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण नाम हैं–आर्यभट्ट, रामनुजन, सी.वी. रमन, सतेन्द्र नाथ बोस आदि। ये भारत के ऐसे जाने–माने वैज्ञानिक रहे, जिन्होंने छाप पूरे विश्व पर छोड़ी।

उपभोग के पीछे चलने के कारण एवं पश्चिमी संस्कृति को अपनाने के कारण यहां की शिक्षा प्रणाली कमजोर होती जा रही है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच का रिश्ता केवल पैसों तक सीमित होता जा रहा है। शिक्षक सोचता है कि उसे पढ़ाने के लिए अधिक से अधिक पैसे मिले और विद्यार्थी चाहता है कि उसे कितने भी पैसे लगाने पड़े पर वह पास हो जाए। इन सभी के कारण हमारी शिक्षा प्रणाली कमजोर पड़ती

जा रही है। भारत में असमान शिक्षा होने के कारण और गरीब वर्ग के न पढ़ पाने के कारण यहां की शिक्षा और कमजोर होती जा रही है।

लोग सोचते हैं कि जो विद्यालय अच्छे से सजा है वही सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है। पर यह गलत है क्योंकि स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि "विद्यालय केवल ईंट, पत्थर, सीमेंट आदि से बना मकान नहीं होता, इसके तो मुख्य स्तम्भ गुरु होते हैं जो विद्यार्थी को अपने ज्ञान से शिक्षित करते हैं और शिक्षक सबसे ज्यादा खुश तब होता है जब उसका विद्यार्थी आगे चलकर कोई बड़ा काम करे और लोग उसके मार्गदर्शक हों।

भारत की कुछ वर्ष पूर्व की पढ़ाई और अभी की पढ़ाई में काफी अंतर आ चुका है। पहले विद्यार्थी आश्रम में पढ़ते थे और हर प्रकार की सुख सुविधा का ख्याल खुद रखते थे। तब शिक्षक किसी के साथ भेदभाव नहीं करते थे। अभी का समय पहले से बिल्कुल विपरीत है अर्थात् आश्रम की जगह विद्यालय हो गए जहां लोग ए.सी. की सुविधा व केवल पढ़ने एवं खाने से मतलब रखते हैं। इस समय का जो रिश्ता छात्र और शिक्षक के बीच है, वह वहुत ही कमजोर है। कई छात्र बुरी संगत में पड़ने के कारण गलत रास्तों को अपना लेते हैं जो आगे चलकर उनके लिए काफी हानिकारक बन जाता है।

अगर भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है तो सबसे पहले यहां की शिक्षा पद्यति को सुधारना होगा और शिक्षा हर वर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य करनी होगी। इस पर भारतीय सरकार का योगदान ही सबसे महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि अगर सरकार इसके लिए कुछ कठोर नियम बनाती है तो लोग उसे अवश्य मानेंगे और अपने बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजेंगे। साथ ही विद्यार्थी के मन में शिक्षक के प्रति ऐसी सम्मान भावना पैदा करनी होगी जिससे वह शिक्षक का आदर करे और उनके द्वारा बनाए गये रास्ते पर चले।

विश्वगुरु बनने के लिए यहां के छात्रों में मानसिक एवं शारीरिक विकास बहुत आवश्यक है। भारत में एक गंभीर सवाल यह भी है कि यहां पर सबसे अधिक बच्चे कुपोषण का शिकार बनते हैं जिसके कारण भावी

पीढ़ी कमजोर पड़ रही है। सरकार को इसकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि बच्चे स्वस्थ बनें और भावी भारत की सेवा में अपना योगदान दे सकें। भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए देशप्रेम की भावना भी विद्यार्थियों के मन में पैदा करनी होगी। अगर सरकार भी ऐसा कार्य करती है तो जल्द ही भारत को पुनः विश्वगुरु का पद मिल जाएगा।

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु यहां के सभी धर्म–जाति और लिंग के लोगों को साथ लेकर चलना होगा जिससे भारत का पूर्ण विकास हो सके। जैसे कि राजा राममोहन राय सामाजिक बुराइयों को मिटाकर तथा कमजोर लोगों को साथ लेकर आगे बढ़े जिसकी वजह से उस क्षेत्र का काफी विकास हुआ।

समाज को साथ लेकर चलने वाले गुरुओं में कुछ महत्वपूर्ण गुरु रहे हैं जिनमें विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, द्रोणाचार्य, ददीची आदि मुख्य हैं। अगर सभी गुरु और छात्र इस बात का ध्यान रखें और छात्र कड़ी मेहनत करें तो अवश्य ही एक दिन ऐसा आएगा जब भारत पुनः विश्वगुरु कहलाएगा। ✿

बहुमुखी हो शिक्षा का उद्देश्य

◈ vk'krk"k xIrk 8वीं
हिलवुड्स अकेडमी
जी ब्लाक, प्रीत विहार, दिल्ली

भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने के लिए सामाजिक व्यवस्था को फिर से सुदृढ़ करना होगा। मानव-मानव में जातिगत भेदभाव नहीं होना चाहिए। व्यक्ति में सामाजिक भावना का उदय करने के लिए सामाजिक संगठनों एवं केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। समाज में ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-वर्ग भेद की दीवार गिरानी होगी।

çत्येक प्राणी को अपने राष्ट्र, अपनी मातृभूमि से अमिट प्रेम होता है। 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कह कर माता और मातृभूमि को स्वर्ग से भी महान माना गया है। राष्ट्रीय प्रतीक ध्वज, चिन्ह, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत एवं संविधान आदि के प्रति श्रद्धाभाव देश प्रेम के भावों को पुष्ट एवं विकसित करता है। इसी भावना से प्रेरित होकर असंख्य लोगों ने इसकी स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान दिया। यही कारण है मानव के मन में अपने देश का एक अत्यंत भव्य, उन्नत, गौरवमय रूप होता है।

çkphu i"BÒfe% हमारा प्राचीन भारत प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत था। सभ्यता का सर्वप्रथम प्रयास यहीं हुआ। अनेक देशों के लोग यहां आकर अपनी ज्ञान पिपासा को शांत किया करते थे। रामराज्य के उस युग में सर्वत्र शांति और समृद्धि थी। सभी को समान समझा जाता था। भारत सोने की चिड़िया, विश्व गुरु कहलाता था। दूध की नदियां बहती थीं। घृणा, विद्वेष, छल, प्रपंच, स्वार्थ आदि लेशमात्र भी नहीं थे।

समग्रतः भारत सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करता था। विदेशी भी प्रंशसा करते थे। किंतु जैसे कि कहावत है 'सबै

दिन जात न एक समान'–परिस्थितियां बदलीं। द्रविड, हूण, कुशान आदि विदेशी आहताओं ने हमारी सामाजिक तथा धार्मिक मर्यादाओं तथा आस्थाओं पर आघात किया। निरंतर होने वाले बाह्य आक्रमणों ने शस्य–श्यामला भारत–भू को पैरों तले कुचलने का प्रयास किया। मध्यकाल में आक्रमणकारियों ने इसे लूटा, मान–मर्यादा तथा सम्मान का हरण किया और अंग्रेजों ने आर्थिक रूप से तो देश को कमजोर बनाया ही, साथ ही साथ हमारी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक मान्यताओं को भी आघात पहुंचाया।

lkekftd Lo:i% प्राचीन काल में भारत की सामाजिक व्यवस्था एवं संगठन अत्यंत उच्चकोटि के थे। सुदृढ़ सामाजिक मूल्य व मान्यताऐं हमारे राष्ट्रीय जीवन की रीढ़ थे परंतु मध्यकाल से समाज जाति–प्रथा के जाल में उलझता चला गया। भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने के लिए सामाजिक व्यवस्था को फिर से सुदृढ़ करना होगा। मानव–मानव में जातिगत भेदभाव नहीं होना चाहिए। व्यक्ति में सामाजिक भावना का उदय करने के लिए सामाजिक संगठनों एवं केन्द्रों की स्थापना करनी होगी। समाज में ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, जाति–वर्ग भेद की दीवार गिरानी होगी।

ufrd Lo:i% भारत में दिन प्रति–दिन नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। भारत को विश्वगुरु होने के लिए नैतिक दृष्टि से भी समुन्नत होना पड़ेगा। भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय चरित्र की भावना विकसित होनी चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थों के स्थान पर राष्ट्रीय एवं सामाजिक हितों को महत्व देना होगा। परस्पर निष्ठा, कर्तव्यपरायणता, सेवा, सद्भावना, प्रेम, त्याग, भाईचारे आदि की भावना से हर देशवासी को सर्वोपरि होना पड़ेगा तभी हमारी नैतिक मान्यताएं विश्व में अपने उज्ज्वल स्वरूप में विद्यमान होंगी।

lkaLÑfrd Lo:i% हमारे देश की संस्कृति का मूल है–सांस्कृतिक जीवन–दर्शन का सामाजिक होना, चिंतन–शैली के रूप में एकता होना। किंतु दुर्भाग्य से आज देश सांस्कृतिक पतन की ओर जा रहा है। इस स्थिति से अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए स्थान–स्थान पर

सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए जिनका उद्देश्य मानवतावाद की स्थापना तथा विश्व शांति को प्रोत्साहित करना होगा। इन सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा समस्त स्वदेशी तथा विदेशी कलाओं को प्रोत्साहित एवं विकसित करके सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास होगा।

vkfFkd Lo:i% प्राचीन काल में आर्थिक समृद्धि के कारण भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था किंतु सैकड़ों वर्षों की पराधीनता तथा आर्थिक शोषण के कारण स्वाधीनता के 66 वर्षों बाद भी हम निर्धनता के दौर से गुजर रहे हैं। हमारी अर्थव्यवस्था विदेशी आर्थिक सहायता पर आधारित है। आर्थिक रूप से भी भारत को विश्वगुरु होने के लिए भारत के गांवों को नवीन संसाधन उपलब्ध करा कर समृद्ध बनाना होगा। बड़े–बड़े औद्यौगिक नगर बनाकर सभी को रोजगार और आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने होने। व्यक्तिगत पूंजी को जिससे भारत का प्रत्येक नागरिक सुखी और समृद्ध हो, सभी को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध हों।

'kSf{kd Lo:i% प्राचीन काल में भारत शिक्षा एवं कलाओं को प्रमुख केन्द्र रहा है। तक्षशिला, विक्रमशिला, नालंदा प्रभृति शिक्षा केन्द्रों में देश–विदेश के अनेकानेक छात्र भारतीय धर्म, दर्शन एवं साहित्य का अध्ययन करने आते थे। शिक्षा को व्यवसाय न मानकर आध्यात्मिक अनुष्ठान माना जाता था, किंतु आज शिक्षा में व्यावसायिकता प्रमुख हो गई है। शिक्षा केवल उपाधियां एवं नौकरी प्राप्त करने का साधन मात्र बन कर रह गई हैं।

शिक्षा का स्वरूप पूर्णतया सर्वांगीण विकास को महत्व देना होगा। अधिकाधिक छात्रों को व्यावसायिक, औद्योगिक तथा रचनात्मक प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। प्रवेश धन के आधार पर न होकर योग्यता के आधार पर हो। मेधावी और निर्धन छात्रों को आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। विद्यालयों में वैज्ञानिक आविष्कारों तथा शोधों के साथ–साथ नैतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना करने वाले पाठ्यक्रमों का समावेश हो। जहां हम एक बार फिर से विश्व का सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक

दृष्टि से नेतृत्व करने में समर्थ होंगे और भारत फिर से विश्वगुरु के आसन पर विराजमान होगा।

jktufrd Lo:i% स्वाधीनता आन्दोलन का महत्वपूर्ण कारण यह था कि तत्कालीन नेता राष्ट्रीय नेता थे। राष्ट्र और देशवासियों का हित उनके लिए सर्वोपरि था। इसके लिए बड़े से बड़ा त्याग या बलिदान हंसते–हंसते कर देते थे। आज स्थिति सर्वथा विपरीत है।

आज के नेता जनता के हितों की उपेक्षा करके अपनी कुर्सी एवं सत्ता को बचाने के प्रयास में ही दिन–रात संलग्न हैं।

राजनीति में भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, रिश्वतखोरी जैसी बुराइयां व्याप्त है। भारत वर्ष के नागरिकों को आदर्श नेता बनाने के लिए अन्य तकनीकी संस्थाओं की भांति विशेष प्रशिक्षण संस्थान खोलने होंगे, जहां से प्रशिक्षित नेता देश के हितों की रक्षा करते हुए उसे विकास के पथ पर ले जायेंगे। ✿

एक होकर बढ़ना है आगे

◈ **Iku je'k iMky** 11वीं
तिलक नगर कनिष्ठ महाविद्यालय
डोंबिवली, मुम्बई, महाराष्ट्र

गरीबी और महंगाई ने भी हिंदुस्तान में अपनी जगह बना ली है। महंगाई अनेक दुष्परिणामों को जन्म देती है। आज भी महंगाई ने दिनोंदिन आसमान छू लिया है। महंगाई और गरीबी सचमुच दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है जो हमारे भारत को विश्व गुरु बनाने में रुकावटें ला रहा है।

gमारे देश के स्वराज्य के लिए कई महान नेताओं ने जान तक कुर्बान की। इन महात्माओं ने हमें स्वराज्य दिलवाया लेकिन इस स्वराज्य को हमें सुराज्य में परिवर्तित करना एक चुनौती हैं।

स्वतंत्रता पाने के बाद कृषि, उद्‌योग, व्यापार, विज्ञान, शिक्षा आदि क्षेत्रों में भारत ने काफी तरक्की की है। विश्व के विकासशील देशों में भारत का अग्र स्थान है। इसके बावजूद हमारा देश अपनी मूल समस्याओं से मुक्ति नहीं पा सका है। हम लोग इस स्वतंत्रता का महत्व अब तक नहीं समझ पा रहे। हमारा जीवन समस्याओं की धर्मशाला है और ये हमारे देश को विश्वगुरु बनाने में रुकावटें ला रही हैं। इन समस्याओं को हमें समझ कर इन्हें हल करना चाहिए क्योंकि कही न कहीं हम भी इसमें शामिल हैं।

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने से रोकने वाली समस्याओं में निरक्षरता, गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि और प्रदूषण महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। जब पढ़ेगा इंडिया तभी तो बढ़ेगा इंडिया।

निरक्षरता हमारे भारतीयों के लिए एक अभिशाप है। दुख की बात है कि भारत में आज भी साक्षरता की तुलना में निरक्षरता कई गुना ज्यादा है। निरक्षरता के होते हुए देशवासियों में राष्ट्रीयता का प्रबल भाव जागृत नहीं हो सकता। निरक्षरता के अभिशाप से मुक्त होने के लिए सरकार और कई सामाजिक संस्थाएं भरसक प्रयत्न कर रही हैं। सभी बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलने के अधिकार का लाभ उठाना चाहिए।

गरीबी और महंगाई ने भी हिंदुस्तान में अपनी जगह बना ली है। महंगाई अनेक दुष्परिणामों को जन्म देती है। आज भी महंगाई ने दिनोंदिन आसमान छू लिया है। महंगाई और गरीबी सचमुच दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है जो हमारे भारत को विश्व गुरु बनाने में रुकावटें ला रहा है।

जनसंख्या वृद्धि और प्रदूषण भी हमारे देश के दुश्मन हैं। जनसंख्या बढ़ने के कारण ही प्रदूषण हमें गले लगा रहा है। हमारे देश में जनसंख्या के विस्फोट के कई कारण हैं। जनसंख्या और प्रदूषण पर नियंत्रण करना आज समय की सबसे बड़ी मांग है। जनसंख्या रोकने के लिए हमें परिवार नियोजन के आदर्श को अपनाना चाहिए तभी हम प्रगति के पथ पर चल सकते हैं।

भारत के विकास में हमें एक होकर आगे बढ़ना है, अकेले होकर नहीं। एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। एकता न होने पर भारत एक अच्छा राष्ट्र होने के गौरव से वंचित हो जाएगा। राष्ट्रीय एकता कायम रखने के लिए छोटे–मोटे झगड़े भूल कर सिर्फ राष्ट्र के विकास के बारे में ही सोचना चाहिए।

''काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब।।''

हमें आज का काम आज ही करना होगा। इन समस्याओं से हम परिचित हैं। सिर्फ इन्हें हमें जानना नहीं बल्कि उनका हल निकाल कर उन पर अमल भी करना होगा तभी हमारा हिंदुस्तान पुनः विश्वगुरु बन सकता है। समाज भी अपनी समस्याओं को हल करने से मुंह ताकते हैं। 'यह

मेरी जिम्मेदारी नहीं' कह कर मुंह फेर लेते हैं। इसलिए हमें ही देश के प्रति अपने कर्तव्यों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। इस कठिनाई को पार कर के ही हम अपने देश को आगे ले जा सकते हैं। हम इन समस्याओं को पूरी तरह से नष्ट तो नहीं कर सकते लेकिन कम तो कर सकते हैं ना।

समाज में ऊंच–नीच का भेदभाव दूर कर 'हम सब भाई–भाई' इस पर सोचना चाहिए। इन सबके लिए हमें आधुनिक टेक्नोलोजी (तंत्रज्ञान) का ज्ञान होना आवश्यक है। जिसके स्वर्णाक्षरों की अमर गाथा संसार के इतिहास में लिखी गई ऐसा महान भारत हमारा देश आदर्श देश तो है ही फिर भी, भारत को विश्वगुरु बनने के काम में हमें जुट जाना है।

इन समस्याओं की चक्की में आखिर कब तक पिसते रहेंगे हम! हमें सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना हमें अपने देश को पुनः विश्वगुरु बनाना है। यह हमारा ध्येय है और लक्ष्य तक पहुंचना यही हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य भी है। ✿

सबको अपना बना कर चलें

कालचक्र गतिशील है व समय परिवर्तनशील है। इसलिए महान पुरुषों का यह देश भी समय के अनुसार परिवर्तित होता चला गया। पहले विदेशी लोग यहां व्यापार करने को लालयित रहते थे, वर्तमान समय में हम विदेशी सहायता की बैसाखियों के सहारे चलने का प्रयास कर रहे हैं। हम उसे हटाकर, भारत को स्वावलंबन के सहारे आर्थिक संपन्नता की ओर अग्रसर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

◈ ru"kk R;kxh 10वीं
श्रीमती ब्रह्ममादेवी बालिका
विद्या मंदिर
मोदीनगर रोड, हापुड़, उत्तर प्रदेश

lारा संसार में अनेक देश हैं। उन सभी देशों की अपनी–अपनी व अलग–अलग संस्कृति है। उसी श्रृंखला में हमारा देश भारतवर्ष भी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत एक प्राचीन देश है जिसका प्राचीन नाम आर्यवर्त था अर्थात् ऋषियों का देश। इस नाम से यह आभास होता है कि यह देश विश्व–सभ्यता का जनक है। इसी धरा ने अध्यात्म का पाठ समूची मानवता को पढ़ाया व ज्ञान, भक्ति, कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित की। भारत के हर क्षेत्र में अनेक महान्, विद्वान, वैज्ञानिक, योद्धा, ऋषि, दार्शनिक, साहित्यकार एवं कवि हुए। महान उर्दू कवि इकबाल ने ठीक ही कहा है:

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा,

fo'o&lH;rk dk tud% भारत विश्व–सभ्यता का जनक है। वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, गीता, रामायण जैसे पवित्र व महान ग्रंथों की रचना भी भारत में ही हुई है। विज्ञान के क्षेत्र में भी जगदीश चन्द्र बसु, गणित के क्षेत्र में आर्य भट्ट, नारायण पंडित आदि व चिकित्सा विज्ञान में पंतजलि, चरक तथा धन्वतरि व कवि के रूप में महर्षि वाल्मीकी,

वेदव्यास, कबीर, सूर आदि। दानवीर दधीचि व योद्धा के रूप में भीम, अर्जुन तथा भगवान के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज श्री कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी आदि पैदा हुए जिन्होंने अपने कार्यों से भारत का नाम दुनिया में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाया।

निःसंदेह भारत महापुरुषों, देवी–देवताओं की जननी रहा है। यह देश प्राकृतिक दृष्टि से भी खुशहाल रहा है। गंगा जैसी पवित्र नदी जो कि पौराणिक कथाओं से संबंधित है, वह इसी देश में बहती है। भारत देश शुरू से ही आध्यात्मिक रहा है जिसने दुनिया को वेद, पुराण, संस्कार आदि दिए हैं। जो मनुष्य को मुक्ति का रास्ता दिखाते हैं रामायण, महाभारत व गीता आदि धार्मिक पुस्तकें मनुष्य के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करती हैं।

egku lLÑfr% भारत की सभ्यता और संस्कृति की मिसालें संसार के प्रत्येक देश में दी जाती हैं। हमारा देश विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है। सर्वप्रथम हमारे देश में ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई। मानव सभ्यता का उद्‌भव व विकास भी इसी पुण्य भूमि पर हुआ।

प्रकृति की पूर्ण कृपादृष्टि हमारे प्यारे भारतवर्ष पर रही है, इसलिए उसने इसे शक्ति, सौंदर्य व वैभव से अलंकृत किया है। अब यह हम पर निर्भय करता है कि हम इसका सर्वोत्तम प्रयोग किस प्रकार करते हैं। हमारा भारतवर्ष निश्चय ही गुणों की खान है। प्राकृतिक सौंदर्य से लेकर नैतिकता के क्षेत्र में यह अतुलनीय है। भारत अनेकता में एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अनेक भाषाएं, अनेक धर्म फिर भी हम एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं।

सारांशतः हम यह कह सकते हैं कि हमारा भारतवर्ष भौगोलिक ही नहीं अपितु भावात्मक स्तर पर उत्कृष्ट है, क्योंकि यहां वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति आज भी जीवित है। 'अतिथि देवो भवः' की भावना प्रत्येक भारतवासी के कण–कण में समाई हुई है। हमें अपने देश पर गर्व है। स्वर्ग के सुखों को लुटाने वाली भारत–भूमि के विषय में जितना कहा जाए उतना ही कम प्रतीत होता है।

vkfFkd :i ls lakUu% हम उस भारत का स्वप्न देखते हैं जो कभी सोने की चिड़िया कहलाता है नहीं था। कालचक्र गतिशील है व समय परिवर्तनशील है। इसलिए महान पुरुषों का यह देश भी समय के अनुसार परिवर्तित होता चला गया। विदेशी लोग यहां व्यापार करने को लालायित रहते थे, वर्तमान समय में हम जहां विदेशी सहायता की बैसाखियों के सहारे चलने का प्रयास कर रहे हैं। हम उसे हटाकर भारत को स्वावलंबन के सहारे आर्थिक संपन्नता की ओर अग्रसर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

मेरे सपनों के भारत में सांप्रदायिकता, आतंकवाद व अलगाववाद की प्रवृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। मेरी कल्पना के भारत में तो जीवन के शाश्वत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की गई व लोगों में प्रेम, अंहिसा, सत्य व परोपकार आदि की भावना है। हमने जिस भारत का स्वप्न देखा है, उसमें अफसरशाही भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद व रिश्वतखोरी जैसी बुराईयों का नामोनिशान नहीं होगा।

दुर्बल राष्ट्र का विश्व–राजनीति में कोई स्थान नहीं मेरा स्वप्न है कि भारत एक शांतिप्रिय परंतु सशक्त व सुदृढ राष्ट्र बने जिसके नाममात्र से शत्रु कांप उठे।

mfpr fodkl dsl s% उचित विकास के लिए आवश्यक है कि हम देश की महान परंपराओं को समझें, उसकी विशालता और वैभव में अपना पूरा–पूरा सहयोग दें व उन्हें देखें और समझें तभी सही अर्थों में देश जागृत होगा।

देशभक्ति तो हृदय का स्वाभाविक भाव या प्रवाह है। जिस प्रकार कोई पुत्र अपनी माता की रक्षा करता है, उसके मान–सम्मान का ध्यान रखता है, उसी प्रकार से प्रत्येक देशवासी का कर्तव्य है कि वह देश के सुख व उसकी रक्षा में पूरा सहयोग दे। सच्ची देशभक्ति वह है कि संकटकाल में हम अपना तन, मन धन व सर्वस्व देश के हित में अर्पण कर दें। सभी को देश प्यारा लगता है। अपने देश को प्रेम करते हुए हम विश्व प्रेम और मानव प्रेम की सीमा तक ऊपर उठे, यही भावना सच्चे देश प्रेम की भावना है।

ylr çfrÒk,% आज के भौतिकवादी युग में भारत अपनी पहचान खोता जा रहा है। अतः अब यह प्रश्न उठता है कि हम अपनी पहली अवस्था को पुनः कैसे प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में हमें यह विचारना होगा कि विश्व गुरु कैसे बन सकता है। भारत के विश्वगुरु होने का एक प्रमुख कारण आध्यात्मिकता थी। अतः यदि हम इस भौतिकता से बचकर अपने महापुरुषों, ऋषियों के प्राचीन महाकाव्यों व साहित्य के अनुसार चलना प्रारंभ कर दें तो भारत पुनः विश्व गुरु कहलाएगा।

n'k d çfr dr0;% एक आदर्श नागरिक को अपने देश से स्वाभाविक प्रेम होना चाहिए। इसके लिए उसे देश की महान परंपराओं व संस्कृति को समझना चाहिए। प्राकृतिक वैभव व सुषमा की कद्र करनी चाहिए। देश के प्रति अपने लगाव में निरंतर वृद्धि करनी चाहिए। सच्ची देश भक्ति का परिचय देते हुए हमें संकट के समय अपना सर्वस्व देश–हित में अर्पित करने को तैयार रहना चाहिए। हमें देश में हो रहे गलत कार्यों पर आवाज उठानी चाहिए।

ifo= mnkj Òko% देशभक्ति कोई संकुचित भावना नहीं है। यह देश को एकता के सूत्र में बांधती है। यह तो ऐसी उदार भावना है जिसमें 'जियो व जीने दो' का भाव हमेशा जुड़ा रहता है। हमें इसे अपने स्वार्थ की कालिमा से कलुषित नहीं करना चाहिए। हमें इसे धर्म, भाषा, जाति के नाम पर नहीं बांटना चाहिए। प्रेम से सबको अपना बनाकर चलें। स्वयं विकास करें व दूसरे को भी करने दें तभी विश्वगुरु कहलाने के लायक हमारा भारत हो जाएगा। ✿

यदि कठिन परिस्थितियों के समय हम सभी भारतवासी एक होकर उसका सामना करते तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति भारत के सम्मान पर आंच लगा पाती? हमें यह खोया हुआ सम्मान वापस लाने के लिए अपनी पिछली गलतियों से सीख लेनी होगी। भारत विश्व गुरु तभी बन सकता है जब देश के नागरिक एक होकर इसके विषय में सोचें। हमें आपसी प्रेम और भाईचारे की भावनाओं का विकास करना होगा।

विगत गलतियों से लेनी होगी सीख

◈ **ijo** 9वीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
वसंत कुज, दिल्ली

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।''

eहान उर्दू कवि इकबाल जी की यह पंक्तियां भारत की सभ्यता की भव्यता का प्रतीक है। यह हमें इस बात की स्मृति कराती हैं कि हमारा यह राष्ट्र प्राचीन काल से ही विश्व गुरु का ताज पहने हुए है। संसार के अन्य देश जब अशिक्षित तथा नग्नावस्था में थे, तब हमारा यह राष्ट्र उन्नति के शिखर को छू रहा था। वह भारत ही था जिसने विश्व को उन्नति का पहला पाठ पढाया था। भारत ने ही अध्यात्म तथा ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की थी।

भारत की इस पुण्यभूमि पर आर्य भट्ट, भास्कराचार्य, सुश्रुत जैसे कई विद्वानों ने जन्म लिया जिनकी लगन और परिश्रम के कारण ही सम्पूर्ण विश्व आधुनिकता की ओर कदम बढ़ा पाया। भारत की संस्कृति जैसी उत्तम संस्कृति विश्व के किसी भी राष्ट्र की नहीं थी। भारतवासियों के बीच जैसा प्रेम और भाईचारा था, वैसा और किसी भी देश के लोगों में नहीं था।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' का पवित्र संदेश भी भारत ने ही दिया था। भारतवासियों के आदर्शों तथा सद्‌गुणों के कारण ही भारत को विश्व गुरु होने का सम्मान प्राप्त हुआ था। पर क्या आज भी भारत को सबसे उन्नत राष्ट्र माना जाता है? क्या आज भी भारत को विश्व गुरु होने का सम्मान प्राप्त है?

यदि हम भारत की वर्तमान स्थिति के विषय में चर्चा करें तो हमें यह ज्ञात होगा कि हमारे राष्ट्र की स्थिति इतनी अनुकूल नहीं है। भारत के सिर पर अब विश्व गुरु का ताज नहीं है। प्राचीन काल से ही भारत से यह ताज छीनने के कई प्रयास किये गये हैं। ऐसे ही कई प्रयासों का धीरे–धीरे प्रभाव पड़ने लगा और भारत श्रेष्ठता प्राप्त करने की इस दौड़ में पीछे रह गया। दूसरे देशों ने अपनी चालाकी से भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गये आविष्कारों को अपने नाम से विश्व के सामने रख दिया और सारा श्रेय ले गये।

भारत की इस भूमि से आकर्षित होकर कई आक्रमणकारियों ने इस पावन भूमि पर आक्रमण किया और जो सम्मान हमें सदियों से प्राप्त था, वह हमसे छीन लिया। भारत की वर्तमान स्थिति के लिए केवल इन आक्रमणों तथा षड्‌यंत्रों को जिम्मेदार मानना ठीक नहीं होगा। भारत की स्थिति के लिए कहीं न कहीं हम भारतवासी भी कसूरवार हैं। एक देश के सम्मान की रक्षा करने की जिम्मेदारी उसके देशवासियों की है।

यदि कठिन परिस्थितियों के समय हम सभी भारतवासी एक होकर उसका सामना करते तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति भारत के सम्मान पर आंच लगा पाती? हमें यह खोया हुआ सम्मान वापस लाने के लिए अपनी पिछली गलतियों से सीख लेनी होगी। भारत विश्व गुरु तभी बन सकता है जब देश के नागरिक एक होकर इसके विषय में सोचें। हमें आपसी प्रेम और भाईचारे की भावनाओं का विकास करना होगा। हमें अपने अंदर के भेदभावों को खत्म करना होगा। हमें अपने आप को यह याद दिलाना होगा कि हम सबसे पहले एक भारतीय हैं, और इस देश के अन्य नागरिक हमारे भाई–बहन। अतः भारतवासियों में पल रहे

धर्म, संप्रदाय के भेदभावों का विनाश कर हमें भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने की ओर अपना पहला कदम उठाना होगा।

भारतवासियों द्वारा भारत को विश्वगुरु बनाने के प्रयासों का असफल होने का और एक कारण है। वह कारण है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार की समस्या अन्य सभी समस्याओं से गंभीर है। कहा जाता है कि भ्रष्टाचार एक विकराल नाग है और जिस समाज में यह अपने फन फैला लेता है वह समाज बर्बाद हो जाता है। यह बहुत ही दुख की बात है कि भारत की भूमि पर भी यह अपने फन तेजी से फैलाता जा रहा है।

वर्तमान काल में सभी का जीवन स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। सभी धन प्राप्ति में लगे हुए हैं। सभी लोग धन प्राप्ति में इतने मग्न हो गए हैं कि वे देश की उन्नति से पहले अपनी उन्नति को रखते हैं। यदि हम अपने प्रयासों में सफल होना चाहते हैं तो हमें अपने इस स्वार्थ से मुक्ति पानी होगी। हमें अपना मनोबल ऊँचा करना होगा तथा देश की उन्नति को सबसे अधिक बल देना होगा। यदि हम भ्रष्टाचार रूपी इस नाग से बच जाएं तो हम भारत को विश्व गुरु बनाने के सपने को सच्चाई में बदल सकते हैं।

क्या केवल भ्रष्टाचार से मुक्ति पा लेने से हमारा राष्ट्र विश्व गुरु बन पाएगा? इस प्रश्न का हमें यह उत्तर मिलेगा कि भारत का पुनः विश्व गुरु बनना असंभव है। जब तक भारतवासियों में देशप्रेम की भावना उत्पन्न न हो, जब तक हम देश के हित के लिए सब कुछ न्योछावर न करें, तब तक हम भारत की प्रगति की रफ्तार को बढ़ा नहीं सकते। जिस मिट्टी से हमारी यादें जुड़ी हैं, जिस मिट्टी में हमारा शरीर बना है, जिस भूमि ने अपने सभी वासियों का पोषण किया उसके प्रति हमें भी कार्य करने चाहिए। हमें उन सभी वीर जवानों के आदर्शों का पालन करना चाहिए जिन्होंने भारतमाता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

हमें उसी देश के लिए कार्य करना चाहिए जिसमें हमने जन्म लिया हो। हमें यदि अपने देश को छोड़ किसी और देश से प्रेम है तो हमारा हृदय

पत्थर के समान है। गुप्त जी ने ठीक ही कहा है–''वह हृदय नहीं वह पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

आजकल भारतवासियों की मनोवृत्ति देखकर तो ऐसा महसूस होता है कि सभी के हृदय पत्थरों में परिवर्तित हो गए हैं। वर्तमान में कई भारतवासी अच्छी नौकरी की तलाश में दूसरे देशों में चले जाते हैं और उन देशों की उन्नति के भागीदार बन जाते हैं। देश प्रेम की भावना के विकास से ही हमारा देश श्रेष्ठता प्राप्त करने के इस दौड़ में फिर से वापस आ सकता है।

भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए हमें कई और समस्याओं का भी समाधान करना होगा। भारत में आतंकवाद, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी आदि समस्याओं ने अपनी जड़ें मजबूत कर ली हैं। इन सब से मुक्ति पाने से ही हमारा राष्ट्र विकास की सीढ़ियों को चढ़ सकता है। भारत को विश्व गुरु बनाने का कर्तव्य भारत के नागरिकों का है। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए एकजुट होकर भारत के हित में कार्य करना होगा।

हम भारतवासी ही अपने कर्तव्य का पालन करें और भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए अपना पहला कदम लें। हम भारतवासियों के प्रयास से वह दिन दूर नहीं होगा जब हम कह सकेंगे–''विश्व विजयी तिरंगा प्यारा, विश्व गुरु है भारत हमारा।'' ✿

दिनोंदिन प्रगति से बनेगा विश्वगुरु

आपने देखा होगा कि बड़े लोग जिन्होंने जिंदगी में महान काम किए हैं, वे सिर्फ अपने व अपने देश को ही महान बोलते हैं। भारत सभी को सामान्य रूप से देखता है। आज सभी देश अलग-अलग क्षेत्रों में बंट गए हैं। सभी देश आज एक-दूसरे को हानि पहुंचाना चाहते हैं परंतु भारत सभी देशों को अपने भाई के रूप में देखता है।

◈ lk{kh flg 8वीं
वासवदत्ता विद्या विहार
सेड़म, जिलाः गुलबर्गा, कर्नाटक

gमारा देश ऐसा देश है जहां पर विभिन्न संप्रदाय के लोग रहते हैं। भारत को हिंदोस्तान, आर्यवर्त तथा अंग्रेजी में इंडिया भी कहते हैं। भारत के नागरिक परस्पर एक–दूसरे पर विश्वास करते हैं। किसी व्यक्ति विशेष, समुदाय, संगठन इत्यादि की महानता इस बात पर निर्भर करती है कि उनकी महानता या अच्छे कार्यों का अनुकरण कर कितने लोग समुदाय या संगठन महान बने हैं न कि इस पर कि वह स्वयं कितना महान है।

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है जहां के संविधान में प्रत्येक भारतीय को स्वतंत्रता का अधिकार, समता का अधिकार एवं अन्य मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। भारत को प्राचीन सभ्यता से विश्व गुरु कहा जाता है क्योंकि जब समस्त संसार अंधकार एवं अविश्वास में था तब भारत मनुष्य एवं उसकी पहचान के विषय में जागृत एवं शिक्षा प्रदान करता था। जो मनुष्य अपने आप को महान व देश को महान करार करता है वह असल में न तो महान होता है न ही गुरु बन पाता है।

आपने देखा होगा कि बड़े लोग जिन्होंने जिंदगी में महान काम किए हैं, वे सिर्फ अपने व अपने देश को ही महान बोलते हैं। भारत सभी को सामान्य रूप से देखता है। आज सभी देश अलग–अलग क्षेत्रों में बंट गए हैं। सभी देश आज एक–दूसरे को हानि पहुंचाना चाहते हैं परंतु भारत सभी देशों को अपने भाई के रूप में देखता है।

भारत में देश–विदेश के लोग शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। भारत एक सोने का देश है। यदि भारतीयों को सोने का मूल्य पता होता तो अंग्रेज हमारे भाईचारे, स्वभाव का दुरूपयोग नहीं करते। इसके अलावा भारत में गुणी, शिक्षित लोग रहते हैं जो मृत्यु लोक को जीवित करते हैं।

हमारे मन में एक सवाल जागृत होता है कि यदि भारत का इतिहास इतना अच्छा था तो क्यों आज भारत को अन्य देशों की तुलना में इतनी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। जवाब यह है कि भारतीय सिर्फ रंग रूप में ही भारतीय थे, वे हर चीज के लिए अन्य देशों पर निर्भर रहते थे। परतंत्रता के समय लॉर्ड मैकाले ने कहा था कि ''मैं अंग्रेजी को भारत के राज्यरूप में मान्यता दिलवाना चाहता हूं और हर साल यहां ब्रिटिश के झंडे लहराए जाएंगे।'' परंतु राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसे देश–प्रेमियों ने इसका विरोध किया और हिंदी भाषा को मान्यता दिलवाई।

प्राचीन काल में भारत का व्यापार अन्य देशों में होता था। हमारे देश की अर्थव्यवस्था प्रारम्भ से मजबूत रही है और आज के समय में जब विश्व भर में मंदी का दौर था, जिसका असर अमेरिका, ब्रिटेन पर भी पड़ा, उस समय भी हमारा देश एक शक्तिशाली और मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में था। हमारा देश किसी के सामने झुका नहीं।

विज्ञान के क्षेत्र में भी हमारा देश इतना प्रगति कर चुका है कि विश्व में सबसे पहले हमारे देश के वैज्ञानिकों ने चांद पर पानी की खोज की थी। हमारे देश के वैज्ञानिकों ने अग्नि 5, अग्नि 6, अग्नि–4, जैसी दूर तक मार करने वाली मिसाइलों का निर्माण किया है और पूरे विश्व में अपना नाम दर्ज करवाया है।

आज भी हमारा देश संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा के क्षेत्र में सभी देशों से आगे हैं। अन्य देशों के लोग हमारी संस्कृति को सीखने के लिए आते हैं। भारत का वैश्विक स्तर पर प्रभाव उसकी आर्थिक प्रगति की वजह से बढ़ा है। हमारा देश आज भी विज्ञान, कला, साहित्य, शिक्षा, सभ्यता, अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों में इतनी तेजी से प्रगति कर रहा है कि वह विश्व का गुरु बन सकता है। ✿

कमजोरियों पर विजय बनाएगी विश्वगुरु

◈ xkBhokyk e?kuk v'kkd Òkbl
सेठ श्री प्राणलाल हीरालाल
बचकाणीवाला विद्या मंदिर
खारवेर नगर, सूरत, गुजरात

आचार्य महाप्रज्ञ जी के अणुव्रत वाक्य का पालन करना पड़ेगा कि ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'' व्यक्ति को सुधारने के लिए आध्यात्मिक उन्नति आवश्यक है। आध्यात्कि उन्नति का मतलब आत्मा की उन्नति, भावों की शुद्धि। आर्थिक क्षेत्र को समर्थ बनाने के लिए आचार्य कौटिल्य-चरित नीतिशास्त्र से प्रेरणा लेकर सक्रिय नीतियां अपनानी होंगी।

^^nक्षिण में रत्नाकर समुद्र जिसके चरण–प्रक्षालन कर रहा है, नगाधिराज हिमालय इसके उत्तर में मुकुटमणि की तरह शोभायमान है और जो ब्रह्मर्षि और राजरत्नों से समृद्ध उस भारतमाता को मैं वंदन करता हूं।'' ये पक्तियां भारत के गौरवशाली इतिहास की साक्षी हैं।

çkphu Òkjr fo'ox# जिसके स्वतंत्रता–संग्राम की अमरगाथा संसार के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखी गई है, ऐसा महान भारत हमारा देश है। भारत के भूतकाल का प्रत्येक पृष्ठ भव्य, रम्य एवं समृद्ध है। उस समय हमारे देश में विद्या संपत्ति, बुद्धि संपत्ति, द्रव्य संपत्ति तथा आध्यात्मिक संपत्ति का विकास चरम शिखर पर था। मर्यादा पुरुषोतम राम, आज्ञापालक भीष्म, सत्यनिष्ठ युधिष्ठिर, पराक्रमी विक्रमादित्य आदि अनेक चक्रवर्ती राजाओं ने भारत की भूमि को गर्वित किया है।

रघुकुलगुरु वशिष्ठ, रामायणकार वाल्मीकि, महाभारतकार व्यास, संपूर्ण समुद्र को पी जाने वाले अगस्त्यमुनि, वैदिक संस्कृति के प्रस्थापक शंकराचार्य आदि महर्षिओं की पदरज से यह भूमि पवित्र हुई है। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, उत्तम रामचरित जैसी जग प्रसिद्ध काव्यकृतियां, चरक संहिता,

सुश्रुत संहिता जैसे वैदकीय ग्रंथ, कामशास्त्र का ज्ञान देता हुआ कामसूत्र, महान ग्रंथ नीतिशास्त्र, गणित शास्त्र को प्रकाशित करता हुआ आर्यभट्टीयम् इत्यादि ग्रंथ रत्न हमारे कीर्ति कलश हैं। ऐसे भारत की प्रशस्ति करते हुए डॉ. रमाकान्त शुक्ल कहते हैं:

यत्र मन्दाकिनी पापसंहारिणी
यत्र गोदावरी चारुसन्चारिणी
देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
भूतले भावि तन्मामकं भारतम्।

शौर्य, पराक्रम, द्रव्य, उदारता, हुकता, क्षमा, करुणा से संपृक्त तथा तत्वज्ञान के शिखर पर विराजमान रहकर भारत ने भूतकाल में यथार्थवत विश्वगुरु की भूमिका निभाई थी। हमारे निबंध के शीर्षक में उल्लिखित ''पुनः विश्व गुरु'' शब्द महत्वपूर्ण है, जो सूचित करते हैं कि भारत भूतकाल में विश्व गुरु था।

exyk ,o vxtk dk vkØe.k% 9वीं–10वीं सदी तक शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, राजशेखर, आचार्य मम्मट आदि विद्वानों की विद्वता के ज्ञान का प्रकाश चारों दिशाओं में व्याप्त था। भारत इनकी विद्वता से परिपूर्ण था। किन्तु यह कहते हैं कि *''समय बड़ा बलवान है, नहीं कोई बलवान''* अतः समय के प्रवाह के साथ परिवर्तन का दौर शुरू हुआ। बारहवीं शताब्दी के पश्चात भारत पर मुगल सुलतानों ने आक्रमण किया और भारतीय संस्कृति के पतन की शुरूआत हुई। हुमायूं, अकबर, जैसे बादशाहों ने प्रजा के विकास के कार्य किए, परंतु ज्यादातर सुलतानों ने अपने धर्म की स्थापना को महत्व दे कर प्रजा का शोषण किया और लूट मचाई। मुगल शासन से हमें मुक्ति मिली ही नहीं थी कि फ्रेंच, पोर्टुगीज, डच, अंग्रेज आदि यूरोपियन ने भारत में घुसपैठ की। व्यापार हेतु अतिथि बनकर आए अंग्रेजों ने तत्पश्चात् संपूर्ण भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया और 200 वर्षों तक शोषण, अत्याचार, धर्म–परिवर्तन किया और करवाया। अतः देशजनों में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो गया। इस अत्याचार से भारतमाता को मुक्ति दिलाने के लिए कई महापुरुषों और विभूतियों का जन्म हुआ।

स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि ने प्रजा के नैतिक, भौतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिए और महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल जैसे स्वतंत्रवीरों ने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए प्रचंड पुरुषार्थ किया। फलस्वरूप हमें 1947 में आजादी तो मिली लेकिन अंग्रेजों की कूटनीति के कारण विशाल आर्यवर्त का विभाजन हो गया और भारत तथा पाकिस्तान यह दो राष्ट्र अस्तित्व में आयें। बाद में कोमी हुल्लड़, हिंदू–मुस्लिम अनैक्य, आंतरिक विषवाद की वजह से 1971 में बांग्लादेश भी भारत से विभक्त हुआ। इस कारण विशाल भौगोलिक कद का स्वामी हमारा देश कई टुकड़ों में बंट गया और अपने विश्वगुरु के पद से क्रमशः अवनत हुआ।

Òkjr dh orZeku fLFkfr% अंग्रेज गए पर अपनी निशानी छोड़ गए। अंग्रेजों ने जिस तकनीकी युग का प्रारंभ किया था, वह स्वतंत्रता के पश्चात प्रतिदिन नूतन स्वरूप से विकसित होता गया। साथ ही देश की बढ़ती हुई जनसंख्या में संस्कारों की अवगति हो गई। आज के भौतिकवादी, भोगवादी की उपभोक्तावादी, दृष्टिकोण, ग्लैमर, महंगे शौक, रातोंरात धनवान बनने की संस्कृति के अनुकरण ने भारत में बहुत विसंगतिया और विकृतियों को जन्म दिया है।

iqu% fo'ox# cuus dh vkj ç;k.k% वर्तमान समय में इस भयावह परिस्थिति का सृजन हुआ है, उसका मूल कारण यह है कि हम हमारी संस्कृति एवं संस्कारों को भूल गए हैं। यदि हमें पुनः समर्थ बनना है, पुनः विश्वगुरु का पद प्राप्त करना है तो हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं को और सुसुप्त शक्तिओं को जागृत करना है। व्यक्ति को गुरु बनना हो तो उसमें ज्ञान, नैतिक मूल्य, सद्भावना आदि आवश्यक है। ठीक उसी तरह विश्व गुरु बनने के लिए समस्त देशवासियों में सद्भावना, विश्वबंधुत्व, प्रामाणिकता जैसे आदर्शों से देश–दुनिया को उस दिशा में कार्यरत करना होगा।

आचार्य तुलसी जी के अणुव्रत वाक्य का पालन करना पड़ेगा कि ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'' व्यक्ति को

सुधारने के लिए आध्यात्मिक उन्नति आवश्यक है। आध्यात्मिक उन्नति मतलब आत्मा की उन्नति, भावों की शुद्धि। आर्थिक क्षेत्र को समर्थ बनाने के लिए आचार्य कौटिल्य–चरित नीतिशास्त्र से प्रेरणा लेकर सक्रिय नीतियां अपनानी होंगी। इससे देश की गरीबी, बेकारी, महंगाई आदि समस्याओं का निवारण होगा।

जगद्गुरु कृष्ण की भूमि पर आध्यात्मिक विकास के साथ–साथ युगानुरूप तकनीकि परिवर्तन जरूरी है। देश को महाशक्ति बनाने के लिए हमें तकनीक के साथ संस्कृति का भी समुचित समन्वय करना होगा। इस तरह अद्यतन खोज को देश में आविष्कृत करने के साथ–साथ हमें शांति के कार्यों में भी सतत प्रवृत्त रहना पड़ेगा। इन आदर्श कार्यों में भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने युवापीढ़ी को इस दिशा में कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित किया है। क्योंकि युवा पीढ़ी इस कार्य को सही ढ़ंग से और पूर्ण स्फूर्ति से कर सकती है।

अतः भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए हमें बाहर नहीं स्वयं से ही युद्ध करना होगा। अपने अंदर की बुराइयों और कमजोरियों के साथ युद्ध करके जीत हासिल करनी होगी। अन्याय, अनैतिकता, भ्रष्टाचार आदि की घुसपैठ के लिए खुद की योग्यता के बारे में भी सोचना चाहिए कि दूसरे तो जो हैं सो हैं लेकिन हम कितने दूध के धुले हैं। सच्चा राष्ट्रभक्त बनने के लिए देश की सीमा पर जाकर गोली चलाने की या नेता बनकर नारेबाजी करने की जरूरत नहीं है। सच्चा नागरिक बनना ही देशभक्ति है। जब व्यक्ति का यह आचरण सुधरेगा तभी वह सदाचारी बनेगा। देश में सदाचार के प्रचार से भ्रष्टाचार, कोमवाद, हिंसा, अनैतिकता और अंधविश्वास का जड़मूल से नाश होगा। जब यह परिस्थिति होगी तभी बन पाएगा भारत विश्वगुरु। ✿

विश्व गुरु बनने का मंत्र है तकनीक

◈ J;k flg 10वीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
हडसन लेन, किंगस्वे कैंप, दिल्ली

दुनिया की आर्थिक महाशक्तियां तकनीक के मामले में भी आगे हैं। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत तकनीकी सैक्टरों से ही आता है। तकनीक के विभिन्न आयामों का इस्तेमाल करके हम भारत के भी कई शहरों की कायाकल्प कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर तकनीक की मदद से कृषि उत्पादन को उल्लेखनीय तौर पर बढ़ाया जा सकता है।

,क अरब की आबादी वाला मुल्क भारत, दुनिया की शीर्ष तीन आर्थिक महाशक्तियों में शामिल होने की राह पर सधे हुए कदमों से आगे बढ़ रहा है। लेकिन हकीकत का एक चेहरा और भी है। प्रति व्यक्ति के लिहाज से भारत की औसत घरेलू आय 750 डॉलर है, जो कि सभी 53 अफ्रीकी देशों से भी 20 फीसदी कम है। यही वजह है कि आज भारत की क्षमताओं और इसकी हकीकत के बीच खाई को पाटने की सख्त जरूरत आन पड़ी है। यह न केवल सिर्फ भारत के लिए जरूरी है बल्कि दुनिया की भलाई के लिए भी इसे अंजाम दिए जाने की अहमियत है।

भारतीय कायाकल्प के जरिए ही दुनिया की शक्ल–सूरत में इस लिहाज से आमूल–चूल बदलाव लाया जा सकता है। इससे न सिर्फ क्षेत्रीय भेदभाव मिटेगा बल्कि हर किसी लोगों के जीवन स्तर को भी बेहतरीन बनाया जा सकेगा। वह इसलिए क्योंकि हमारी धरती पर रहने वाले समूचे इंसानों में से हर छठा आदमी इसी देश में रहता है। इस ख्वाब को हकीकत में बदलने के लिए भारत को कुछ चीजों को करना होगा। हालांकि जरूरत हमारी अर्थव्यवस्था के हर पहलू में तकनीकी विकास

की है और इसे ही हमारी सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए प्रमुख हथियार बनाने की है।

दुनिया की आर्थिक महाशक्तियां तकनीक के मामले में भी आगे हैं। अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत तकनीकी सैक्टरों से ही आता है। तकनीक के विभिन्न आयामों का इस्तेमाल करके हम भारत के भी कई शहरों की कायाकल्प कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर तकनीक की मदद से कृषि उत्पादन को उल्लेखनीय तौर पर बढ़ाया जा सकता है।

मेरा मानना है कि कृषि क्षेत्र में एक बार फिर से आर्थिक और सामाजिक विकास का इंजन बन कर उभरने की कुव्वत है। भारत के किसान अर्थ व्यवस्था में खतरे के मुहाने पर सबसे आगे खड़े हैं। वे मौसमी अनिश्चितताएं झेलते हैं, उत्पादन की बिकवाली के उनके पास कोई भरोसेमंद स्त्रोत नहीं हैं। उत्पाद के बदले बेहद कम रकम उनकी जेबों में आती है, संसाधनों की उनके पास उपलब्धता बेहद कम और स्तर बेहद घटिया होता जा रहा है। इन सबसे ऊपर निजी संस्थाओं से कर्जा लेने की सबसे ज्यादा कीमत उन्हें ही चुकानी पड़ती है।

दुर्भाग्य से, उन्हें फसल की कम कीमत, कम निवेश, कम उपज और कम आमदनी के सिस्टम का शिकार होना पड़ता है। संसाधनों की कमी उन्हें हर चीज के लिए झेलनी पड़ती है, चाहे वह जमीन हो, पानी, फसल का पोषण या फसलों की सुरक्षा। यहां एक विरोधाभास है। क्योंकि दूसरे देशों से अगर तुलना की जाए, खासतौर पर अमेरिका और चीन से तो भारत के पास सबसे ज्यादा अनुपात के लिए जमीन है। सच तो यह है कि समूचे एशिया में तो भारत के पास 30 प्रतिशत सिंचाई वाली जमीन है।

हमने औद्योगिक क्रांति के मौके को गंवा दिया और पीछे रह गये। सौभाग्य से हम फिर से दौड़ में शामिल हो गए क्योंकि उपनिवेशवादी शासन से आजादी के तुरंत बाद बने उच्च शिक्षा के संस्थानों, प्रशिक्षित श्रमशक्ति के खजाने ने हमें मालामाल कर दिया। आर्थिक सुधारों ने

हमारी नई पीढ़ी की ऊर्जा शक्ति को अडिग बना दिया और ग्लोबलाईजेशन ने भावनाओं के नये दरवाजे खोल दिये। हमें लोगों को इस नींव को और मजबूत बनाना होगा और दरवाजा खटखटाती संभावनाओं का पूरा फायदा उठाना से कतई चूकना नहीं है।

ज्यादा ऊपज वाली हाईब्रिड फसलों के जरिए हरित क्रांति करके हमने एक ऐतिहासिक काम किया है। लेकिन तब से कृषि में तकनीकी विकास की हमारी रफ्तार सुस्त रही है। आज भारत को सूखे और रासायनिक कारकों से अप्रभावित फसलों के लिए तकनीक के विकास की जरूरत है।

नई तकनीक से भारत के पास समाज की कायाकल्प करने का माद्दा भी है। यह हर व्यक्ति को अलग–अलग तौर पर अपनी सामर्थ्य बढ़ाने में भी मदद कर सकती है। सच्ची ताकत वही है, जिसके जरिये कोई भी व्यक्ति अपनी तकदीर की इबादत में कुछ फेरबदल करने या फिर उसे नया आकार देने की कुव्वत दिला सके।

मेरे विचार से पूरी दुनिया गुट में रचने–बसने वाली शक्ति से हर व्यक्ति विशेष में रचने बसने वाली शक्ति की ओर है। तकनीक की मदद से ही यह बदलाव संभव है। हर शख्स को चुनने, संवाद करने, जुड़ने बनने का केवल एक ही मंत्र है और वह है तकनीक। केवल तकनीक ही हमारी मदद कर सकती है विश्व गुरु बनने में। ✿

हमें हमारे समाज से भ्रष्टाचार को भी रोकना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊंचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो।

जनसंख्या वृद्धि पर रोक जरूरी

◈ efyg[k tkfey 12वीं
कटरा दीना बेग
लाल कुआं, दिल्ली

Òkरत हमारी मातृभूमि है। अपनी जन्म भूमि से सभी को प्यार होता है। भारत विश्व का श्रेष्ठ देश है। इसकी श्रेष्ठता और महानता की घोषणा सदियों पूर्व ही हो गई है। भारत को अंग्रेजों के आने से पहले सोने की चिड़िया भी कहा जाता था। भारत में बादशाहों का भी काफी साल राज रहा है। भारत के आखिरी मुगल शासक बहादुरशाह जफर थे। उनके बाद हमारे देश पर अंग्रेजों ने दो सौ साल राज किया। अंग्रेजों ने भारतवासियों पर बहुत अत्याचार किए। भारत को हर तरह से बदल दिया।

भारत ने स्वतंत्रता तो प्राप्त की मगर उसके साथ–साथ उसका विभाजन भी हुआ। 15 अगस्त, 1947 को भारत ने अंग्रेजों के जाल से स्वतंत्रता प्राप्त की, इसको हर साल हम भारतवासी स्वतंत्रता दिवस के नाम से एक त्यौहार की तरह पूरे भारत में मनाते हैं। भारत में फिर लोकतंत्र आया। विभाजन के बाद भी भारत की संस्कृति एकता के गीत पूरे विश्व में गाए जाते हैं।

भारत ही वह देश है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात किया है। सभी धर्मों और त्यौहारों को मनाने वाला भारत देश एकता का प्रतीक है। भारत की जन्म भूमि पर देश के महान पुरुषों ने जन्म लिया है। आर्य भट्ट जैसे गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य, सुश्रुत जैसे चिकित्सक भारत के हैं पर इन सब के बाद भारत विश्व के अनेक देशों में कहीं न कहीं पीछे रह गया है। इस सब का सबसे बड़ा कारण हम स्वयं ही हैं।

आज आबादी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। भारत स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी जिन अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उनमें से सबसे भयंकर एक विकराल समस्या है जनसंख्या वृद्धि। गरीबी, बेरोजगारी, घटते संसाधन, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं की जड़ यही है। यही समस्या अन्य अनके समस्याओं के मूल में है। इसके कारण नागरिकों का नैतिक पतन होता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय चरित्र की हानि तथा कार्य क्षमता एवं राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ता है।

जनसंख्या बढ़ने के कारण अनेक हैं–छोटी उम्र में विवाह, पुत्र की कामना, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएं, भाग्यवादी दृष्टिकोण, अशिक्षा, जानकारी का अभाव आदि। यही कारण हैं जिन की वजह से भारत आज पीछे है। लड़कियों को लड़कों से कम समझना और उनको घर से बाहर न जाने देना यही तो भारतवासियों की पिछड़ी सोच है जिसकी वजह से भारतवासियों को पूरे विश्व में कमजोर समझा जाता है।

भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरूप भ्रष्टाचार के कारण धुंधला–सा हो गया है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यही है कि इस अर्थ प्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीकों को अपना रहा है। कमरतोड़ महंगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है।

हर दिन हमें भ्रष्टाचार के कितने किस्से सुनने में आते हैं। डाक्टरों को हम भगवान का दूसरा रूप समझते हैं पर वे भी हमारे साथ धोखा करते हैं। यह बात 'स्टार प्लस' पर आने वाले कार्यक्रम 'सत्यमेव जयते'

में काफी अच्छी तरह से बताई एवं दिखाई गई थी। उसमें बेईमानी के बारे में भी दिखाया गया था कि किस तरह फलों–सब्जियों को अच्छा दिखाने के लिए वह खतरनाक और जहरीली दवाईयों का प्रयोग करते हैं। इन्हीं लोगों की वजह से भारत आज वहां नहीं है जहां उसे होना चाहिए।

बदलाव कोई बादल नहीं जो बरसेगा। आज आबादी को ही जागना होगा। हर बार कोई महात्मा गांधी की तरह हमारी सहायता करने नहीं आएगा। आज जरूरत है कि हम वह व्यक्ति बनें जो पहला कदम उठाएं क्योंकि अगर एक व्यक्ति बदलेगा तो समाज बदलेगा और अगर समाज बदलेगा तो सुधार, बदलाव पूरे देश में नजर आएगा। हमें अपनी सोच को बदलना होगा। आज भी कुछ लोग जादू–टोने में विश्वास रखते हैं और पीछे रह जाते हैं। परंपराओं की अंध–आसक्ति ने हमारे विकास को रोक दिया। हमें धर्म के वास्तविक रूप को समझ कर उसका आचरण कर प्रगति की ओर बढ़ना चाहिए।

भारत भूमि अहिंसा की पुजारी है पर पिछले कुछ दशकों से सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवाद का बोलबाला है। कुछ–कुछ दिनों बाद आतंकवादी हमलों के बारे में सुनने में आता है। मासूम लोग मारे जाते हैं। भारत के कई राज्य जैसे–कश्मीर, असम, बिहार आदि आतंकवाद के शिकार हो चुके हैं। अभी कुछ दिनों पहले ही असम में मुसलमानों पर हमलों के बारे में सुनने में आया था। यह सब हादसे भारत की दूसरे देशों पर एक बुरी छवि छोड़ते हैं।

आवश्यकता है इसके विरुद्ध कठोर कदम उठाने की। कहते हैं–''लातों के भूत बातों से नहीं मानते''। अतः आतंकवाद रूपी सांप के फन को कुचलने का हमें पूर्ण प्रयास करना होगा। इस अभियान में देश के प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है।

करोड़ों रूपये लगाकर हम उपग्रह बना रहे हैं, वैज्ञानिक प्रगति में विश्व के महान राष्ट्रों की गिनती में आना चाहते हैं, किंतु गरीबी से भारत का जन भूखा और नंगा है। आज भारत की जनता महंगाई की चक्की में

पिसती जा रही है। महंगाई की खाई भरने के चार उपाय हैं– कर चोरी को रोकना, राष्ट्रीयकृत उद्योगों के प्रबंध तथा संचालन में तीव्र कुशलता, सरकारी खर्चों में योजनाबद्ध रूप में कमी का आह्वाहन, मांग के अनुसार उत्पादन का प्रयत्न।

हमें हमारे समाज से भ्रष्टाचार को भी रोकना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊंचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएं भी सुलभ करानी होंगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगाना अनिवार्य है। यह सच है कि इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गये हैं। अनेक समाज सेवी संस्थाएं भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। विवाह की आयु निर्धारित की गई है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़के–लड़कियों पर जोर डालना चाहिए। आज के युग में दोनों के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। एक लड़की के लिए अनेक सुविधाएं दी जा रही हैं, जैसे लाडली स्किल, फिर भी आशानुरूप सफलता नहीं मिल पाई है। यह केवल सरकार ही नहीं अपितु नागरिकों का भी कर्तव्य है कि वे इस क्षेत्र में सजग प्रयास करें।

हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऐसे काम करेंगे जिससे हमारे भारत का सर हमेशा उठा रहे, कभी न झुके। हम स्वयं शिक्षा प्राप्त करेंगे और दूसरों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्साहित करेंगे। अपने समाज और देश द्वारा दिए हुए नैतिक मूल्यों पर आगे बढ़ेंगे। हम विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे और अपने भारत से बुराइयों को बाहर निकाल फेकेंगे। फिर दिन दूर नहीं, जब हम गर्व के साथ कहेंगेः

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा,
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा। ✿

यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि यदि हम अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करेंगे तो ही हम सभी देशों में विश्वगुरु कहलाएंगे। मैं अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती हूं लेकिन मैंने इस विषय को हिन्दी में लिखने का निर्णय किया क्योंकि यह जांची-परखी बात है कि जितना अच्छा मनुष्य अपनी राष्ट्रभाषा में लिख सकता है उतना किसी और भाषा में नहीं।

हिन्दी का करना होगा सम्मान

rTkfLouh ifMr 10वीं
दयानन्द आदर्श विद्यालय
कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश

^**t***ननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।*' जननी व जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठतर होती है। मां जन्म देती है। मातृभूमि लालन–पालन करती है लेकिन जन्मदीयिनी मां से भी ज्यादा महत्व मातृभूमि का होता है, क्योंकि जन्मभूमि अपनी संतान का लालन–पालन ता उम्र करती है।

राष्ट्र मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है। उसके प्रति अनायास ही स्नेह एवं श्रद्धा उमड़ती है। जो व्यक्ति अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं उसके प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करता है, वह कृतघ्न है। जो व्यक्ति देशप्रेम की भावना से रहित है वह निरा पशु के समान है।

भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए हमें जो सावधानियां बरतनी चाहिए वह इस प्रकार से हैं:

- आप सब यह जानते हैं कि हमारे देश में आजकल जो सबसे पहली समस्या है वह है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार एक ऐसी बीमारी या खतरनाक जहर कह लीजिए जो सभी देशों में कूट–कूट कर भरा हुआ है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार एक ऐसा शब्द बन चुका है जिससे समाज

में न केवल व्यक्ति अपितु हम जैसे विद्यार्थी और बच्चे भी परिचित हो चुके हैं।

हमें भ्रष्टाचार को रोकना होगा। जैसा कि सभी लोग कहते हैं कि आज का विद्यार्थी ही कल का नेता है। यदि हमें अभी से ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरणा दी जाए तो यह संभव है कि हमारे देश से भ्रष्टाचार रूपी कुरीति समाप्त हो जाए।

- जिस प्रकार तार के बिना वाणी और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार होता है, उसी तरह नारी के बिना मानव जीवन। इस सच्चाई को बहुत पहले जान लिया था। सभी लड़कियों को अच्छी पढ़ाई मिलनी चाहिए। आज लड़कियां प्रत्येक क्षेत्र में आगे हैं। वैसे तो आजकल लड़के और लड़की में अंतर नहीं समझा जाता लेकिन आज भी कुछ ऐसे रूढ़िवादी लोग हैं जो लड़कियों को न पढ़ाकर उन्हें घर संभालने को कहते हैं। यह गलत है। इसका विरोध सभी को करना चाहिए।

  आजकल कन्या भ्रूण हत्या भी हो रही है। इसे भी हम नारी के विषय में ही लेंगे क्योंकि आज की लड़की ही कल की नारी है। यदि कन्या भ्रूण हत्या को न रोका गया तो लड़कियों की जनसंख्या बहुत कम हो जाएगी। इसलिए लड़कियों को उनका अधिकार मिलना चाहिए। कोई भी लड़की इस अधिकार से वंचित नहीं रहनी चाहिए। यदि प्रत्येक लड़की शिक्षित होगी तो वही सबसे पहले देश की समस्याओं के विरुद्ध खड़ी होगी क्योंकि नारी एक दैवीय शक्ति है जिसे ईश्वर से भी ऊंचा दर्जा दिया जाता है और जिन्हें भगवान भी प्रणाम करते हैं।

- हमें अपने देश से आतंकवाद को समाप्त करना होगा। हमें सभी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाने होंगे। कभी भारत और पाकिस्तान में कोई अन्तर न था। अंग्रेजों के कारण पाकिस्तान और भारत अलग–अलग हो गए। हमें इस अन्तर को समाप्त करना होगा और पाकिस्तान के साथ भी अच्छे संबंध बनाने होंगे तभी आतंक समाप्त होगा और तभी भारत विश्वगुरु बनने की दिशा में पहुंच पाएगा।

- यह बुरी बात है कि आज के युग में हिन्दुस्तान के लोग हिन्दी भाषा में पिछड़ते जा रहे हैं। यह अच्छा है कि हम अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं तथा इसे सीखने की कोशिश कर रहे हैं परंतु अपनी मातृभाषा को हमें उतना ही सम्मान देना चाहिए जितना एक बच्चा अपनी मां से प्रेम करता है। भारत के लोग संस्कृत भी जानते हैं जिसे भारत की ही नहीं बल्कि सभी देशों की जननी कहा जाता है।

  यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि यदि हम अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करेंगे तो ही हम सभी देशों में विश्वगुरु कहलाएंगे। मैं अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती हूं लेकिन मैंने इस विषय को हिन्दी में लिखने का निर्णय किया क्योंकि यह जांची–परखी बात है कि जितना अच्छा मनुष्य अपनी राष्ट्रभाषा में लिख सकता है उतना किसी और भाषा में नहीं।

- आज गरीबी जनसंख्या के कारण बढ़ रही है। हमारी जनसंख्या 125 करोड़ से भी ऊपर है। जहां देखो नौकरी प्राप्त करने के लिए लोगों की एक लम्बी लाईन लगी होती है जिनमें से कुछ ही नौकरी प्राप्त कर पाते हैं और बाकी लोगों का दिल टूट जाता है। इसका कारण है बढ़ती हुई जनसंख्या। अधिकांश बच्चे दो–चार कक्षाएं पढ़कर स्कूल छोड़ देते हैं। गरीब मां–बाप अपने बच्चों की पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते। कई लोग बेरोजगारी के कारण आत्महत्या कर बैठते हैं। अपने देश की बेरोजगारी को खत्म करने के लिए उचित कदम उठाए जाने चाहिए।

- हमें प्रदूषण की समस्या का भी हल सोचना होगा क्योंकि यदि देश का प्रत्येक नागरिक स्वस्थ होगा तो स्वच्छता के कारण हमारी संस्कृति तथा पर्यटन स्थलों को चार चांद लग जाएंगे और इससे भी हमारे देश को विश्वगुरु बनने में मदद मिलेगी।

- महंगाई के कारण गरीब आदमी और आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है। हर चीज के दाम बढ़ गए हैं। पहले तो गरीब व्यक्ति इन सभी चीजों को लेने में समर्थ नहीं लेकिन आज तो आम आदमी

भी इसमें सम्मिलित हो गया है। अतः हमारी सरकार को ऐसा समाधान निकालना चाहिए जिससे न तो किसानों को नुकसान हो और न ही खरीदने वालों को इसलिए इस बात पर गौर कीजिये।

- प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी धर्म से जुड़ा होता है। इस कारण वह अपने धर्म को अन्य धर्मों से बड़ा समझने की भूल करता है। इस भूल के कारण विवाद व वैमनस्य फैलता है और इसे ही साम्प्रदायिकता कहते हैं। जब मानव दानव बन जाता है तो यह दानवता ही साम्प्रदायिकता है। अतः इसे खत्म कर हमें आपस में प्यार बांटना है।

- भारतवासियों में इतनी एकता होनी चाहिए कि कोई भी देश हमारे देश से दुश्मनी नहीं रखना चाहे। हमें अपने भारतवासी भाई और बहनों पर विश्वास होना चाहिए। यदि हम कोई भी काम करें तो एकता से करें। यह सभी समस्याएं जिनका हमने उल्लेख किया है, यह भी एकता से ही खत्म हो सकती है और भारत विश्वगुरु का भी गुरु कहलाएगा क्योंकि ''एकता में बल है।''

अब अंत में मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि आप सब भी इस पर ध्यान दें और लोगों को भी समझाएं। यदि हमारे देश में सभी गुण होंगे तो भारत अवश्य ही विश्वगुरु बनेगा। तात्पर्य है कि भविष्य में भारत ज्योति–स्तंभ की भांति प्रज्ज्वलित होगा तथा संसार के सभी राष्ट्रों का मार्गदर्शक होगा जिससे यह देश फिर से सोने की चिड़िया कहलाएगा। ✿

भारत की सभ्यता और संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है। मानव संस्कृति का आदिम ग्रंथ ऋग्वेद की रचना का श्रेय इसी देश को प्राप्त है। संसार की प्रायः सभी प्राचीन संस्कृतियां नष्ट हो चुकी हैं परन्तु भारतीय संस्कृति समय की आंधियों और तूफानों का सामना करती हुई अब भी अपनी उच्चता और महानता का शंखनाद कर रही है।

कुछ तो खास है भारत में

भव्या 9वीं
आर्य गर्ल्स पब्लिक स्कूल
पानीपत, हरियाणा

भारत एक ऐसा देश है जो सभी देशों से बहुत अलग है। सभी को अपनी मातृभूमि पर गर्व है पर भारत–भूमि तो स्वर्ग से भी महान है। जो भी इस भारत की भूमि पर जन्मा है, वह बड़ा ही भाग्यवान है।

भारत के उत्तर में हिमालय की हिममंडित गगनचुम्बी चोटियां हैं, जिन पर बर्फ चांदी के समान चमकती है। तीनों और से समुद्र जिसके चरण पखारता है। गंगा–यमुना जैसी नदियां जिसके हृदय का कंठ हार हैं तथा जहां सूर्य की किरणें केसर के फूलों की तरह शोभा बरसाती है, ऐसा देश है भारत। हमारा भारत विश्व सभ्यता का जनक है। संसार के अन्य देश जब अशिक्षित तथा नग्नावस्था में थे, तब भी यह उन्नति के चरमोत्कर्ष पर था।

भारत ने ही मानव को सभ्यता का पहला पाठ पढ़ाया। विश्व की प्राचीनतम पुस्तक 'वेद' तथा विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत भी इसी देश की ही देन है। उपनिषद्, पुराण, दर्शन, गीता, रामायण जैसे सभी ग्रंथों की रचना इसी देश में हुई।

हमारा देश भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम–स्थल है। केवल इसी देश में विभिन्न संस्कृति को समान रूप में फलने–फूलने पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक धर्मों, मतों, सम्प्रदायों तथा वेदों को जन्म देने वाले हमारे देश ने भारत की विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात कर लिया है। भारत की प्राचीन वास्तुकला आज के वैज्ञानिकों को विस्मय में डाल देती है। भारतीय कला और कारीगरी द्वारा निर्मित वस्तुएं अनेक देशों में जाती थीं। इसी समृद्धि के कारण यह देश सोने की चिड़िया कहलाता था तथा सभी के आकर्षण का केन्द्र था।

हमारे देश भारत में अनेक मंत्रदृष्टा, ज्ञानी, ऋषि–महात्माओं एवं विद्वानों ने जन्म लिया। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानक, कबीर, विवेकानन्द, गांधी और अनेक महामानवों ने इसी धरा पर जन्म लेकर इसका मान बढ़ाया। इस धरती पर शिवाजी, राणा प्रताप जैसे वीर, हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी, अर्जुन जैसे धनुर्धर, कालिदास, बाल्मीकि, तुलसीदास, सूरदास तथा रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे अनेक कवियों ने जन्म लिया। इस पुण्य भूमि पर आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, जगदीश चन्द्र वासु, चन्द्रशेखर जैसे महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया।

आज विश्व में जो देश शक्ति सम्पन्न हैं, वे ही पूज्य माने जाते हैं। भारत देश संसार रूपी गगन पर एक जगमगाता नक्षत्र है। यह देश धन–धान्य और समृद्धि में पारसमणि पत्थर के समान माना जाता था। संसार में केवल यही एक देश है जहां षड् ऋतुओं का आगमन होता है। गंगा, यमुना, सतलुज, व्यास, गोमती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी अनेक नदियां हैं जो अपने अमृत जल से इस देश की धरती की प्यास शांत करती है।

भारत पर प्रकृति की विशेष कृपा है। यहां पर खनिज पदार्थों का बाहुल्य है। अपनी अपार संपदा के कारण ही इसे सोने की चिड़िया की संज्ञा दी गई है। धन–संपदा के कारण ही हमारा देश विदेशी आक्रमणकारियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है।

भारत की सभ्यता और संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है। मानव संस्कृति का आदिम ग्रंथ ऋगवेद की रचना का श्रेय

इसी देश को प्राप्त है। संसार की प्रायः सभी प्राचीन संस्कृतियां नष्ट हो चुकी हैं परन्तु भारतीय संस्कृति समय की आंधियों और तूफानों का सामना करती हुई अब भी अपनी उच्चता और महानता का शंखनाद कर रही है। इसका कारण यह है कि इस देश की संस्कृति की अपनी आत्मा और परमात्मा की गुत्थियां सुलझाने वाले कोरे दार्शनिक ही नहीं थे, उन्होंने गहराई के साथ खोज की है। संगीत, कला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि के क्षेत्र में भी हमारी उन्नति आश्चर्य में डालने वाली है। संसार का एक बड़ा भाग घुमंतू जीवन बिता रहा था, हमारा देश भारत उच्चकोटि की नागरिक सभ्यता का विकास कर चुका था।

भारत को विश्व गुरु अर्थात सभ्यता एवं संस्कृति का जनक कहा जाता था। विश्व के अन्य देश जिस समय अशिक्षित असभ्य थे तब भी यह उन्नति के चरमोत्कर्ष पर था। भारत ने ही मानव को सभ्यता का प्रथम पाठ पढ़ाया था।

आज के युग में जो लोग पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं, जो लोग आज चांद को छू चुके हैं जैसे–कल्पना चावला, सुनीता विलीयम्स ये दोनों ही हमारे प्यारे भारत की हैं। जिन लोगों ने हमारे देश को आजाद करवाया वे भी हमारे भारत के थे, जैसे चाचा नेहरू, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि। ये सब तो हमारे भारत के लिए मर कर भी अमर हैं।

खेलों के क्षेत्र में हमारा भारत कम नहीं है। आज विदेश में चल रहे ओलंपिक में भी हमारे प्यारे भारत के लोगों ने पुरस्कार जीत कर भारत का नाम रोशन किया है। यदि हम फिर से प्रयास करें तो भारत को दोबारा से उसी स्थान पर लाकर खड़ा कर सकते हैं। ✿

प्रगति पथ पर आरूढ़ है भारत

◈ **vkpy [kjkuk** 9वीं
सेंट सिसीलियास पब्लिक
स्कूल, दिल्ली

भारत एक अत्यंत प्राचीन देश है जो कभी सोने का चिड़िया कहलाता था। यह देश ऋषि-मुनियों, साधु, संतों, महापुरुषों आदि का देश है। स्वयं भगवान ने भी इस देश में अवतार लिया। यह देश देवताओं का भी दुलारा है। इस देश के उत्तर में हिमालय संतरी बनकर खड़ा हैं, अनेक नदियां अपने शीतल जल से इसे सींचती है, अनेक ऋतुएं बारी-बारी से आकर इसका श्रृंगार करती हैं।

;वक ही किसी देश की शक्ति के आधार होते हैं। उनमें जोश और उत्साह होता है। वे अपने जीवन में कुछ कर दिखाना चाहते हैं। जिन्होंने भी देश और समाज के लिए कुछ किया, जवानी में ही किया। राम हो या कृष्ण, बुद्ध हो या महावीर, सभी ने कुछ करने का दमखम जवानी में दिखाया। महात्मा गांधी जीवन के अंत तक लड़ते रहे, क्योंकि उन्होंने जवानी से ही संघर्ष की आदत डाल ली थी।

भारत ने आजादी की कहानी अपनी युवा शक्ति के बल पर लिखी। आज भारत का भविष्य इसीलिए सुरक्षित है क्योंकि उसके पास विश्व में सर्वाधिक युवा हैं। युवक स्वभाव से ही कुरीतियों के विरोधी होने हैं। अतः आज समाज की बुराइयों को समाप्त करने में तथा भ्रष्ट शासन–व्यवस्था को उखाड़ने में युवाओं पर ही भरोसा किया जा सकता है। हमारे भारत में दो दिवस अच्छे से मनाए जाते हैं–एक स्वतंत्रता दिवस, दूसरा गणतंत्र दिवस। महान देश भारत को भी सैंकड़ों वर्षों तक पराधीनता का दुख सहन करना पड़ा था। अनेक महापुरुषों, देश–भक्तों तथा शहीदों के बलिदानों के कारण हमें स्वंतत्रता प्राप्त हुई।

15 अगस्त के दिन हमें प्रण करना चाहिए कि देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए हम अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे। हमें यह भी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम आपसी भेदभाव तथा फूट आदि से दूर रहेंगे, देश की एकता को नष्ट नहीं होने देंगे, राष्ट्रीय तिरंगे की आन, शान और बान को इसी तरह बनाए रखेंगे, शहीदों के पावन बलिदान को कभी न भूलेंगे और देश के महान नेताओं द्वारा बनाए मार्ग पर चलेंगे।

26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था। इसी दिन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। विद्यालयों में भी उत्सव अत्यंत उत्साह से मनाया जाता है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हमें अपने देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता की रक्षा करनी चाहिए तथा आपसी भेद–भाव को भुलाकर देश की उन्नति में अपना सहयोग देना चाहिए।

आज भारत का सूर्योदय काल है। गुलामी की जंजीरों को काटने के बाद वह प्रगति के रथ पर आरुढ़ हो चुका है। आज भारत विश्व का तीसरा बड़ा देश है जो विज्ञान तकनीक और धन–संपत्ति कमाने में बढ़–चढ़कर लगा हुआ है। अब अमरीका, इंग्लैंड आदि देशों को अंग्रेजी पढ़ाने से लेकर खाता–बही बनाने की सेवाएं भारतवासी दे रहे हैं।

उन्नत देशों में हड़कम्प मच गया है कि आने वाले सालों में सारी सेवाएं भारतीय नागरिक ले जाएंगे। अब भारत की कंपनियां बहुत शक्तिशाली बनती जा रही हैं। संसार की सबसे बड़ी स्टील कंपनी का मालिक भारतीय उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल है। रतन टाटा ने ब्रिटेन की प्रमुख स्टील कंपनी को खरीदकर अंग्रेजों को दिखा दिया है कि अब भारत शक्ति स्त्रोत बन चुका है।

भारत त्यौहारों का देश है। यहां वर्ष भर कोई न कोई त्यौहार आता ही रहता है। इन त्यौहारों में भारतीय संस्कृति की झांकी मिलती है। ये त्यौहार हर्ष एवं उल्लास का प्रतीक भी होते हैं। भारत में समय–समय पर मनाये जाने वाले अनेक त्यौहार हमारे नीरस एवं व्यस्त जीवन में उल्लास, उमंग और स्फूर्ति का संचार करते हैं।

भारत एक अत्यंत प्राचीन देश है जो कभी सोने का चिड़िया कहलाता था। यह देश ऋषि मुनियों साधु–संतों, महापुरुषों आदि का देश है। स्वयं भगवान ने भी इस देश में अवतार लिया। यह देश देवताओं का भी दुलारा है। इस देश के उत्तर में हिमालय संतरी बनकर खड़ा हैं, उनेक नदियां अपने शीतल जल से इसे सींचतीं है, अनेक ऋतुएं बारी–बारी से आकर इसका श्रृंगार करती हैं।

सुंदरता की दृष्टि से यह देश अद्वितीय है यहां विदेशी पर्यटक आते हैं तथा यहां के सौदंर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। यहां की अनेकता में एकता को देखकर वे चकित रह जाते हैं। हमें अपने देश पर गर्व है। हमें इसकी संस्कृति पर गर्व है। हमारी अभिलाषा है कि यह दिन–दूनी रात चौगुनी उन्नति करे। प्रत्येक भारतवासी का भी कर्तव्य है कि वह देश की अखंडता और एकता के लिए कार्य करे तथा इसके सम्मान की रक्षा के लिए संकल्प ले। ✿

Literate Children are the future of India

◈ **Raunak Khandelwal** X
St. Joseph's Convent School
Khandwa, Indore
Madhya Pradesh

Politics is the governor of other factors affecting India's dream on becoming ÙWorld GuruÈ though India has not been defficient of powerful and popular political leaders . such as Mahatma Gandhi, Atal Bihari Bajpai, Narendra Modi, APJ Abdul Kalam. etc. India is always criticised for poor political structure. The reason is lack of youngsters. Youngsters are not coming in politics. To improve the condition of political system there should be proper utilisation of right to vote.

About 65 years ago, a new young, promising country was freed from 200 years of British rule and clinged itself independence. At that time the black clouds of cast difference and Regional Ruler's conspiracy covered the sky of young Indian society and main aim of the prominent leader such as Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, B.R. Ambedkar was to end this shameful practises present at the time when the nation desperately needed a united society to overcome the forfeiture that the British rule had done. After the introudction of the constitution of India on 26th January 1950 Indian leaders showed the ray of hope to the people of India by abolishing the practise of caste discrimination, united India as a whole one countryand constitution of India to help this country to become "World Guru".

The various aspects which are considered important for the rise of the country to become a world guru are as follows:

Health of people:

A country like India which has a big dream to accomplish should have healthy & efficient people which can contribute in India's progression on its journey to become a world guru.

Unfortunately Indian are at high risk of diseases like Dengue fever, Hepatitis, TB & Malaria. They are major epidemics which have caused loss of life hugely. The need of the hour is to take serious steps towards these diseases. These steps should be taken to national level as well as on root level and for this we have to spread awareness. Adivasis or village people should be given free vaccination and they should be told how to take care of their health. This can increase in India's growth.

Literacy Rate:

The people who can read & write are considered to increase literacy rate of any country. It reflects its progress and focus towards this issue. The literacy rate of India is 74% which is 10% below than the world standard literacy rate. It is very important to understand that men and women are equal and should have the same right. The literacy rate in India should increase and make India a fully literate country. Government is too helping to make it literate by providing free education. Their efforts include amending constitution to include, right to education as a part of fundamental rights of citizens. Literate children are the future of India. This is also an important factor to make India the world Guru.

Social Equality:

Social aspects of a country deal with the structure of its society and the practises followed in its society. India is a diverse country with more than 1000 castes and 500 tribes, obviously causes discrimination. Nowdays there is not much

discrimination. This benefits the progress of India. The people have to come together. For this purpose government has taken many steps to end the physiological difference. Introduction of MID-DAY-MEAL in which people from all castes sit together to have lunch and often food is made by Dalits. This also helps in making our country a world guru.

Economic Stability:

There is importance of education, unity in society and the goal of the people towards the country but for all of these economic status of the people is very important factor. If a country wants to become a super country then it has to improve its economy. Fortunately India has a very high progressive economy which stands on 11th largest economy in this world. India will have to increase its exports to the world.

The coming of foreign market is good but it should come to India only in ceratin level. Because this foreign market make error in development of Indian market. India is going to become a world power in next 10 years. So India has to increase its economy. Government has tried to increase development by also introduing tourism and such industries which can grow at faster rate than other industries if states have some historical or geographical importance. It is also important factor for India to become world guru.

Political purity:

Politics is the governor of other factors affecting India's dream on becoming "World Guru" though India has not been deficient of powerful and popular political leaders such as Mahatma Gandhi, Atal Bihari Bajpai, Narendra Modi, APJ Abdul Kalam. etc. India is always criticised for poor political structure. The reason is lack of youngsters. Youngsters are not coming in politics. To improve the condition of political system there should be proper utilisation of right to vote.

Also media should play a vital role by pointing out the weakness and the strength of every candidate. By this India could become a world Guru.

Conclusion:

These points highlight only few problems but to become a World Guru India has to solve many problems like terrorism, high population, unemployment, and the way to get rid of these we have to get rid of evils in us. New generation of India has to realise their duty that the old generation has given the independence and now its our turn to once again revolutionise, India and its people to make it a 'World Guru'. ✿

India should aim at better political stability

◈ **Vivek Patel** X
O.P. Jindal School
Rajgarh, Chhattisgarh

Removal of poverty has been one of the major objectives of Indian developmental strategy, but the lack of implementation and high population neutralise all these effort. So India should take a strict action in order to remove poverty and to become a world guru, India needs to be strict in terms of unemployment and should formulate more employment opportunities.

At this point however, it is too early to call India as a world Guru. On one hand India's stable democratic political system, huge middle class population, immense, military clout in South Asia rising fortunes in economy make it a potential power. But, inspite of this India's impressive growth is held back by certain structural factors.

The first challenge facing India is runaway fiscal deficit and some other structural issues in economy. These include freeing India's manufacturing sector from antiquated labour laws, selling state owned assets and using freed up cash for investment in physical insfrastucture. This will help India to strengthen its economy and will help it to be a world guru.

India adopts the coalition practices more than any policy in the world and this coalition government hampers almost half of the developmental decision. So India should aim on better political stability and should aim at concensus reforms.

India's growing HIV/AIDS epidemic could seriously slow

down its economic growth and can threaten the country's public health structure. AIDS has had its most severe effects on most of prosperous parts of the country. So India should take a vigorous action soon to prevent HIV/AIDS from eroding away a large pool of India's inexpensive and skilled labour.

India's relations with Pakistan US and China will be crucial for the peace and stability in India. Continued tensions with Pakistan might prevent India from realising its full economic potential. So India should aim at a pragmatic foreign policy and should let its economic priorities dictate its foreign power. India's economic fortune will also depend on how India manages its relations.

One of the biggest challenges of Independent India has been to bring millions of its people out of abject poverty. In fact every fourth person in India is poor. Also India has the largest single concentration of the poor in the world. Removal of poverty has been one of the major objectives of Indian developmental strategy, but the lack of implementation and high population neutralise all these effort. So India should take a strict action in order to remove poverty and to become a world guru.

In case of India, unemployment in rural and urban areas had led to wastage of manpower resource. As a result people who are assets for the country change to a liability. It had led to a feeling of hoplessness and despair among the youth. It also leads to economic overland and dependent population increases and per capita income also decreases. So India needs to be strict in terms of unemployment and should formulate more employment opportunities.

Although the statistics of India says that India is aiming at self sufficiency in food grains since independence but still a large section of Indian people suffer from food and nutrition

insecurity in India. A large section of Indian population such as landless people, artisans, petty self employed workers and destitutes including beggars are worstly affected by food insecurity. Hence India should largely formulate laws pertaining to availability, accessibility and affordability of food.

Bilateral relations with China are perhaps not as important for India as its relations with US or Pakistan. For the movement both countires have entered into a pragmatic dialogue that puts more emphasis on trade and commerce than political affairs. But as both China and India race to secure energy sources around the globe and flex their naval muscles in Indian ocean region, their rivalry could intensify. So India should aim at a more safer and efficient foreign relationships.

India is an agricultural country. Its progress and GDP largely depend on agriculture. But at times farmers have to suffer huge losses and they also get low prices for their production. Thus India should aim at training for the farmers in modern farming methods. Free and fair subsidies should be provided to the farmers. By these measures India will have a satisfactory balance of primary sector in GDP.

Inspite of all these constraining factors, India's policies embody a blend of pragmatism and nationalism and its goals include both close relations with the nations and recognition as one of the leaders of the multipopular world. India's economic growth and ability relationships will determine the size of international role it crafts over the next fifteen years. It leader's skill in balancing the competing obectives of its foreign policies will help shape the directions taken by India's policy and thus will be a structural foundation for India to be called as—A World Guru. ✿

Poverty is another problem which stares the nation stark in the face. And it is another major roadblock in India becoming a super power. It is estimated that about two third of India's population resides in rural areas. Out of these, 170 million people are poor, more than 21% of them are wallowing in chronic poverty.

Unemployment makes the situation worse

◈ **Deepthi R. Shetty** IX
Prakash Vidyalaya
Maharashtra

When I think of great world guru, certain characterstics and traits come to mind. For someone to be considered a great world guru, they need to have done something special, something that changed society in a major supply. Great leaders are not afraid of change or being shunned by society. When I think of great world guru, I think of Steve Jobs, Apple, CEO because he was passionate about his work. He was inspiring, and he had clear vision where he wanted apple to go.

First, it is important that we discuss what leadership means. According to Weiss (2011), most scholars define leadership as "the ability to influence followers to achieve common goals through shared purposes." For a person to be a great leader, they must have the ability to influence and motivate people to work towards an ultimate goal. But why have some of this ability while others don't? Countless studies have been done on leadership to answer this question with varying theories coming from their studies. The most common theories are the trait personality based theories. I

believe a combination of both type is needed for a person to succeed as a leader. A good leader needs to have certain traits that they are born with and personality characteristic that they can evaluate, develop and improve over time. The trait theories that have been developed to show that people are born with certain traits that allow them to excel as leaders. According to Weiss (2011) contemporary research has added some new traits to long lists created by early researches that ring true for Steve Jobs. These traits include optimism, self confidence and honesty. Although trait theories have been studies for man for years and they are widely accepted. They have not been able to show a strong link between a good ladder.

India has a staggering proportion of illiterate population. The times of India recently brought to light the fact that the number of illiterates in the country outnumber the population of the whole of United States. And our education system does almost nothing to allievate the problem. There are government schools which have nominal fees, added incentives like midday meals but what is lacking is real quality in education imparted. The children whose families are struggling to make ends meet here. For whom survival is the greatest struggle needed to be motivated to continue education and not drop out in between. It is also equally important to realise the school curriculum so that these children, instead of mugging fact which won't come in handy, are imported skills which will help them risk in the society and get employment. Till we do not counter the malice of illiteracy in becoming a superpower but a far fetched dream.

Poverty is another problem which stares the nation stark in the face. And it is another major roadblock in India becoming a super power. It is estimated that about two third of India's population resides in rural areas. Out of these, 170 million

people are poor, more than 21% of them are wallowing in chronic poverty.

Unemployment makes the situation worse. Currently, the unemployment figure looms close to 8.9 million. India should realise that these unemployment can make for good skilled labour and work force, if they are imparted the necessary training education. Such high unemployment rates would breed major discontent in youth and would also propel problems like rising crime.

Not only is India rich with a diversity of people, it is also a plethora of priceless resources waiting to be used judiciously. Such is the vastness of resources that if India were to properly use them, the country would become more or less self sufficient. Our Former President A.P.J. Abdul Kalam in his book 'Ignited Minds' brings to light the fact that India has one of the largest deposits of beryllium ore. Yet instead of processing it an adding value to it, we are exporting it to Japan who processes it and then export to U.S. India has actually imported the finished products of the same ore. India should emphasize on its technological power. This would also give a boost to the dismal employment scenario of the country. Ratan Tata has urged the Prime Minister of our country to stop import of iron ore from other country without value addition.

India has always produced fantastic spiritual leaders who have shown way to the world even today in this era of common turmoil, nations look upto India when it comes to spirituality. If you take about economic leadership, necessary reforms and changes should be implemented and we are ready on our path in becoming an economic leader. There is a need for all of us to persevere with patience. ✿

India has potential to lead the world

◈ **Aishwarya P.K.** X
Vasavadatta Vidya Vihar
Sedam, Karnataka

Role of India in global level is seen reflected in four sets of relationships. India has the potential. Companies of Indian origin are growing. The M.N.C.s have increased their investments in India over the past 15 years, which means investing in India has been beneficial for India and Indian economy. M.N.C.'s have interests in Industries such as all automobiles, electronics, soft drinks, fast food or service such as banking in urban areas.

India has potential to lead the world, covered either by general or special permission of Reserve Bank of India. We agree that the facility of Internet Banking is available intrabank only and no fund.

India and world science, successful operation flooded led to highly increased milk production positioning India as world's larget milk producer. The setting of National Diary Development Board. History of India, anti-Brahman caste platform, Phoolan Devi, a former convicted outlaw, who became world famous as India's Bandit Queen." also successfully ran office. India has many cultures and religions. It has many states with different religions. Historically part of Ancient India is one of the world's earliest urban civilization, along with Mesopotamia. In ancient times the British or the other country's people learnt Sanskrit from Indian gurus. India is the only one country where we can see many different castes and religious people.

Role of India in global level is seen reflected in four sets of relationships.

India has the potential. Companies of Indian origin are growing. The M.N.Cs have increased their investments in India over the past 15 years, which means investing in India has been beneficial for India and Indian economy. M.N.C.'s have interests in industries such as all automobiles, electronics, soft drinks, fast food or service such as banking in urban areas.

There is no doubt that India has what it needs to lead the world. India is rich in flora and fauna. Over 81,000 species of fauna and 47,000 species of flora are found in the country of the estimated 47,000 plants species about 15,000 flowering plants are endemic (indigenous) to India. Among the birds and large animals in India, 79 species of mammals, 44 of birds, 15 of reptiles and 3 of amphibians. Nearly 1,500 plant species are considered endangered. Flowering plants and vertebrate animals have recently become estimated to be 50 to 100 times the average expected natural rate. India is full of forest and wildlife santuaries.

Vision India 2020, globalisation would reach a new height, India being successfully integrated in the world economy. And to go by the trends, this would directly impact on other countires. India has potential vitality and moral leadership of the country.

He said that "India has a potential to lead the world in 2022 with its predicted largest pool of man power.

India's leadership qualities and even companies of Indian origin are growing. There is no doubt that India has what it needs to lead the world. Then there is no doubt that India can become a world guru. ✿

India is a land of learning and progress

◈ **Anju Bhaskaran**
Bhavans Vidya Mandir
Elamakaram, Kochi, Kerala

Educating the huge and growing population of India which by itself is a problem, and ensuring that they contribute to the nation's growth is the toughest bench mark. India will have to accomplish. Much of India's population is therefore engaged in agriculture which contributes to only 16.6% of the GDP while engaging 60% of the total work force available and 70% of the total population is agrarian or rural community.

India is the land of learning—the land of dreams and romance, of fabulous wealth and fabulous poverty, of splendour and rags, of palaces and hovels, of famines and plentitude, of genie and giant and Alladin lamps of tigers and elephants, the cobra and the jungle, the land of hundred nations and a hundred tongues, of a thousand religions and 2 million gods whose yesterday was the date with modernising antiquities the rest of nations—the one sole country under the sun which is endowed with an imperishable interest for alien prince and alien peasants, for lettered and ignorant, wise and fools, rich and poor, bond and free. The one land that all men desire to see and having seen one by even a glimps would not give that glimps for the shores of all the rest of the world combined. THAT IS INDIA!!

India in its glandeur and beauty is itself a land which offers so much to not only its citizens but also to the world. With its rich culture, abundant minerals and geographical structure India is a land which has stood out throughout. It

has not only taught the world about unity in diversity but also shown the world how to live and co-exist with nature. It was in India's Mohanjodaro civilization that the world learned to use the cotton. Our scholars are the one's who gave the decimal system and the inevitable *shoonya* or the zero to the world. The Indian Vedas and puranas have shonya or the zero to the world. The Indian Vedas and puranas have shown and taught the world advance system of governance, administration and warefare.

Our thinkers and astronomers have made actual predictions of weather and star constellations. The ancient Indian doctors were the ones who discovered the many uses of herbs and trees and its soothing effects. The Rulers of this land promoted art and architecture. That is why India also happened to be the country where different forms of dance and music florished and stretched over an area of 3166414 square kilometers. India is a land of learning and progress.

After 66 years of Independence India has come a long way from being described as a dusty, 3rd world country to a shining new land of opportunity. There is however many a things plaguing its developments and thus proving detrimental to its advancment and growth, overcoming which will restore India to her formal glory and teach the world how to keep the morals and values intact while advancing and progressing towards economic prosperity.

The past always leaves a mark on the present and the future. The practises of untouchability, caste-system and slavery had left many sections of the society poor and illiterate. This therefore is the biggest challange we as a nation face. Educating the huge and growing population of India which by itself is a problem, and ensuring that they contribute to the nation's growth is the toughest bench mark. India will have to accomplish. Much of India's population is therefore engaged in agriculture which contributes to only 16.6% of the

GDP while engaging 60% of the total work force available and 70% of the total population is agrarian or rural community. This therefore gives rise to the problem of under employment in turn, leading to a poor standard of living. The government has indeed tried to curb if not eliminate these by bringing forth the compulsory education and even the MGNRGA work scheme, which has helped millions across the nation. Even with its copious rivers and ravines India's total produce of over 245.56 million tons of food grains, hundred of mouths remain unfed. Here again the government has stopped in and enacted schemes like the mid-day-meals and also by being a part of initiatives like WFP. The fiery issues responsible for most of the agitations and disturbances in the society today is corruption. This social evil has brought India the title of 95th most corrupt country in the world. This is indeed a shame but something can be nipped in the bud. If the citizens and politicians alike take steps to eradicate it. But India inspite of all these things has held her head high up and taught the world to overcome all the tribulations with grace and bravery. From being the assistant secretary general for peace keeping operations in the UNO, gold medalist in world chess, Indians have made an impact everywhere and have touched all genres. Our Indian leaders like Indira Nooyi, CEO of Pepsico have taught the world that despite of coming from a humble background it is possible to reach the zenith of success. India has taught the world the concept of Ahimsa, the art of Tyagam and the religion of Dharma. As we continue to grow and progress as a nation we continue to teach the world, inspite of limitations, the path of progress and scientific advancements. Our devoted army, navy and achievements in space & technology has set an example to the world.

India has thus earned the title of the world's 11th largest economy. Thus India is already a world guru. Its only a matter of time before India becomes not only a super power but also a super guru. ✿

There are many politicians in India who are trying to bring such rules which would end corruption & there would be development. India can also develop economy by developing international tourism, exporting works. India can also open companies in foreign countries which would help in economic development. India should make such rule which would help to collect 'black money' stared in foreign countries so that economy will be automatically developed.

Strength respects, strength not weakness

◈ **Rajiv Ranjan Sah** XI
Ganga International School
Hiran Kudna, Delhi

The word 'World Guru' has a vast meaning in it. It means the position having authority & control on the whole world. It means that a country has such a strength that would control on the whole world. It also means that the country is active and is independent of others for economics & have high technological development, have space exploration, nuclear explosion capacity, development of missiles, aircrafts, submarines etc. There are many countries which have such power. They are America, USSR, China, Japan etc. They are frequently checking their missilles. Among them America is world guru but all the other countries can defend that country.

India is also very big country as well as having technological development. India has also the power of space exploration & has sent satellites in space. India has very intelligent persons like Abdul Kalam who developed supersonic target aircraft which would do vertical take off & landing. India has many such persons who have developed sub marines, missiles etc. due to which India seems to be powerful country in the world..

India has also steps in Nuclear development. There is almost all the powers which would help India to defend other countries. There is one saying that "strength respects strength not weakness. In the same sense, a country can become world guru if it has power to defeat other powerful countries.

India has all the powers which gain possibility to become 'World Guru' but there is one weakness i.e. less economic development. As we know that economy is also the infrastructure of country to become 'world guru' because when a country use strength to fight with other country then it must have ability & capability to get rid of any damage caused by other country.

Like Japan which was defeated in 2nd world war when atom bomb was dropped in 'Hiroshima' & 'Nagasaki'. There was great damage & loss of property & life but Japan worked hard & had tried to fulfill the loss. So India also must be like that to become world guru.

A lot of money is required in space exploration, technological development. For the development various tests & experiments are done which require money. So our country India also must have such economic development.

India is not able to develop economically due to corruption. There is corruption in every field of infrastructure of development which had made economy low, for that reasons India would not develop well. For the elimination of corruption from country, there must be such rules in constitution which would prevent corruption. There are many politicians in India who are trying to bring such rules which would end corruption & there would be development.

India can also develop economy by developing international tourism, exporting works. India can also open companies in foreign countries which would help in economic development. India should make such rule which would help collect 'black

money' stared in foreign countries so that economy will be automatically developed.

For technological development there is also the importance of knowledge i.e. good education. To prepare the scientists & intelligent persons to develop country, there is great importance of education. For better education there must be corruption free education, undiscriminated education, there must be population control & there must be proper system of education. Most of the people fall under poverty. So free education system should be started so that there would be more students in technology & development would occur rapidly. Corruption in education should be striktly prohibited. Best teachers should be allowed to teach who would give proper education.

India should have best millitaries to eradicate terrorism & people would not utilize their mind in terrorism & help in national development. Feeling of nationality should be in every Indians.

By the development in education there would be best student to develop technology & by economic development there would be more employment facility & people would be busy in doing their work & there would be sufficient money for experiments on various works.

India is a peace loving country. So India thinks globally & thinking about global warming, development of weapons for fighting should be reduced in the whole world,. So to become world guru India must have technological development, economic development, corruption free country, more educated country, should decrease terrorism, spread trade, should have proper constitution, should have proper system of education as well as corruption free education, well infrastructural development, population control for good education & employment. These all for making country perfect in technology & economic development so as to become "World Guru". ✿

Ignited young minds are powerful resources

◈ **Dileep Balach** XII
Jawahar Navodaya Vidyalaya
Pachpadara Nagar, Barmer
Rajasthan

Technology can help transform multiple areas such as education and training, agriculture and food processing, strategic industries and infrastructure in various fields. In isolation our country is and will continue to be a major producer and consumer of wheat and rice. We need to give much greater attention to post-harvest technologies. If the farmer's hands slacken then even the ascetics state will fail.

What makes a country developed? The obvious indicators are the wealth of the nation, the prosperity of its people and its stand in the international forum. Complete models are also being discussed, debated and used as indices of human development. All of them only present certain facts of living conditions. These statistics do not indicate the long-term sustainability of the quality of life achieved by people.

People and development: Many parameters are utilized to indicate how well people are fed: their overall nutritional status; the availability of good nutrition during various phases of their growth and lives the average life expectancy: the infant mortality rate; the availability of sanitation, the availabity of the drinking water and its quality; the quantum of living space; broad categories of human habitat ; the incidence of various diseases, disorders or disabilities; the access to medical facilities; literacy; the availiability of school and educational facilities; various levels of skills to cope with fast-changing economic and social demands; and so on. It does not make

sense to achieve a developed status without a major and continuing of all Indians who exist today and of the many more millions who would be added in the years to come.

Technology Vision: It is against this background that the TIFAC governing council met on 24th November 1993 with its forty members drawn from industry. R&D establishments academic institutions, government departments and financial institutions debated how TIFAC could contribute to national development. Technology can help transform multiple areas such as education and training, agriculture and food processing, strategic industries and infrastructure in various fields.

What other countries envision for themselves: Believe nothing merely because you have been told it or becasue you yourselves have imagined it. Do not believe what your teacher tells you merely out of respect for your teacher. But whatever after due consideration and analysis you find to be conducive to the good, the benefit, the welfare of all beings, that doctrine, believe and cling to and take it as your guide.

Food, Agriculture and Processing: About 40 percent of our people live below the poverty line today. They face problems of day to day existence with not enough money to buy simple food itmes often not even for the next meal. In the coming years we cannot address our agricultural problem. In isolation our country is and will continue to be a major producer and consumer of wheat and rice. We need to give much greater attention to post-harvest technologies. If the farmer's hands slacken then even the ascetic's state will fail.

Materials and the future: Agricultural products come from biological resources, other (non-living) natural resources give us energy (e.g. petroleum and natural gas), chemicals for daily use (e.g. salt) and various metallic products (e.g. steel copper). Some short term actions require investments by the government and private sectors. To avoid too much of

technical discussion, we have only provided glimpses of possibilites in thirteen areas of modern materials.

We will dig many mines.
And take out gold and other things
And go eight directions to sell these
And bring home many things.

Manufacturing for the future: The presence of traditional Indian skills in medicine, metallurgy, construction, textiles, hydraulics or early ship building was an integral part of our innovativeness in ancient and medieval times. India should start making a concerted effort to capture a share of the market in the newly emerging processes of reliable software for manufacturing healthcare and other applications. We have certain innate strengths. It is naturally very hard to get people to think about the long term vision of a more sustainable world, but it is vital that we overcome our reluctance to make concrete images of such a world.

Developed process: A developed India is not a dream. It needs not even a mere aspiration in the minds of many Indians. It is a mission we can all take up and accomplish. Ignited young minds we feel are powerful resources. This resource is mightier than any other resource on the earth, in the sky and under the sea. We must all work together to transform our 'developing India" into a "developed India" and the revolution required for this effort must start in our minds. A billion people are our resources for this national transformation. This even will inspire the nation. ✿

See for the highest, aim at the highest and you shall reach the highest. But only seeing goal wouldn't work, working towards it is equally important. India is filled with the treasure of spirituality. It is our own mental attitude which makes the world that it is for us. We should try to overcome our weakness by making it our strength. We must be bright and cheerful. If we all Indians have that will power and determination we can achieve the goal of becoming the world's top successful country.

Purity and patience are the essentials to success

◈ **M. Bhagyashri** IX
Arya Gurukul
Vidya Nagar, Nandivali
Kalyan (E), Maharashtra

'A winner always looks for solution in a problem rather than excuses. To make India a winner or world guru we Indians always have to take for solutions for all the problems what we have. Every one talks about population that it is the bottle neck for the growth and prosperity of the country. Here I defer this statement. I strongly believe that population is the biggest strength for the growth of a country. Just imagine about 65% of population is youth in our country, whereas in Japan 60% of population consists of old age people same is the case with many developed countires

India is the one and only country where there is distinct culture and tradition. We celebrate Raksha Bandhan, Holi, Diwali, Ganesh Chaturthi where we spread joy and happiness among each other. India is the only country where a guru, a teacher, a guide, a philosopher is respected by bowing and touching guru's feet and guru showers blessings of a good future, joy and happiness. There is fraternity too in our country, in each citizen of India.

Religion is a foundation of a nation. If this foundation is lacking then the structure of our lives, however seemingly beautiful or impressive, is deemed to collapse under strain. Many foreigners are greatly impressed by the love we have among each other and the traditions we follow. Our country is secular where each religion is given equal importance. This kind of culture is not found in any country and no doubt this is our stength. Our India is sphere headed.

One more important factor I would like to mention here that many Indians are working across the globe at world famous organisations like NASA, Microsoft, Nokia etc in key positions. If all these professionals come together and work for India and its development, no doubt India can become world guru. " We can never lose what is really ours." What the world wants is character. The world is in need of those whose life is burning love and selfless.

"Purity, patience and perseverance are the three essentials to success." And according to me Indians have all these three essentials. India is filled with the treasure of spirituality. It is our own mental attitude which makes the world that it is for us. The great personality Swami Vivekananda says that "Whatever is weak, avoid. It is death." Many such thoughts and sayings have inspired Indians a lot and we are proud to have them in our country. We should try to overcome our weakness by making it our strength. We must be bright and cheerful. If we all Indians have that will power and determination we can achieve the goal of becoming the world's top successful country.

It may take time but if we have that perseverance one day we will definitely reach our goal. That day would make all our Indians proud and enthusiastic. And that day of our goal of India becoming world guru would be the menorable one.

See for the highest, aim at the highest and you shall reach

the highest. But only seeing goal wouldn't work, working towards it is equally important.

Arise ! Awake! And stop not till the goal is achieved. India is a land of spiritual destination. India has to eradicate the corruption which is currently going on in our country. All the poverty should be removed. Everyone should have employment. Then each can live a life of joy and thrill and India will have better and bright future. I feel India has started walking and has reached to some extent on the right path of our goal. Take up one idea, make that idea your life. Think of it, dream of it, live on that idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body, be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way to success and to make India the WORLD GURU. ✿

Corruption is the biggest enemy

◈ **Rahul Gupta** IX
Daisy Dales Sr. Sec. School
East of Kailash, New Delhi

Terrorism is a criminal issue in our country. In India politicians and leaders preparing our coming generation as terrorists for earning money. As we all know India is a democractic country but in India there are several types of castes. The upper castes like Brahmans are torturing still lower castes such as harijans. Still this is a discrimination of castes in India.

India is very much a dramatic country, posseses very much talent. In India there are many inspirational things for other countries but there are also things in India that are worst and need to be removed from India. We all knew it very well that India is a developing country and its resistance to change is in her structure.

Firstly Poverty: It is a threat to our country. There is very much poverty in India. This poverty in India is due to mainly unemployment and inflation. In India population increases day by day but the jobs are very much less in quantity. One of the reasons for poor's unemployment is corruption, poor did not get jobs as riches pay some money and gets most of jobs. Next reason for poverty is that inflation due to the less proudction but more demand, which causes inflation. This inflation proves much harm for them who did work low, works such as household works. This poverty could only be removed from our country when each citizen gets employed and when inflation will be low. Govt. should realise or feel about them who live very poor life.

Corruption: It is the biggest enemy for the progress of India. Corruption is that much spread in India that it can not be removed. Every where if we see them, there is corruption. In schools, in international exams, in govt. works such as in making ID cards, ration cards, or any other case people have to give or pay money before getting it. If we go to politicians' life then their children are very much involved in corruption. They and their children rape women and also murder many humans but they are not to go to jail despite of having huge evidence. They pay some money to police and get free from imprisonment.

Moral Values: India has forgot all its moral values such as patience, honesty, friendship with others. India had very much patience earlier but now India has neither patience nor honesty. As we see Indians, they are self centred, very much selfish, want everything just in seconds but do not try to do hard work. They have adopted western style in culture. Many Indians who have very much talent and if they are not successful due to presence of less facility, they are not satisfied by what they have. Indians are adopting many bad things of others countries such as facebook. Indian students very much use facebook but do not take their parts in studies. If they do not become intelligent in studies, then how India will get progress.

Terrorism: Terrorism is a criminal issue in our country. In India politicians and leaders preparing our coming generation as terrorists for earning money. India becomes violent day by day due to politicians. If India gets free from terrorists and if politicians stop to make our future generation as terrorists, then it will become a peaceful country.

Cast System: As we all know India is a democractic country but in India there are several types of castes. The upper castes like Brahmans are torturing still lower castes such as harijans. Still these is a discrimination of castes in India.

Girl Child or Infanticide: In India most of the people are still not accepting girl child. Most of the Indians are still doing sex determination and kill their girl child in mother's womb. Most of the men are still hating girls to be born. Still in India about 500 girl children are forticide and killed.

Conclusion: Firstly poverty and corruption should be totally removed from India. Poverty could be removed by giving employment and by reducing inflation. Corruption could be removed by making more laws for everyone. Secondly, Moral values and social culture should be adopted by India again. Moral values and social culture could be adopted by respecting our past and detaching from western culture. We should womb about our social culture. Thirdly, Terrorism and caste system should be totally discouraged which make us to be ashamed in our eyes.

Terrorism makes our generation very much violent, it makes our future worst. It only can be stopped if our generation thinks about education and gain knowledge in education and try to give a peaceful lifestyle to their family. Caste system should be removed and there should be upper castes and no lower castes. We should respect each and every man and woman. Only then India can become a world guru. ✿

Terrorism is a criminal issue

India was treated as poor and inefficient nation earlier but now, because of its dominance it extended invitation in every summit meeting and symposium held across globally by diverse institution or governing body, it is no less than in any field. India has made phenomenal headway in every sphere ranging from social, economical, educational, entertainment to political, medicinal, scientific and cultural development in areas it has proved its mettle that too, in very astonishing span of time.

◈ **Deepanshu** XII
Pratap Singh Memorial
Sr. Sec. School
Kharkhauda, Sonepat
Haryana

After covering sixty five years of independence India undoubtedly has sealed a very new and phenomenal height. India was treated as poor and inefficient nation earlier but now, because of its dominance it extended invitation in every summit meeting and symposium helped across globally by diverse institutions or governing body, it is no less than in any field. India is having all those potential to be recognized what a country is known for. India has made phenomenal headway in every sphere ranging from social, economical, educational, entertainment to political, medicinal, scientific and cultural development in area it has proved its mettle that too, in very astonishing span of time. It has really been very hard journey for a country being persecuted and kept under acute slavery for around two centuries yet. India is moving shoulder to shoulder with developed countries of the world.

There was a time when India had nothing in its capacity, it had very negligible influence over countries around it. It was for unpolished intelligent, poor economic state, dilapidated

infrastructure, turmoil social condition, poor educational system, unhealthy political affairs and unsophisticated medicinal & scientific approaches but thanks to phenomenal leadership and intelligent brain emerging out here off late who have become instrumental in making India reach closer to have world guru status.

To make India reach closer to "World Guru" status the evils exist here that are corruption, public sector inefficiency, religious tensions, lack of development, illiteracy, poor infrastructure and shortage that are caused by corrupt leadership. Corruption is said to be the root cause of India's backwardness and its damage caused by corruption is unimaginable. The one major problem India is confronting currently is, pervasive poverty that impedes India's progress in every sector, it has not been able to absolutely tackle the problem inspite of being introduced major five years plans one after another since independence.

Naxal threats, on the other hand is also obstructing the pace, it has consistently weakened the internal security. Another major factor that affects country's growth is of course its system of governance. The leader ruling here will have to do something constructive by sidelining retention and enjoyable power beside patronage. Besides, sans structural change in economy we can not expect it to race ahead from the other fast forward moving countries in the context of research, innovation, risk taking policies and absolute implementation of strategies.

These things in India have become the matter of past now. India is very rapidly & effectively overcoming many ingrained challenges for instance poverty, social injustice, employment problem, scientific backwardness, inferior educational system and economic structure in addition. If India is able to contain or alleviate rural poverty, disease filled urban slum area, poor energy productivity, child mortality rate, flourishing

corruption, then by all means India will overcome China and all other developing countries around it by removing all these challenges. Dignitaries across the country do have discussed and have seen potential of becoming super power. However, many illustrious personalities particularly belonging to economical and political dimension denies India being "World Guru" because of poor economical and political set up.

Apart from weak social educational and scientific fibers there are lobby of intelligentsia who are contented and strongly believe to be approaching superpower status or the world guru status. They say, the implementation of various policies and strategies that too with the nexus of corporate boon and policies could bring some sustainable and salubrious assistance for the country to be super power.

Therefore, if India keeps on moving with its consistent pace side by side to the world's developed countries then the day will not be far away when India will be tagged as World Guru and it will be able to make a long stride owing to its rich and prudent population, huge gross domestic products and high economic growth inclusive of better social fabric. ✿

India is known to be the spiritual teacher

◈ **Narmada** VII
Kendriya Vidyalaya No. 1
A.F.S. Bhuj, Gujarat

Every nation also shows some negative character of ignorance, incapability etc. India came to know the infinity of spirit and then lost it, and again now trying to regain it. Inspite of all the hurdles in the past, by various attacks and disasters also, India became successful to proceed and prosper and develop by adopting the way of spiritual path.

As per history every country has its own positive and negative atributes. For example—finance has the character to show "clarity of thought", Russia shows the sign of "brotherhood of man" and U.S.A. shows practical orgnisationism. And India is known to be the spiritual teacher of the world, which means Guru of the whole world.

Each nation expresses a ray and several rays of truth, knowledge, reflecting the best human character and consciousness. Similarly every nation also shows some negative character of ignorance, incapability etc.

So, perhaps the best way to access the various capabilities of a country in the current world is to examine its prosperity. For this U.S.A. and India can be the best examples, as they represent two extreme characters. On one side U.S.A. shows its material development, on the other hand India came to know the infinity of spirit and then lost it, and again now trying to regain it. Inspite of all the hurdles in the past means,

by various attacks and disasters also, India became successful to proceed and prosper and develop by adopting the way of spiritual path.

India is not only the earth, river, mountain; neither it is the collective names of its inhabitants, nor it is the mixture of its past, present and the characters and the ups and downs in all the movement of happy and sad time or the time of festival, mournings and so on.

India is the only country that in 10,000 years, has n't invaded another country. Of Course, it has invaded culturally. For centuries, it ruled south-east Asia, China, Japan through its mind, culture, science, cosmology and philosophy. Until the 17th century, India was the richest country in the world. There was no confusion about spirituality and materialism going together, because our vedic tradition says that the four goals of life are 'artha' (money) 'kama' (desire) 'dharma' (duty) and 'moksha' (enlightenment.)

Theoretically, India is already the world's Guru with its enriched spritiual thoughts, which India has been practicing from the ancient time. "Raja Joga" is one of the ancient spiritual practices which can help a person gain fullest control upon his own mind.

But practically if somebody observes the political situation and lifestyle of the common people a very close view in this modern time which neither contains spiritual divinity nor healthy material standards which the developed countries do.

Thus it's shame for India that despite being wealthiest with its spiritual knowledge it can't afford to suggest its own population to live the best way of living, So how someone expect that it can teach the whole world something good.

So, accodring to me the question 'how India can become world Guru" seems like "how a jackass can gain a crown." ✿

Proper distribution of wealth is a must

◈ **Amrit Kaur** XI
I.B.S.S. Vidya Niketan
Khandwa Road, Indore
Madhya Pradesh

Poverty, illiteracy, unemployment, violence, indiscipline and disunity are the great hindrances in our path. Unless we have peace, we can't feel safe and happy. Unless we overcome them soon, we can't reach our goal. Till there is threat to world peace, we can't feel safe and happy. Our enemies are working against us in other countires also.

"Where the mind is without fear and head is held high, where knowledge is free into that heaven of freedom, O God, let my country awake. "These words express the ideal picture of my country. India is big and ancient country. There are high mountains, great rivers and vast plains in it. She is the land of Ram, Krishna and Gautam. My country gave birth to Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru and Indira Gandhi, the great personalities not only of India but of the world.

Present Condition: It does not mean that all is well at present. It does not give us a plea to sit idle and sing the songs of our glorious past. There are various problems before our country. These are so complex and giant that a great effort is to be done by everyone of us, if we want that in the 21st century we may be able to stand equal with other advanced countries. Poverty, illiteracy, unemployment, violence, indiscipline and disunity are the great hindrances in our path. Unless we have peace, we can't feel safe and happy. Unless we overcome them soon,

we can't reach our goal. Till there is threat to world peace, we can't feel safe and happy. Our enemies are working against us in other countires also.

India of my dream: Unless all people—whether they live in villages or cities are happy, we can't say that ours is an ideal country. First of all I want that nobody in my country should remain hungry. Essential commodities of life should be plentifully available at cheap rates. Everyone should have enough food, clothing and housing facilitiy.

Progressive nation: My country should always be active. India must make bold advance in Science and Technology. We can bring true socialism only through science and technology. More physical richness will not make the nation great. We will have to make our contribution to cultural richness. We must produce great poets, thinkers and artists. In the olden days, these persons suffered from negligence by the society. The society must encourage advancement in the field of art, literature, dance, painting, etc. In the fields of politics, econmics and social values also, we will have to pay attention. Dirty politics is to be done away with. We must have clean, right, wise and honest politicians. Proper distribution of wealth and property is also a must.

Unity: In India of my dreams, there will be no place for communalism. People of all communities will live peacefully, lovingly and cooperating each other. There will be no quarrels over languages, provincialism and other sectarian grounds.

On the World stage: My country will be the source of inspiration for all other countries of the world. India does not want to treat other nations threateningly. She will be delivering the message of friendship, pear and love.

In short, India of my dreams will be an ideal country in all respect. My people will be truthfull, honest and clear hearted. ✿

Yoga and Meditation are boon to human beings

◈ **Jina Sehgal** XII
Vidyasagar School
Bhicholi Mardana
Indore, Madhya Pradesh

Never underestimate three thing in life. I, me and myself shall be implied regarding our nation enriched with patriotism. We shall and we will rise to the eternal from the very deep roots like of Papaya giving shade to all those who come under its great shadow. We shall celebrate our festivals with more enthusiasm but with just our originality of the Deepak rather than fireworks creating pollution.

India is the country where the fragrance of mogra and sandalwood blossom in every heart. India, the civilisation is eldest of all, the torch bearer. The country where the golden glare of the great Himalayas, the most colourful flowers enrich the flora and the divine lion is the symbol of courage, the tiger as the flash speed carries of power and strength, this is all what makes our country the outstanding nation, whose feet are washed in every stroke enchant the greatness of its diversity.

Our motherland India has taken the greatest biological and social diversity in its sway. The Marathi, Gujarati, Punjabi, Tamil, Telugu and various other languages through being discrete languages integrate through the dialect of the traders and wanderers who in their experiences absorb different kinds of expression of affection and love. The different colours and races may be devoid in our simplicity, savourless that makes the ladies most beautiful and the men most handsome.

We, in our country have many art forms and have embroidered in this vast canvas of rituals. The rituals are the symbols to keep in aware of the heavenly power in our bright minds. The food we eat is the most healthy and our sitting arrangement on grounds gives the digestion a jack. Yoga and the meditation are a boon to the human kinds by the world guru India.

Yoga keeps us fit and the meditation is the peace generator.

Our nation has been the teacher of the world for centuries of human settlement. Aryabhatta invented zero and Chanakya preached the way of getting things right place by making the small things fall on right ones.

The President of USA Mr. Barak Obama has himself quoted that, "India by its education and institutions shall and may rise of the internal in forth coming years. "We shall regain the trust in the good phases of our culture, rather than following the phrase of 'west is best. 'Well' said by a superstar of Indian Cinema "Never underestimate three things in life. I, me and myself shall be implied regarding our nation enriched with patriotism. We shall and we will rise to the eternal from the very deep roots like of Papaya giving shade to all those who come under its great shadow. We shall celebrate our festivals with more enthusiasm but with just our originality of the Deepak rather than fireworks creating pollution. Instead of feeding various needy as following the 'daan'.

We must believe in the ethics of our very own Mahatma Gandhi of fighting against all odds without the use of arms. It is like healing a cancer patient without making him/her under knife. It is our own country which discovered the surgical treatment through *Sushroota*. The first nation which came to be known about the medicinal power of the sacred 'Tulsi' and the turmeric was India. We shall again get back

to the Indian games of kabbaaddi and kushti in the soft oiled mud.

Even our architecture, our art forms, dance forms, canvas art, literature, poetry is unique of all. The songs that rock and the movies that knock intellectually. We have been successful in creating our present, and we shall work for our future.

But we are quite confident about ourselves and the future. Our motherland has been nourishing and nurturing with moral values in her sway. We shall now develop a common belief and confidence to develop and beat the skies regaining the tittle of world guru just by a piece of confidence. Then the world would flutter under the shades of the tricolour of the greatest institution India. ✿

Although India has adapted many western cultures like dressing style, food etc but this doesn't mean that we have neglected our own culture, our own festivals, our own language. We are blessed with the best nature having mountains, beaches, deserts, forests, rivers, wildlifem birdlife, etc. The crown of India 'Kashmir' is said to be the heaven.

India is known for its culture and heritage

◈ **Vaishnavi Gupta** XII
Modern School, Noida
Uttar Pradesh

"INDIA AS THE WORLD GURU". Before continuing I am condemned to firstly clear up on what really means by a world Guru. Starting from the initial point i.e., the early age, medieval age, age of transformation and the Golden era, War time period and latter 20th Century and 21st Century. All along these eras of bonding, disintegration, war, some more disintegration & some more bondings lie the question—WHO IS THE BEST? U.S.A., China, S.A., Europe, Nepal, India and the list goes on. The rising powers have shown new qualities in the past decades. But the most significant changes and developments which have shocked or rather mesmerized the manhood are India & China. Not trying to be prejudiced instead of stricking on to the given topic lets discuss and throw some light upon what has been going on in India. Since the Harappan culture we have had a set of beautiful & articulated culture, heritage and virtues. Then came the Mughal Dynasty into power and Bang! was the change noticed and taken in consideration. Culture and beauty shot

high and the Indian state was flourishing. As named and so very correctly named INDIA was definitely the 'Golden Bird'. Eveything that literally comes into the so called economy at that time was at an extravagant growth rate.

This fact is known by everyone that before the arrival of Britishers, India was called as "Golden bird." But everything changed after that. Britishers not only looted booty from India but this also condemned Muslims to divide India. Though Britishers have built many buildings, monuments and introdced a new language i.e., English but yet it's not true that Indians would be semi-literate without the British. India already had centuries old schools, even centuries old universities and many languages. In fact Sanskrit one of the oldest languages may yet turn out to be 'fountain-head' from which the Indo-European' language, including French, German and English are derived.

Coming to the point, to begin to understand India, one must understand its diversity. There are 22 official languages and over 1600 dialects spoken. Keeping this cultural diversity alive is part of challenge ahead, especially given the even increasing lure of westernisation. India is always known for its culture and heritage. Although India has adapted many western cultures like dressing style, food etc but this doesn't mean that we have neglected our own culture, our own festivals, our own language. Although we have hold on English language but yet I generally prefer our mother tongue 'Hindi'.

India is called Asian Tiger. India is a land of great saints like Guru Nanak, Shri Ram, Shri Krishna and Bhagat Kabir. Many patriots have taken birth on this land like Bhagat Singh, Subhash Chandra Bose, Mahatma Gandhi etc.

We are blessed with the best nature having mountains, beaches, deserts, forests, rivers, wildlife, birdlife, etc. The crown of India 'Kashmir' is said to be the heaven.

India is a democratic country where constitution is made by the people, for the people and of the people. Here everyone is allowed to raise his voice. Indian cities have continued to liberate business regulation.

The thing which should be controlled is population. India has second largest population in this world China has the largest population. That's why Chineese have to pay tax if they plan more than one child. So, mostly the generation of China is old. India does not have such an issue. We have new and fresh generation to create new ideas. Among the finest institutions this country has produced are the Indian Armed Forces. We should be proud of our Defence forces. India has the world's third largest army comprising over 1.1 million men. India is presently growing economically faster than America and Europe. The political conditions are changing very fast and efficiency of Govt. department is increasing rapidly.

India has the world's second largest growing economy just after 60 years of Independence. After nearly 200 years of colonial rule under the British, who in that period robbed India, its vast wealth & heritage. The point is that Americans and British are very proud of their wealth, which is nothing but the looted booty from all their colonies.

As the third largest economy in the world in PPP terms, India is the preferred destination for FDI. Not only this India has strength in telicommunication, information technology and other significant areas such as auto components, chemicals, pharmaceuticals and jewellery. India has everything which can help India to lead the world. The things which should be improved is only hard work and unity. Saying that India can't lead the world, can't be world guru is like saying that a new born child can't walk, but a child learns to walk in sometime. India will also lead the world and will become world guru certainly in some time. ✿

India needs faster pace of growth

◈ **Shivani Parsai** XII
Lav Kush Vidhya Vihar
Indore, Madhya Pradesh

Scarcity may be the mother of corruption in general, but what do you say about politicians who have been found sleeping with notes under the matresses and those who wear currency note garlands made up of tax payer's money and those who accept bribe for raising questions in the parliament and those who openly accept bribe in the name of party fund.

Today India is recognised as an emerging powerhouse by the world community. The phase leading to full transformation may be slow but consistency will lead to the desired goal with multiple problems faced by the nation right from its birth. The survival of democracy in India was always in doubt.

India's Population: India is the second most populous country, with over 1.18 billion people, more than a sixth of world's population. Already containing 17.31 percent of the world's population, India is projected to be most populous country by 2025 surpassing China. India occupies 2.4% of world population. It seems the govt. has stopped all efforts to control the population explosion.

Increasing unemployment: India is facing massive problem of unemployment. The incidence of unemployment is much higher in urban areas than in rural areas. The incidence of unemployment amogst the educated is higher than the overall unemployment. India's performance on this front has

fallen short of target in the past. India's labour force is growing at a rate of 2.5%, but employment is growing only at 2.3%. Unemployed youth is likely to translate his frustration into criminal and illegal activities.

Poverty Concern: About 645 million people or 55% of our country's population is poor as measured by composite indicator made up of education, health and standard living achievement levels.

It is comprised of ten indicators. Year of schooling and child education; child mortality and nutrition (health) and electricity, drinking water, sanitation and other assets. India needs faster pace of growth to achieve these standards for its teaming millions who are yet untouched by the country's economic renoissance. Poverty eradication still seems far away.

Health Concern: Great improvement has taken place in public health since independence, but the general health picture remains far from satisfactory. The Govt. is paying increasing attention to integrated health, maternity and child care in rural areas, but the efforts on health front needs to be intensified with spread of health awareness through education and mass movement.

Extensive corruption: The licence raj in India from 1950s to 1980s sowed the seeds of corruption in the socio-economic structure of our country. In recent times civilisation of Indian politics has assumed alarming proportions. Some parliamentarians face criminal charges, including human trafficking, rape and even murder. Candidates with criminal records win elections on the strength of their 'Bhahuvali' status. In recent times food adulteration is in the limelight in the news channels, even fruits and vegetables are not left to grow normally. Toxic injections are administered for their quick growth. Scarcity may be the mother of corruption in general

but what do you say about politicians who have been found sleeping with notes under the matresses and those who wear currency note garlands made up of tax payer's money and those who accept bribe for raising questions in the parliament and those who openly accept bribe in the name of party fund.

Terrorism and Insurgency: India is faced with terrorism and insurgency from across the border and from within. Terrorism and insurgency has left more than 53000 people dead till july 2009.

Social Security: According to a recent survey around 400 million persons in India are in the working age group, less than 7% are in the organised sector and 93% of the workers are unorganised. As the average number of the senior citizens increases, the concerns about social security will become more pronounced.

Monsoon and Agriculture: Slow agriculture growth is a major area of concern as two-third of country's population depends on rural employment for living. Monsoon plays a crucial roll in agriculture production. Due to lack of adequate irrigation system, increased dependence on monsoon has tremendous impact on Indian agriculture, failure of monsoon, as we have seen in the past, has the capacity to destabilise the economy of the country. ✿